UPSSSC PET 2024 परीक्षा
में निश्चित सफलता कैसे हासिल करें ?

आइये जानते हैं ऐसी 3 पुस्तकों के बारे में जिन्हें पढ़ने से आप UPSSSC PET 2024 परीक्षा में निश्चित सफलता प्राप्त कर लेंगे।

1 UPSSSC PET 2024 Guidebook

हर छात्र यही चाहता है कि एक गाइडबुक को पढ़ने से वह परीक्षा के सभी प्रश्नों को आसानी से हल कर सके। Agrawal Examcart की गाइड बुक में उसकी theory उसका best part है, क्योंकि इसमें वही थ्योरी दी है जो पाठ्यक्रम एवं पूर्व परीक्षा में आये हुए प्रश्नों पर ही आधारित है। इसलिए हमारा मानना है कि PET 2024 परीक्षा में छात्र आसानी से काफी प्रश्न इस गाइड बुक का गहन अध्ययन करने के बाद हल कर पाएंगे।

2 UPSSSC Chapterwise Solved Papers

UPSSSC द्वारा आयोजित परीक्षाओं के विगत वर्षों के प्रश्न किसी-न-किसी रूप में PET 2022 व 2021 परीक्षा में पूछे गए थे। UPSSSC की अध्यायवार solved papers की पुस्तक आपको अपने weak topics को revise करने में मदद करेगी और साथ ही इन प्रश्नों को हल करने पर आप PET 2024 परीक्षा के काफी प्रश्न आसानी से हल कर पाएंगे।

3 UPSSSC PET Practice Book

अच्छे प्रैक्टिस सेट्स आपकी परीक्षा की तैयारी का सटीक मूल्यांकन करने में मदद करते हैं । हमारी बुक के प्रैक्टिस सेट्स UPSSSC PET के पाठ्यक्रम एवं वर्ष 2021 परीक्षा के प्रश्नों के pattern अनुसार तैयार किये गए हैं जिससे आपको प्रैक्टिस सेट्स को हल करते समय वास्तविक पेपर को solve करने का अनुभव प्राप्त हो।

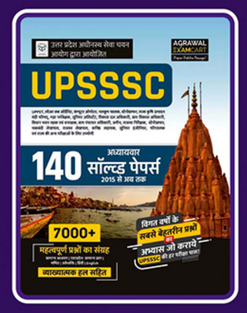

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB1905

UPSSSC PET
प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा समूह 'ग'
स्टडी गाइड बुक
ISBN - 978-93-6054-692-2
9 789360 546922
₹ 459

UPSSSC PET प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा समूह 'ग' स्टडी गाइड बुक

CB1905

AGRAWAL EXAMCART

UPSSSC
उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

PET
Preliminary Eligibility Test

प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा
समूह 'ग'

विगत वर्षों के पेपर्स के विश्लेषण चार्ट का समावेश

100% पाठ्यक्रमानुसार

स्टडी गाइड बुक

सम्पूर्ण विषयों का समावेश

इस गाइड बुक की सटीक थ्योरी से करो परीक्षा के प्रश्नों को आसानी से हल!

परीक्षा की सम्पूर्ण तैयारी अब एक ही पुस्तक से संभव !

1 **थ्योरी**
UPSSSC PET के पाठ्यक्रम तथा NCERT कक्षा 6 से 12 तक की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित थ्योरी

2 **प्रश्न**
1300+ महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्यायवार संग्रह

3 **परीक्षा पेपर**
1 प्रैक्टिस सेट का समावेश

Code	Price	Pages	ISBN
CB1905	₹459	454	978-93-6054-692-2

विषय सूची

➔ परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना viii

➔ UPSSSC PET प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा समूह 'ग' के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट ix

➔ UPSSSC PET प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा समूह 'ग' का पाठ्यक्रम xiii

सामान्य अध्ययन 1-287

1. प्राचीन भारत का इतिहास 1–15

- विश्व सभ्यताएँ और सिंधु घाटी सभ्यता
- वैदिक युग (1500-600 ईसा पूर्व)
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म
- मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)
- गुप्त वंश
- गुप्तोत्तर काल

2. मध्यकालीन भारत का इतिहास 16–29

- संघर्ष का युग
- दिल्ली सल्तनत
- मुगल काल (1526–40 और 1555–1857)
- उत्तर भारत के प्रांतीय राजवंश
- मराठा राज्य (1674–1720) और मराठा संघ (1720–1818)
- यूरोपीय लोगों का आगमन

3. आधुनिक भारत का इतिहास 30-48

- बंगाल में ब्रिटिश सत्ता का विस्तार
- ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव
- भारत में किसान आंदोलन
- भारत में जनजातीय विद्रोह
- भारत में नागरिक विद्रोह
- भारत में सामाजिक–धार्मिक आंदोलन
- महत्वपूर्ण सामाजिक–धार्मिक सुधारक
- 1857 का विद्रोह
- कांग्रेस से पहले के महत्वपूर्ण संगठन
- (1905-17) में चरमपंथी दौर
- बंगाल का विभाजन (1905) और बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन (1905–08)
- मुस्लिम लीग (1906)
- कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1906) – स्वराज
- सूरत का विभाजन (1907)
- मार्ले–मिंटो सुधार (1909)
- होम रूल आंदोलन (1915–16)
- लखनऊ पैक्ट–कांग्रेस–लीग पैक्ट (1916)
- मोंटेग्यू घोषणा/1917 की अगस्त घोषणा
- रोलेट एक्ट (1919)
- जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919)
- खिलाफत आंदोलन (1920–22)
- असहयोग आंदोलन (1920-22)
- स्वराज पार्टी (1923)
- साइमन कमीशन (1927)
- नेहरू समिति की रिपोर्ट (1928)
- लाहौर अधिवेशन (दिसंबर, 1929)
- दांडी मार्च/नमक सत्याग्रह (1930)
- पहला गोलमेज सम्मेलन (1930)
- गांधी–इरविन समझौता/दिल्ली समझौता (5 मार्च, 1931)
- दूसरा गोलमेज सम्मेलन (1931)
- सांप्रदायिक पुरस्कार/मैकडॉनल्ड पुरस्कार (16 अगस्त, 1932)
- पूना पैक्ट/गांधी–अंबेडकर पैक्ट (25 सितंबर, 1932)
- तीसरा गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर – 24 दिसंबर, 1932)
- भारत सरकार अधिनियम, 1935
- कांग्रेस मंत्रालयों का इस्तीफा (22 दिसंबर, 1939)
- पाकिस्तान संकल्प/लाहौर संकल्प (24 मार्च, 1940)

- अगस्त प्रस्ताव/लिनलिथगो प्रस्ताव (8 अगस्त, 1940)
- व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा/व्यक्तिगत सत्याग्रह (अक्टूबर, 1940 – दिसम्बर, 1941)
- क्रिप्स मिशन (मार्च–अप्रैल 1942)
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942)
- गांधी का उपवास (10 फरवरी – 7 मार्च, 1943)
- सीआर फॉर्मूला (1944)
- वेवेल योजना और शिमला सम्मेलन
- (14 जून –14 जुलाई, 1945)
- आईएनए परीक्षण/लाल किला परीक्षण (नवंबर, 1945)
- आजाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी–आईएनए) और सुभाष चंद्र बोस
- रॉयल इंडियन नेवी (आरआईएन)/रेटिंग विद्रोह (फरवरी 18, 1946)
- कैबिनेट मिशन (मार्च–जून, 1946)
- प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस/ग्रेट कलकत्ता नरसंहार (16 अगस्त, 1946)
- अंतरिम सरकार (2 सितंबर, 1946)
- संविधान सभा का गठन (9 दिसम्बर, 1946)
- एटली की घोषणा (फरवरी 20, 1947)
- माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947)
- भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947
- राज्यों का एकीकरण

4. कला एवं संस्कृति **49–60**

- भारतीय वास्तुकला
- भारत में मूर्तिकला का विकास
- भारत में चित्रकला का विकास
- भारत में भाषाएँ
- भारत में साहित्य
- भारतीय दर्शन

5. भारत का भूगोल **61–84**

- भारत : स्थान और विस्तार
- भारत की भौतिक विशेषताएँ
- भारत का नदी तंत्र
- भारत की जलवायु
- भारत में प्राकृतिक वनस्पति
- भारत में मृदा, कृषि एवं पशुपालन
- भारत में खनिज संसाधन
- भारत में ऊर्जा संसाधन
- भारत में जनसंख्या

6. विश्व का भूगोल **85–110**

- ब्रह्मांड और सौर मंडल
- पृथ्वी की उत्पत्ति और भू–गर्भीय काल
- पृथ्वी का आंतरिक भाग
- पृथ्वी की गति
- अक्षांश और देशांतर
- महाद्वीपों और महासागरों का वितरण
- चट्टानें और मृदा
- पृथ्वी की गति
- भूकंप और ज्वालामुखी
- पृथ्वी के प्रमुख डोमेन
- पृथ्वी की प्रमुख स्थलाकृति
- वातावरण
- जलमंडल

7. पर्यावरण **111–123**

- पर्यावरण
- प्राकृतिक पर्यावरण के मंडल
- पर्यावरणीय अवकरण
- जैवमंडल
- पारिस्थितिकी
- पारिस्थितिकी तंत्र
- जैव विविधता
- पर्यावरण प्रदूषण
- प्राकृतिक आपदाएँ और विपत्तियाँ
- वैश्विक जलवायु परिवर्तन
- सतत् विकास

8. भारतीय संविधान **124–149**

- संविधान
- भारतीय संविधान के स्रोत
- भारतीय संविधान के भाग, अनुच्छेद और अनुसूचियाँ
- संघ और उसका राज्य क्षेत्र
- मौलिक अधिकार
- मौलिक कर्तव्य
- राज्य के नीति निदेशक तत्व
- संघीय और राज्य की कार्यपालिका
- संघ और राज्य विधानमंडल
- भारतीय न्यायपालिका
- स्थानीय स्वशासन
- केंद्र और राज्य संबंध

9. भारतीय अर्थव्यवस्था **150–169**

- अर्थशास्त्र
- भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ
- आर्थिक वृद्धि एवं आर्थिक विकास
- आर्थिक नियोजन
- कृषि
- उद्योग तथा व्यापारिक संगठन
- बैंकिंग
- बजट
- कर और उनका महत्व
- मुद्रा
- बेरोजगारी
- खाद्य सुरक्षा
- व्यापार और वाणिज्य

10. भौतिक विज्ञान **170–202**

- भौतिक विज्ञान क्या है?
- मापन, राशियाँ तथा मात्रक
- गति
- बल
- घर्षण
- कार्य, ऊर्जा तथा शक्ति
- पदार्थ के यांत्रिक गुण
- ऊष्मा तथा ताप
- कंपन तथा तरंग
- प्रकाश
- ध्वनि
- विद्युत एवं चुम्बकत्व

11. रसायन विज्ञान **203–229**

- पदार्थ
- अणु तथा परमाणु
- रासायनिक परिवर्तन
- रासायनिक समीकरण
- आवर्त सारणी
- रेडियोधर्मिता
- अम्ल, क्षार तथा लवण
- ईंधन तथा ऊर्जा के स्रोत
- कार्बन तथा उसके यौगिक
- दहन तथा ज्योति
- तंतु तथा मानव–निर्मित वस्तुएँ

12. जीव विज्ञान **230–258**

- जीव विज्ञान क्या है?
- सजीव तथा निर्जीव
- पादप तथा जंतुओं का जैव वर्गीकरण
- कोशिका तथा ऊतक
- पोषण
- मानव अंग तंत्र
- आनुवंशिकी
- पादप कार्यिकी
- सूक्ष्मजीव

13. विविध **259–287**

- खेलकूद
- प्रमुख खेल पुरस्कार
- भारत के प्रमुख स्टेडियम
- खेल एवं उनसे सम्बन्धित कप/ट्रॉफी

- प्रमुख खिलाड़ी तथा उनके प्रचलित नाम
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
- प्रमुख स्थान एवं उसके वास्तुकार
- विश्व की प्रमुख गुप्तचर संस्थाएँ
- प्रमुख आयोग
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएँ
- भारत के प्रमुख शोध संस्थान
- प्रसिद्ध व्यक्तियों के समाधि स्थल
- प्रमुख व्यक्तियों से सम्बन्धित स्थान
- भारत में विश्व धरोहर स्थल
- भारत के राष्ट्रीय चिह्न/प्रतीकों की सूची
- भारत एवं विश्व के प्रमुख पुरस्कार
- महत्वपूर्ण पुस्तकें और उनके लेखक
- महत्वपूर्ण तिथि, सप्ताह, वर्ष एवं दशक
- अन्तर्राष्ट्रीय दशक : संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्वीकृत
- विश्व के प्रमुख देशों की राजधानी एवं मुद्रा

प्रारम्भिक अंकगणित 1-32

1. संख्या पद्धति 1-4
2. भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ 5-9
3. वर्गमूल एवं घनमूल 10-12
4. घातांक एवं करणी 13-15
5. सरलीकरण 16-17
6. औसत 18-19
7. प्रतिशतता 20-22
8. समंकों का विश्लेषण 23-32

सामान्य हिंदी 1-40

1. अपठित गद्यांश 1-5
2. वर्तनी 6-7
3. संधि 8-11
4. व्याकरणिक कोटियाँ : लिंग, वचन, परसर्ग (कारक) एवं काल 12-16
5. पर्यायवाची शब्द 17-18
6. विलोम शब्द 19-20
7. वाक्यांशों के लिए एक शब्द 21-22
8. समश्रुत भिन्नार्थक शब्द 23-24
9. मुहावरे–लोकोक्तियाँ 25-26
10. वाक्यगत अशुद्धियाँ 27-29
11. हिंदी भाषा का उद्‌भव, विकास एवं देवनागरी लिपि 30-34
12. लेखक और रचनाएँ 35-40

General English 1-36

1. Comprehension (Unseen Passage) 1-4
2. Noun : Kinds of Nouns, Number & Gender 5-6
3. Pronoun 7-8
4. Verb and Syntax 9-14

5. Adjective 15-17
6. Adverb 18-19
7. Preposition 20-23
8. Conjunction 24-25
9. The Articles 26-28
10. Spelling 29-30
11. Synonyms 31
12. Antonyms 32
13. One Word Substitution 33-34
14. Idioms & Phrases 35-36

तर्क एवं तर्कशक्ति 1-34

1. अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण 1-5
2. कोडिंग–डिकोडिंग 6-9
3. समूह से भिन्न को अलग करना (वर्गीकरण) 10-11
4. वृहत् एवं लघु 12-13
5. क्रम एवं रैंकिंग 14-15
6. रक्त सम्बन्ध 16-18
7. शृंखला परीक्षण 19-20
8. कैलेण्डर एवं घड़ी 21-24
9. कारण और प्रभाव 25-27
10. निगमनात्मक तर्क 28-30
11. कथन विश्लेषण एवं निर्णय 31-34

प्रैक्टिस सेट 1-11

➢ प्रैक्टिस सेट 1-11

IMPORTANT INFORMATION!
(कृपया इसको पढ़ना न भूलें!)

1 UPSSSC PET परीक्षा से सम्बंधित जानकारी !

UPSSSC PET परीक्षा से सम्बंधित सम्पूर्ण up-to-date जानकारी जैसे पाठ्यक्रम, Cut-off, Eligibility Criteria, विगत पेपर्स और आदि को सरल भाषा में पाएं।

UPSSSC PET परीक्षा की जानकारी के लिए **QR Code** को **Scan** करें

2 Download Free Current Affairs e-book

1 वर्ष की **Current Affairs** पढने के लिए हमारी Website '**www.examcart.in**' पर सामने दिए गये **Download PDF** बटन पर क्लिक करके Current Affairs की **PDF download** कर सकते हैं। इसमें प्रत्येक माह की Current Affairs Update की जाती है |

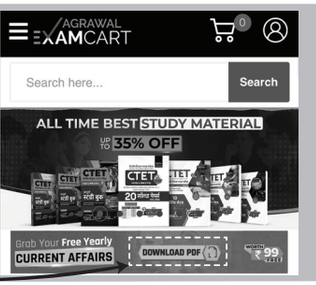

3 ⚠ Outdated पुस्तकों को खरीदने से सावधान !

कई छात्र पुस्तकों की सही जानकारी नहीं होने के कारण outdated पुस्तकों को खरीद लेते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए हमने www.examcart.in वेबसाइट शुरू की है जिस पर सिर्फ latest और updated पुस्तकें ही मिलती हैं। इसलिए किसी भी परीक्षा की पुस्तक को खरीदने से पहले उसको हमारी website पर दी गयी उस परीक्षा की पुस्तक से तुलना करें। वेबसाइट की अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं -

- वेबसाइट पर हर पुस्तक की Sample PDF दी गयी है जिसे पढ़कर आप पुस्तक को खरीदने से पहले उसकी गुणवत्ता को जानें।
- हर पुस्तक के साथ में उस परीक्षा से सम्बंधित सभी जानकारी का blog भी दिया गया है।
- Agrawal Examcart की पुस्तकों पर सभी E-commerce वेबसाइट्स की तुलना में सबसे ज़्यादा discount हमारी वेबसाइट पर मिलेगा।
- Agrawal Examcart की पुस्तकें सुनिश्चित करती हैं कि आपका Exam पहली बार में ही Crack हो जाये।
- वेबसाइट पर पुस्तकों को order एवं track करना काफी आसान है।

www.examcart.in

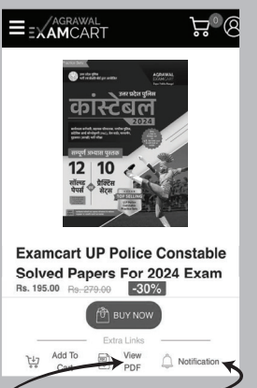

Exams की पूरी जानकारी के लिए Sample PDF देखने के लिए

4 Whatsapp Helpline: आपकी हर समस्या का समाधान!

आपके पुस्तक खरीदने से लेकर परीक्षा होने तक के सफर में हम आपके सारथी होंगे। इसीलिए Agrawal Examcart Experts ने Whatsapp Helpline सर्विस शुरू की है जिस पर मैसेज करके हमारे experts आपको 24 Working Hours के अंदर जवाब देंगे। इस सर्विस में निम्न सेवाएं उपलब्ध हैं -

- **Error & Doubts:** हमारी किसी भी पुस्तक में यदि आपको कुछ गलत लगे या किसी भी प्रश्न में कोई doubt हो तो आप उसका screenshot पुस्तक के नाम एवं पेज न. के साथ हमें मैसेज करें।
- **Exam info:** परीक्षा से सम्बंधित किसी भी जानकारी के लिए हमें मैसेज करें।
- **Preparation strategy:** परीक्षा को प्रथम प्रयास में पास करने की strategy को समझने के लिए हमें मैसेज करें।
- **Website order track:** हमारी वेबसाइट से अपने ऑर्डर की डिलीवरी की जानकारी या आपकी ज़रूरत के अनुसार सबसे बेहतरीन पुस्तक की जानकारी के लिए हमें मैसेज करें।

Scan QR code to Whatsapp us

Whatsapp Helpline Number
+91 8937099777

@ExamcartLive
Scan this code to **Subscribe** our**Youtube Channel**

examcart_agp
Scan this code to **follow** our **Instagram page**

अध्याय 1 प्राचीन भारत का इतिहास

1. विश्व सभ्यताएँ और सिंधु घाटी सभ्यता

- **मेसोपोटामिया (3500 से 2000 ईसा पूर्व):** मेसोपोटामिया पश्चिम एशिया में इराक और कुवैत के क्षेत्र को संदर्भित करता है। यह दो नदियों, टाइग्रिस और यूफ्रेट्स के बीच की भूमि थी, जो आधुनिक इराक में स्थित है। मेसोपोटामिया में सुमेरियन, अक्कादियन, बेबीलोनियन और असीरियन सभ्यताओं के राज्य फले–फूले।
- **सुमेरियन:** मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी सभ्यता सुमेरियों की थी। सुमेरियन सिंधु और मिस्र की सभ्यताओं के लोगों के समकालीन थे। सुमेरियन लोग 5,000 से 4,000 ई.पू. के आसपास लोअर टाइग्रिस घाटी में बस गए।
- **द अक्कादियन्स:** अक्कादियों ने सुमेरिया पर 2450 से 2250 ईसा पूर्व तक प्रभुत्व जमाया। अक्कड़ का सर्गोन एक प्रसिद्ध शासक था। सर्गोन और उनके वंशज (सीए 2334–2218 ई.पू.) ने मेसोपोटामिया पर सौ से अधिक वर्षों तक शासन किया। अक्कादियों के कीलाकार अभिलेखों में सिन्धु सभ्यता का उल्लेख मिलता है।
- **बेबीलोनियाई:** अरब के रेगिस्तान से एमोराइट्स कहे जाने वाले सेमिटिक लोग मेसोपोटामिया में चले गए। वे बेबीलोनियों के रूप में जाने जाते थे क्योंकि उन्होंने एक राज्य की स्थापना की और बेबीलोन को अपनी राजधानी बनाया। उर (2112 से 2004 ईसा पूर्व) और बेबीलोन (1792 से 1712 ईसा पूर्व) के शक्तिशाली राज्यों ने इस क्षेत्र को नियंत्रित किया। पहले एमोराइट वंश (1792–1750 ईसा पूर्व) से संबंधित बेबीलोन के छठे राजा हम्मूराबी ने एक महान कानून–निर्माता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी।
- **असीरियन:** असीरियन साम्राज्य लगभग 1000 ईसा पूर्व मेसोपोटामिया में राजनीतिक रूप से सक्रिय था। अश्शूर के राजा अश्शूर के मुख्य देवता अश्शूर के याजक थे। अशर्बनपाल उत्तरवर्ती या नव–असीरियाई साम्राज्य (सीए 668 से 627 ई.पू.) का एक लोकप्रिय शासक था। उन्होंने कीलाकार अभिलेखों की एक प्रसिद्ध शृंखला स्थापित की थी। अश्शूरी लोग सुरक्षा के लिए लामासू देवता की पूजा करते थे।
- **सिंधु सभ्यता:** सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान–ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और खोजकर्ता चार्ल्स मैसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उन्होंने उत्तर–पश्चिम सीमांत प्रांत में इस शहर की खोज की जो अब पाकिस्तान में है।
- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने–फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया ।
- हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात प्रारंभिक हड़प्पा (3000–2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600–1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900–1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
- हड़प्पा की सिंधु घाटी साइट पहली बार 1826 सीई में चार्ल्स मेसन और 1831 में अलेक्जेंडर बर्न्स द्वारा अमरी में देखी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले सर्वेक्षक अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853, 1856 और 1875 में इस साइट का दौरा किया था।
- 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक
- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। 1921 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो सिंध के** लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। 1922 में इसकी खुदाई की गई थी। यह इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
  - **अमरी** सिंधु नदी के तट पर, बलूचिस्तान में स्थित है। 1935 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात के अहमदाबाद जिले में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह अपने डॉकयार्ड के लिए जाना जाता है।
  - **धोलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। 1985 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कालीबंगन** राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। 1953 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1976–77 में इसकी खुदाई की गई थी।

- **कोटदीजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। 1955 और 1957 में इसकी खुदाई की गई थी।
- **चन्हुदड़ो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और 1931 में इसकी खुदाई की गई थी।
- शोर्तुघई और मुंडिघाक स्थल अफगानिस्तान में स्थित हैं।
- **राखीगढ़ी** यह भारत में स्थित हड़प्पा स्थल है, जिसमें हाकरा मृदभांड के भंडार शामिल हैं जो सिंधु सभ्यता के शुरुआती चरणों से पहले की बसावट की विशेषता हैं।

साइट	जाँच – परिणाम
हड़प्पा	**उत्खनन:** दयाराम साहनी (1921), माधो स्वरूप वत्स (1926) और सर मोर्टिमर व्हीलर (1946)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: पंक्ति में छह अन्न भंडार, श्रमिकों के आवास, उर्वरा देवी की मुहर, कब्रिस्तान (आर – 37, एच), चित्रित मिट्टी के बर्तन, देवी माँ की मूर्ति, लिंगम (पुरुष यौन अंग) और योनी (महिला यौन अंग) के पत्थर के प्रतीक, लकड़ी के बक्से में जौ और गेहूँ, तांबे का पैमाना, कांस्य के लिए एक क्रूसिबल और तांबे से बना दर्पण, वैनिटी बॉक्स, पासा प्राप्त हुए हैं।
मोहनजोदड़ो/मृतकों का टीला/नखलिस्तान/सिंध का मरूद्यान	**उत्खनन:** राखल दास बनर्जी (1922), मैके (1927) और मोर्टिमर व्हीलर (1930) **पुरातात्विक निष्कर्ष:** विशाल अन्न भंडार, विशाल स्नानागार (यह सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है), सभा भवन (असेंबली हॉल), पशुपति महादेव/प्रोटो शिव की मुहर, एक नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य प्रतिमा, दाढ़ी वाले व्यक्ति की सेलखड़ी की मूर्ति, देवी माँ की मिट्टी की मूर्तियां, सूती वस्त्र के टुकड़े, ईंट के भट्टे, दो मेसोपोटामिया की मुहरें, 1398 मुहरें (सभ्यता की कुल मुहरों का 56%)।
लोथल	**उत्खनन:** एस.आर. राव (1957)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: गोदीवाडा (डॉकयार्ड), चावल की भूसी, आग की वेदी, एक घोड़े की टेराकोटा मूर्ति, डबल दफन (एक ही कब्र में दफन एक नर और एक मादा), फारसी / ईरानी और बहरीनियन मुहर, पक्षी और लोमड़ी के साथ चित्रित एक जार।
कालीबंगन/काले रंग की चूड़ियाँ	**उत्खनन:** अमला नंद घोष (1953), डॉ. बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक पूर्व–हड़प्पा क्षेत्र, सात अग्नि वेदी, सजी हुई ईंटें, एक खिलौना गाड़ी के पहिये, मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर।
चन्हूदडो	**उत्खनन:** एनजी मजूमदार (1931), ईजेएच मैके (1935)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: बिना गढ़ वाला शहर, दवात, लिपिस्टिक, मोतियों की दुकान, ईंट पर बिल्ली का पीछा करते आदि कुत्ते के पंजे की आकृति, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल, कांस्य खिलौना गाड़ी।
रंगपुर (गुजरात)	**उत्खनन:** एम. एस. वत्स (1931), एस. आर. राव (1953–54) **पुरातात्विक निष्कर्ष:** चावल की भूसी
बनावली (हिसार, हरियाणा)	**उत्खनन:** आरएस बिष्ट (1973–74)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: ग्रिड पैटर्न टाउन प्लानिंग का अभाव, व्यवस्थित जल निकासी व्यवस्था का अभाव, मिट्टी का बना हल, खिलौना हल।
आलमगीरपुर (मेरठ, यूपी)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1958)
कोट दीजी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन:** घुर्रे (1935), फजल अहमद (1955)
अमरी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन द्वारा:** एनजी मजूमदार (1929)
रोपड़ (पंजाब)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1955–56)
सुरकोटड़ा (कच्छ, गुजरात)	**उत्खनन:** जेपी जोशी (1964)
	पुरातात्विक खोज: घोड़े की हड्डियाँ (केवल वह स्थान जहाँ घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं), ओवल कब्र, पॉट दफन।
सुतकनाडोर (सिंध, पाकिस्तान)	**द्वारा उत्खनन:** ए स्टीन (1927)
धौलावीरा, गुजरात	**उत्खनन:** जेपी जोशी, आरएस बिष्ट (1990–91)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक अद्वितीय जल संचयन प्रणाली और इसकी विशेष जल निकासी प्रणाली, एक विशाल जल जलाशय, यहाँ साइट को 3 भागों में विभाजित किया गया है।
राखीगढ़ी (हरियाणा)	**उत्खनन द्वारा:** अमरेंद्र नाथ (2014)
दैमाबाद	**पुरातात्विक खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी)

- **हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएं:**
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हुदड़ो)
- **शासक** वे लोग थे जो शहर में विशेष भवनों में रहते थे। शासकों ने लोगों को दूर देशों में धातु, कीमती पत्थर, और अन्य चीजें जो वे चाहते थे, प्राप्त करने के लिए भेजा।
- मुहरों के निर्माण में सेलखड़ी का प्रयोग किया जाता था। मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की छवि थी। **शास्त्री** वे लोग थे जो लिखना जानते थे और मुहरों को तैयार करने में मदद करते थे और शायद अन्य सामग्रियों पर लिखते थे परन्तु अब वे शेष नहीं बची हैं।
- गेहूँ और जौ मुख्य फसलें थीं और खजूर, सरसों, तिल, कपास आदि अन्य फसलें थीं।
- चावल की खेती के प्रमाण लोथल और रंगपुर (गुजरात) से मिले हैं। कृपया ध्यान दें कि सिंधु लोग दुनिया में सबसे पहले कपास (ग्रीक में सिंडन) का उत्पादन करने वाले लोग थे।

क्या आप जानते हैं?

★ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कपास उगाने में सर्वप्रथम थे। इसीलिए यूनानी लोग इसे सिन्डोन कहते थे।

- यद्यपि भेड़, बकरी, कूबड़ रहित बैल, भैंस, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मुर्गी, हिरण, कछुआ, हाथी, ऊँट, गैंडा, बाघ आदि इस सभ्यता के महत्वपूर्ण प्राणी थे, फिर भी शेर उन्हें ज्ञात नहीं था। अमरी (सिंध, पाकिस्तान) से गैंडे के अवशेष मिले हैं।
- **विदेश व्यापार** सिन्धु लोगों के मेसोपोटामिया या सुमेरिया और बहरीन आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। वे कृषि उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, सूती सामान, कुछ मनके, टेराकोटा की मूर्तियाँ, शंख, हाथी दाँत के उत्पाद और तांबे आदि का निर्यात करते थे।
- चन्हुदड़ो से मोतियों का निर्यात किया जाता था और लोथल से शंख का निर्यात किया जाता था।
- उनके आयात इस प्रकार थे
  - कोलार (कर्नाटक), अफगानिस्तान, फारस (ईरान) से सोना
  - अफगानिस्तान, फारस (ईरान), दक्षिण भारत से चांदी
  - खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान, अरब से ताँबा
  - महाराष्ट्र से नीलम
  - शहर–ए–सोख्ता (ईरान), किरथर हिल्स (पाकिस्तान) से सेलखड़ी
  - मध्य एशिया से जस्ता
  - बदख्शां (अफगानिस्तान) से लापीस लाजुली
  - बदख्शां से नीलम (अफगानिस्तान)
  - अफगानिस्तान और बिहार से टिन

क्या आप जानते हैं?

★ प्राचीन काल में सिन्धु सभ्यता क्षेत्र को सुमेरियन लोग मेलुहा कहते थे । सुमेरियन अभिलेख बहरीन को दिलमुन और मकरान तट को माकन के रूप में संदर्भित करते है ।

- ऐसा माना जाता है कि सिंधु सभ्यता में शासन व्यापारी वर्ग के हाथों में था।
- जहां तक धर्म का संबंध है, कोई मंदिर नहीं मिला है। माँ देवी (मातृदेवी या शक्ति) की मूर्ति योनि (महिला यौन अंग) की पूजा को संदर्भित करती है। लिंगम (लिंगम) पूजा भी प्रचलित थी।
- पशुपति शिव या जानवरों के देवता या रूद्र शिव प्रमुख पुरुष देवता थे। एक मुहर मिली है जो चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडे और भैंस) से घिरे एक योगी को दर्शाती है और उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं।
- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएं से बाएं और बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

2. वैदिक युग (1500–600 ईसा पूर्व)

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, 1500 ईसा पूर्व के आसपास आर्यों द्वारा भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। आर्यन शब्द का अर्थ है 'कुलीन' होता है।
- उनके कब्जे वाली भूमि को 'सप्त सिंधु' कहा जाता था जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। सात नदियों में सिंधु (सिंधु), वितस्ता (झेलम), आक्सिनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास), शुतुद्री (सतलज) [सभी पंजाब में], और राजस्थान में सरस्वती (सरसुती) शामिल हैं। अन्य नदियाँ राजस्थान में दृषद्वती (घग्गर), गोमती (गोमल) उत्तर प्रदेश कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वाति), क्रुमु (कुर्रम) [सभी अफगानिस्तान में] थीं।
- ऋषि मनु के अनुसार पुरानी पवित्र नदी सरस्वती और दृषद्वती के बीच का भू–भाग 'ब्रह्मवर्त' था।
- इन्होंने अपने मनुस्मृति ग्रंथ में ब्रह्मवर्त के बारे में लिखा है, कि यह भू–भाग पवित्र नदियों से घिरा हुआ है। सरस्वती नदी इसके पूर्व में, दृषद्वती नदी इसके पश्चिम में, हिमालय पर्वत इसके उत्तर में और विंध्य पर्वत इसके दक्षिण में स्थित हैं।
- ऋषि मनु ने ब्रह्मवर्त और आर्यावर्त को एक ही भू–भाग के दो अलग–अलग नामों के रूप में वर्णित किया है। उनके अनुसार ब्रह्मवर्त सरस्वती नदी के किनारे का भू–भाग था, जो आर्यावर्त का भी एक हिस्सा था।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों की मूल मातृभूमि

मातृभूमि	पंडित
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स मुलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्ड्ट
बैक्ट्रिया	जेसी रॉड
सप्त सिंधु	डॉ. अविनाश चंद्र दास और डॉ. संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एलडी कल्ला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग

समय, प्रसार और स्रोत	
समय	1500 ईसा पूर्व (बीसीई) – 600 ईसा पूर्व (बीसीई)
सूत्रों का कहना है	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

- ऐसा माना जाता है कि आर्यों ने 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व के दौरान कई लहरों के रूप में मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवास किया था। यह एशिया माइनर, तुर्की में पाए जाने वाले बोगाजकोई शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख में चार वैदिक देवताओं अर्थात इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- वैदिक युग को दो अवधियों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व) और बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)।
- **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व):** इस काल के ज्ञान का एकमात्र साहित्यिक स्रोत "ऋग्वेद" है।
- **दस राजाओं की लड़ाई (दशराज्ञ युद्ध):** इस युद्ध का नाम उन दस राजाओं के नाम पर दशराज रखा गया है, जिन्होंने सुदास (तृत्सु वंश के भरत राजा) के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। अन्य दस राजा पुरु, यदु, तुर्वस, अनु और द्रुह्यु, अलीना, पख्त, भलानस, सिबिस और विशनिन राज्यों से थे। यह युद्ध परुष्णी (रावी) के तट पर लड़ा गया था और इस युद्ध में भरत जन के राजा सुदास की विजय हुई थी।
- **ऋग्वैदिक काल में राजव्यवस्था:** सामाजिक और राजनीतिक दोनों संरचनाओं का आधार कुल (परिवार) था। कुल के ऊपर ग्राम, विस, जन और राष्ट्र थे। कुछ कुल (परिवार) मिलकर एक ग्राम (गाँव) बनाते थे, इत्यादि।

इकाई	सिर
कुल (परिवार)	कुलप
ग्राम (गाँव)	ग्रामणी
विस (कबीले)	विसपति
जन (लोग)	गोप/गोपति
राष्ट्र (देश)	राजन

- इस समय शासन की संरचना प्रकृति में पितृसत्तात्मक थी। हालाँकि राजतंत्र का शासन था, फिर भी कुछ गैर–राजशाही राजनीतिक प्रणालियाँ थीं।
- राष्ट्र पर एक राजा या राजन का शासन था, और ज्येष्ठाधिकार कानून के आधार पर, शाही वंश वंशानुगत था। सबसे अधिक संभावना है, एक वैकल्पिक राजशाही को भी मान्यता दी गई थी।
- राजा के मंत्रियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। पुरोहित, शीर्ष पर प्राधिकारी थे। उन्होंने राजा के संरक्षक, विश्वासपात्र, साथी और दार्शनिक के रूप में कार्य किया। सेना के सेनापति सेनानी और गाँव के नेता ग्रामानी अन्य महत्वपूर्ण शाही अधिकारी थे।
- सेना में पैदल सैनिक और सारथी होते थे। हथियार धातु, लकड़ी, पत्थर और हड्डी के बने होते थे। धातु या जहरीले सींग को तीर की नोक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। किलौ (पुरो) पर हमला करने के लिए एक उपकरण पुरचरिश्नु का उल्लेख किया गया है।
- राजा के भी धार्मिक दायित्व होते थे। उन्होंने स्थापित आदेश और नैतिक सिद्धांतों की रक्षा की।
- ऋग्वेद में सभा, समिति, विदथ और गण जैसी सभाओं का उल्लेख है। सभा वरिष्ठ लोगों द्वारा बनाई गई थी। विशेषाधिकार प्राप्त और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की एक संस्था थी। सभा और समिति, दो लोकतान्त्रिक सभाएँ, राजाओं के मनमाने शासन पर रोक लगाने का काम करती थीं। बाद के वेदों ने कानून की संस्था के रूप में सभा की भूमिका का उल्लेख किया है।
- चोरी, सेंधमारी, मवेशियों की चोरी और धोखाधड़ी कुछ तत्कालीन अपराधों में शामिल थे।
- **ऋग्वैदिक काल में समाज:** अपने आंरम्भिक समय में ऋग्वैदिक सभ्यता में जाति का स्पष्ट विभाजन नहीं मिलता है। व्यक्तियों के व्यवसायों या नौकरियों के आधार पर, समाज को वर्गीकृत किया गया था।
- एक सामान्य विभाजन के क्र में शिक्षकों और पुजारियों को ब्राह्मणों के रूप में जाना जाता था, जबकि प्रशासकों और राजाओं को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और बैंकरों को वैश्य, और श्रमिकों और कारीगरों को शूद्र के रूप में जाना जाता था।
- लोगों ने अपनी योग्यता और पसंद के आधार पर इन व्यवसायों को चुना था व्यवसाय वंशानुगत नहीं थे हालांकि वे बाद में वे आनुवंशिक बन गए।
- ऋग्वेद का एक भजन बताता है कि कैसे एक ही परिवार के सदस्यों ने अलग–अलग व्यवसायों को चुना जो कई वर्णों से संबंधित थे। ऋग्वेद के एक श्लोक में एक व्यक्ति कहता है–'मैं एक गायक हूँ! मेरे पिता एक चिकित्सक हैं, मेरी माँ मकई की चक्की है।'
- परिवारों ने इस पितृसत्तात्मक, एक पत्नीक सभ्यता में बुनियादी सामाजिक ऋवेद के एक श्लोक इकाई का निर्माण किया। बाल विवाह का कोई क्रेज नहीं था।
- एक विधवा अपने दिवंगत पति के छोटे भाई (नियोग) से शादी कर सकती थी।
- इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को पिता की संपत्ति विरासत में मिलती थी।
- संपत्ति के अधिकार दोनों प्रकार की सम्पत्तियाँ जैसे घरों और भूमि के साथ–साथ घोड़ों, जानवरों, सोने और आभूषणों जैसी अचल वस्तुओं के लिए मौजूद थे। शिक्षक का घर वह विद्यालय होता था जहाँ वे विशेष पवित्र ग्रंथों की शिक्षा देते थे।
- ऋग्वैदिक काल के आहार में महत्वपूर्ण मात्रा में दही, मक्खन और घी जैसे अन्य डेयरी उत्पाद शामिल थे। ''दूध में पका हुआ चावल" (क्षीर–पकामोदनम) को देवताओं के प्रिय भोज्य के रूप में उल्लेख किया गया है। वे मछली, पक्षी और जानवरों का मांस खाया करते थे।
- गाय को पहले से ही अघन्य अर्थात न मारने योग्य माना जाता था।
- ऋग्वेद के अनुसार, गायों को नुकसान पहुँचाने या मारने वालों को मौत की सजा दी जाती है या राज्य से निर्वासित कर दिया जाता है।
- सुरा, सोम और मादक पेय का भी सेवन किया जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में अधिकांश आर्य किसान और चरवाहे थे जिनकी सम्पत्ति का मूल्य आय में मापा जाता था।
- मनोरंजन में संगीत, नृत्य, रथ–दौड़ और नृत्य शामिल थे। ऋग्वेद का एक श्लोक जुआरी के विलाप करने का उल्लेख हुआ है 'मेरी पत्नी मुझे अस्वीकार करती है और उसकी माँ मुझसे नफरत करती है'।

- ऋग्वैदिक काल में जिन देवताओं की पूजा की जाती थी, वे आमतौर पर प्रकृति की शक्तियाँ थीं। यह माना जाता था कि दैवीय शक्तियाँ मनुष्य को वरदान और दंड दोनों प्रदान करने में सक्षम हैं।
- इस काल में अग्नि पवित्र देवता था, क्योंकि इसे मनुष्य और ईश्वर के बीच मध्यस्थ माना जाता था। लगभग 33 देवता थे। बाद के दिनों की परंपरा ने उन्हें स्थलीय (पृथ्वी स्थान), हवाई या मध्यवर्ती (अंतरिक्ष स्थान) और आकाशीय (दुष्टाना) भगवान की 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
  - **स्थलीय (पृथ्वी अंतरिक्ष के देवता):** पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति और नदियाँ।
  - **आकाशीय/मध्यवर्ती (अंतरिक्ष के देवता):** इंद्र, रुद्र, वायु–वात, पर्जन्य।
  - **आकाशीय (आकाश के देवता):** धोस, सूर्य (5 रूपों में: सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा, विष्णु), वरुण, अदिति, उषा और अश्विन।
- इंद्र, अग्नि और वरुण ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे लोकप्रिय देवता थे।
  - **इंद्र या पुरंदर (किले को नष्ट करने वाला):** सबसे महत्वपूर्ण देवता (250 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); जिन्होंने योद्धा की भूमिका निभाई और उन्हें वर्षा देवता माना जाता था।
  - **अग्नि:** दूसरा सबसे महत्वपूर्ण देवता (200 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); अग्नि देवता को देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ माना जाता था।
  - **वरुण:** व्यक्तिकृत जल; रीता' या प्राकृतिक व्यवस्था (ऋतस्यगोप) ऋत को बनाए रखने वाला था।
- सूर्य (सूर्य) की पूजा 5 रूपों में की जाती थी: सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा और विष्णु।
  - **सूर्य:** सूर्य भगवान जो सात घोड़ों द्वारा संचालित अपने रथ में प्रतिदिन आकाश में घूमते थे।
  - **सावितृ (प्रकाश की देवता):** प्रसिद्ध गायत्री मंत्र उन्हें संबोधित है।
  - **मित्र:** एक आकाश देवता।
  - **पूषन:** विवाह के देवताय मुख्य कार्य–सड़कों, चरवाहों और आवारा पशुओं की रखवाली करना था।
  - **विष्णु:** एक देवता जिसने पृथ्वी को तीन चरणों (उपक्रम) में ढक लिया।
- **सोम:** मूल रूप से अग्निस्टोमा यज्ञ के दौरान एक मजबूत पेय देने वाला पौधा, शायद भांग / भांग, जिसे पौधों के राजा के रूप में जाना जाता है; या अंततः चंद्रमा के रूप में पहचाना गया। सोम को ऋग्वेद के नौवें मंडल को बनाने का श्रेय दिया जाता है, जिसमें 114 गीत शामिल हैं। इस कारण इसे ''सोम मंडल" के नाम से जाना जाता है।
- **अन्य देवी–देवता:** रुद्र (जानवरों के देवता), द्यौस (सबसे पुराने देवता और दुनिया के पिता), यम (मृत्यु के देवता)। अश्विन नास्त्य (स्वास्थ्य, युवा और अमरता के देवता); अदिति (देवताओं की माता), सिंधु (नदियों की देवी)।
- कभी–कभी देवताओं को जानवरों के रूप में देखा जाता था लेकिन जानवरों की पूजा नहीं होती थी।
- ऋग्वैदिक धर्म वहुदेववादी था, या कई देवताओं में विश्वास रखता था, जिनमें से प्रत्येक को अलग–अलग समय में सर्वोच्च माना जाता था।
- देवताओं की पूजा यज्ञ के रूप में जाने जाने वाले अनुष्ठान के माध्यम से की जाती थी। आहुति के रूप में दूध, घी, अनाज, मांस और सोम आदि की आहुति दी जाती थी।
- **ऋग्वैदिक काल में अर्थव्यवस्था:** आर्य खानाबदोश चरण से आगे बढ़ गए। फिर भी गाय के झुंड उनके लिए बहुपयोगी थे कई पालतू जानवर थे।
- बिल्लियाँ और ऊँट जैसे जानवर संभवतः वैदिक लोगों के लिए अपरिचित थे। बाघ अज्ञात था, लेकिन वे अन्य जंगली जानवरों जैसे शेर, हाथी और सूअर से परिचित थे। व्यवहार में ज्यादा लेन–देन नहीं होता था।
- हालांकि बाजार मौजूद था परन्तु मुद्रा अस्तित्व में नहीं थी, लेकिन उनका व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता था। गायों और निश्चित मूल्य के सोने के आभूषणों विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करते थे। कोई ज्ञात सिक्के नहीं थे। उत्पाद उत्पादन में जटिलता स्पष्ट हो गई।
- अन्य व्यवसायों में बढ़ई, लोहार, चर्मकार, बुनकर, कुम्हार और चक्की पीसने का काम करने वाले पुरुष शामिल थे। बीमारियों और घावों के इलाज के लिए एक चिकित्सा विज्ञान मौजूद था। और विशेषज्ञ थे। शल्य चिकित्सा भी।
- जड़ी–बूटियों और औषधियों के साथ–साथ ताबीज और मंत्र के द्वारा रोगों को ठीक करने में प्रयोग में लाया जाता था।
- **बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व):** उत्तर वैदिक काल के दौरान, आर्यन बस्तियां वस्तुतः पूरे उत्तरी भारत (आर्यावर्त) को कवर करती थीं। संस्कृति का केंद्र अब सरस्वती से गंगा (मध्य देश) में स्थानांतरित हो गया था।
- उत्तर वैदिक काल में नर्मदा, सदानीरा (आधुनिक गंडक), चंबल आदि नदियों का उल्लेख मिलता है।
- पूर्व की ओर लोगों के विस्तार का संकेत शतपथ ब्राह्मण की एक कथा में मिलता है– कैसे विदेह माधव सरस्वती क्षेत्र से चले गए, सदानिरा को पार कर विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर बस गए।
- दोआब क्षेत्र में जनपद–कुरु (पुरुष और भरत का संयोजन), पंचाल (तुर्वशास और कृविस का संयोजन), काशी आदि के उद्भव तथा बाद के वैदिक साहित्य में विंध्य पर्वत (दक्षिणी पर्वत) का उल्लेख है। प्रादेशिक विभाजनों के संदर्भ में बाद के वेद भारत के तीन व्यापक विभाजन देते हैं, जैसे। आर्यावर्त (उत्तरी भारत), मध्य देश (मध्य भारत) और दक्षिणापथ (दक्षिणी भारत)।
- उत्तर वैदिक काल में बड़े राज्यों और भव्य शहरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में हम राजाओं की दैवीय उत्पत्ति के सिद्धांत का उल्लेख पाते हैं।
- राजा की शक्ति के विकास की अगली कड़ी के रूप में सरकारी तंत्र पहले की तुलना में अधिक विस्तृत हो गया। ऋग्वैदिक काल के एकमात्र नागरिक अधिकारी के अलावा, नागरिक आधिकारी व पुरोहित अस्तित्व में आए।
- ये थे: भगदुधा (कर संग्रहकर्ता), सुता/सारथी, शास्त्री (चैम्बरलेन), अक्षवापा संदेश वाहक। ऋग्वैदिक काल के सैन्य अधिकारी, सेनानी (सैन्य प्रमुख) और ग्रामणी (गाँव का मुखिया) कार्यरत् थे।
- इस अवधि में प्रांतीय सरकार की एक नियमित प्रणाली की शुरुआत भी देखी गई। इस प्रकार, हम पाते हैं कि स्थपति को आदिवासियों के कब्जे

वाले बाहरी क्षेत्रों के प्रशासन का काम सौंपा गया है और सतपति सौ गाँवों के समूह का शासक होता था। अधिकारिक ग्राम अधिकारी थे। उपनिषद में वर्णित उग्रस संभवतः एक पुलिस के लिए प्रयुक्त हुआ शब्द है।

- ऋग्वैदिक युग के समान, अधिकारों का प्रयोग सभा और समिति के माध्यम से किया जाता था। इस समय तक, विदथ पूरी तरह से गायब हो गया था।
- बाद के वैदिक युग में भी राजाओं के पास स्थायी सेना नहीं थी।
- न्यायपालिका का भी विस्तार हुआ। कानून को लागू करने में राजा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। एक भ्रूण की हत्या, मानव वध, विशेष रूप से एक ब्राह्मण की हत्या, सोने की चोरी और सुरा पीने को भयानक अपराध माना जाता था। देशद्रोह एक गंभीर अपराध था।
- **उत्तर वैदिक काल में समाज:** जैसे–जैसे समय बीतता गया, यज्ञ विस्तृत और जटिल औपचारिक होते गए, जो ब्राह्मणों के रूप में ज्ञात विद्वानों के उद्भव के लिए महत्वपूर्ण थे।
- क्षत्रियों के रूप में जाने जाने वाले लोगों का एक समूह नई भूमि पर विजय प्राप्त करने और शासन करने के लिए उभरा, क्योंकि आर्य पूर्व और दक्षिण में फैले हुए थे। शेष आर्यों ने एक अलग समूह की स्थापना की जिसे विश (वैश्य) कहा जाता है।
- चौथा वर्ग, शूद्र, गैर–आर्यों का था। हालाँकि, ये सामाजिक भेद लचीले थे। बाद के वैदिक काल में, गोत्र, या कबीले की संस्था सबसे पहले विकसित हुई।
- उच्च जातियों को निम्न जातियों के साथ विवाह करने की अनुमति थी, लेकिन शूद्रों के साथ ऐसा नहीं था। प्रदूषण समाज में एक अवधारणा बन गया।
- जाब्लो उपनिषद में चार आश्रमों (जीवन के चरणों) का सबसे पहला उल्लेख हुआ है; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को प्राप्त करने के लिए आश्रम प्रणाली की स्थापना की गई थी।
- महिलाओं की स्थिति गिर गई। ऐतरेय ब्राह्मण ने दावा किया कि एक पुरुष परिवार का रक्षक होता है जबकि एक बेटी दुख का कारण होती है।
- मैत्रायणी संहिता हैं: शराब, स्त्री और पासा।
- हालाँकि बहुविवाह – एक पुरुष जिसकी एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं – सामान्य थी, यद्यपि एक विवाह – एक पुरुष जिसकी केवल एक पत्नी हो – आदर्श माना जाता था। महिलाओं को राजनीतिक सभाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।
- याज्ञवल्क्य–गार्गी संवाद (बृहदारण्यक उपनिषद) इंगित करता है कि कुछ महिलाओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

हिंदू विवाह के प्रकार (विवाह)	
ब्रह्म विवाह	लड़की को दहेज में किसी व्यक्ति को देना।
दैव विवाह	अपनी पुत्री का विवाह पुजारी के साथ कर देना।
आर्ष विवाह	वधू–मूल्य के रूप में बैल की जोड़ी दी जाती थी।
प्रजापत्य विवाह	बिना वधू–मूल्य मांगे लड़की को एक आदमी को दे देना।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह
असुर विवाह	विक्रय की गई कन्या से विवाह।
राक्षस विवाह	पराजित राजा की पुत्री से या अपहृत कन्या से विवाह।
पैशाच विवाह	बहला–फुसलाकर या बलात्कार (शरीर पर अधिकार) करके लड़की से विवाह।

- **अनुलोम विवाह:** एक उच्च जाति के पुरुष और एक निचली जाति की महिला के बीच विवाह; अनुलोम विवाह कहलाता था।
- गर्भधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णछेदन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ और अंत्येष्टि नाम से सोलह संस्कार थे।
- **बाद के वैदिक काल में धर्म:** पहले के देवता इंद्र और अग्नि पृष्ठभूमि में चले गए जबकि प्रजापति (ब्रह्मांड के निर्माता, जिसे बाद में ब्रह्मा के रूप में जाना गया है), विष्णु (आर्यों के संरक्षक देवता) और रुद्र (जानवरों के देवता, बाद में शिव के रूप में पहचाने गए) / महेश) प्रमुखता से उभरे। इस काल में प्रजापति सर्वोच्च देवता बन गए।
- प्रारंभिक वैदिक काल में मवेशियों की रक्षा करने वाले पूषण अब शूद्रों का देवता बन गये। बृहदारण्यक उपनिषद सबसे पहले स्थानान्तरण (पुनर्जन्म/संसार–चक्र) और कर्म (कर्म) का सिद्धांत स्थापित करने वाला पहला ग्रंथ था।
- ऋग्वैदिक काल के आरंभिक चरण में साधारण अनुष्ठानों में विस्तृत बलिदानों का स्थान दिया गया जिसके लिए 17 पुजारियों की सेवाओं की आवश्यकता थी। बाद के वेदों और ब्राह्मणों में बलिदान (यज्ञ) की प्रमुखता स्थापित हो गई।
- यज्ञ दो प्रकार के होते थे–
  - **लघु यज्ञ (सरल यज्ञ):** ये गृहस्थों द्वारा किए जाते थे जैसे पंच महायज्ञ, अग्निहोत्र, दर्श यज्ञ (अमावस्या पर यानी कृष्ण पखवाड़े के अंतिम दिन), पूर्णमास यज्ञ (पूर्णिमा के दिन) आदि।
  - **महायज्ञ (भव्य यज्ञ):** ये वे यज्ञ थे जो केवल एक कुलीन और धनी व्यक्ति और राजा ही कर सकते थे।
    - **राजसूय यज्ञ:** राज्याभिषेक जिसमें अपने पूर्ण रूप में एक वर्ष से अधिक समय तक चलने वाले बलिदानों की एक श्रृंखला शामिल थी। बाद के दिनों में इसका स्थान सरलीकृत राज्याभिषेक ने ले लिया।
    - **वाजपेय यज्ञ:** शक्ति का पेय, जो एक वर्ष सत्रह दिनों की अवधि तक चलता था।
    - **अश्वमेध यज्ञ:** अश्वमेध यज्ञ, यह तीन दिनों तक चलता था इस यज्ञ में जानवरों की बलि दी जाती थी।
    - **अग्निष्टोम यज्ञ:** अग्नि को समर्पित यह यज्ञ एक दिन तक चलता था, हालांकि यज्ञिका (यज्ञ के कर्ता) और उनकी पत्नी यज्ञ से पहले एक वर्ष के लिए तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे। इस यज्ञ में सोम रस का सेवन किया जाता था।
- उपनिषद उस मजबूत भावना का प्रतिबिंब हैं जो वैदिक काल के अंत में पंथों, कर्मकांडों और पुरोहितों के प्रभुत्व के विरोध में उभरी थी।
- **उत्तर वैदिक काल में अर्थव्यवस्था:** पशुपालन का स्थान कृषि ने ले लिया। एक समय 24 बैलों का प्रयोग हल चलाने के लिए किया जाता था। खाद का प्रयोग भी किया जाता था, उसके करिषु शब्द का प्रयोग हुआ है।

- इस काल में गेहूँ, जौ, फलियाँ, तिल और चावल सभी उगाए जाते थे।
- नए रोजगार जैसे मछुआरे, धोबी, रंगरेज, द्वारपाल, और मोची दर्शाते हैं कि वस्तुओं का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था।
- विशेषाता का संकेत देते हुए रथ–निर्माता, बढ़ई, चर्मकार के बीच भेद किया जाता था। धातुओं के बारे में हमारी समझ में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। ऋग्वेद में सोने और अयस (या तो तांबे या लोहे) के अलावा, टिन, चांदी और लोहे का उल्लेख किया गया था।
- कंपनियों (गणों) और एल्डरमेन (श्रेष्ठिनों) के उल्लेख ने इस बात का सबूत दिया कि व्यापारियों को संघों में संगठित किया गया था।
- पीजीडब्ल्यू (चित्रित ग्रे वेयर) संस्कृति–इस समय बड़े पैमाने पर प्रचलन में थी।
- **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों अर्थात श्रुतियों और स्मृतियों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **श्रुति:** वैदिक साहित्य को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित की गई है। कृपया ध्यान दें कि 'श्रुति' शब्द का अर्थ है "सुनना"। श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
    - **वेद:** इन्हें अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर–प्रदत्त) और नित्य (सभी अनंत काल में विद्यमान) कहा जाता है। जिनमें चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
    - पहले तीन वेदों (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) को सामूहिक रूप से वेदत्रयी (वेदों की तिकड़ी) के रूप में जाना जाता है।
      - **ऋग्वेद:** ऋग्वेद भजनों (गीतों) का संग्रह है। यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसे 'मानवता का पहला वसीयतनामा' भी कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं जिन्हें 10 मंडलों में विभाजित किया गया है।
      - छह मंडल (दूसरे से सातवें मंडल तक) को गोत्र/वंश मंडल (कुल ग्रंथ) कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहला और 10वां मंडल बाद में जोड़े गए। पुरुष सूक्त, जिसमें चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जानकारी मिलती है, 10वें मंडल में है। होत्री नामक पुरोहित द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता था।
      - ऋग्वेद में हिमालय और हिंदुकुश पर्वतों को क्रमशः हिमवंत और मुंजवंत कहा गया है।
      - ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख है और नाडी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है। इसमें पूर्व में गंगा और यमुना तथा पश्चिम में कुभा का उल्लेख है।?
      - ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है। वह सूर्य देवता सवितृ को समर्पित है। गायत्री मन्त्र में आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण होते हैं। इस मन्त्र के रचयिता ऋषि विश्वामित्र हैं।
      - ऋग्वेद के अनुसार, सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी थी जबकि सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। गंगा नदी का एक बार उल्लेख किया गया है जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख किया हुआ है।
      - ऋग्वेद में योग का वर्णन भी किया गया है।
      - **सामवेद:** यह मंत्रों की पुस्तक है और संगीत से सम्बन्धित है। इसमें 1549 सूक्त हैं और सभी सूक्त (75 को छोड़कर) ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के मंत्रों का पाठ उप्रगाता किया जाता था।
      - **यजुर्वेद:** यह यज्ञ प्रार्थनाओं की एक पुस्तक है। अर्ध्वयु नामक पुरोहित द्वारा यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद (संपूर्ण श्लोक) और शुक्ल यजुर्वेद (पंघ और गद्य दोनों में लिखित)। वायजसनेय शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है।
      - अथर्ववेद (जादुई सूत्रों की पुस्तक), चौथा और अंतिम, वेद जिसमें बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र दिये गये हैं। इसे लोकिक वेद भी कहा जाता है। बहुत लंबे समय तक इसे वेदों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया था।
    - **ब्राह्मण:** ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं। इसमें वैदिक मंत्रों के अर्थ, उनके अनुप्रयोग और उनकी उत्पत्ति की कहानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अलावा, यह कर्मकांडों और दर्शन के बारे में भी विस्तार से बताता है।
    - प्रत्येक वेद के साथ कई ब्राह्मण जुड़े हुए हैं:
      - **ऋग्वेद–** ऐतरेय और कौशिकी/संख्यान।
      - **साम वेद–** पंचविष (तांड्य महा ब्राह्मण), षडविंश, छांदोग्य और जैमिनीय।
      - **यजुर्वेद–** शतपथ (सबसे पुराना और सबसे बड़ा ब्राह्मण) और तैत्तिरीय।
      - महाजनी प्रथा' का उल्लेख सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।
      - **अथर्ववेद–** गोपथ।
    - **उपनिषद:** उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं। उन्हें आमतौर पर वेदांत कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना वेद के अंत में हुई थी। उपनिषद् आर्यों के दर्शन और सिद्धान्तों का वर्णन करता है। उपनिषदो की संख्या 108 है। बृहदारण्यक सबसे प्राचीन उपनिषद है।
  - स्मृति ग्रंथों का एक निकाय है जिसमें इतिहास, पुराण, तंत्र और आगम जैसे धर्म पर शिक्षाएँ हैं। ये शाश्वत नहीं हैं। उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। 'स्मृति' शब्द का अर्थ निश्चित और लिखित साहित्य है। इसमें 06 विश्व अर्थात् वेदांग/सूत्र, स्मृति धर्मशास्त्र, महाकाव्य (महाकाव्य), पुराण, उपवेद और षड–दर्शन शामिल पुरोहित हैं।
    - **आरण्यक:** अरण्य का अर्थ है 'जंगल'। ये मुख्य रूप से सन्यासियों के लिए लिखे गए थे। आरण्यक ब्राह्मणों के अंतिम भाग हैं।
    - **वेदांग:** छह वेदांग हैं:
      - **शिक्षा (ध्वन्यात्मकता):** "प्रत्याख्या" – ध्वन्यात्मकता पर सबसे पुराना पाठ।
      - **कल्प सूत्र (अनुष्ठान):**

- श्रौत सूत्र / शुल्व सूत्र – यज्ञ/अनुष्णनों से सम्बन्धित हैं।
- गृह्य सूत्र – पारिवारिक समारोहों से संबंधित
- धर्म सूत्र – वर्णों, आश्रमों आदि से संबंधित।

- **व्याकरण (व्याकरण):** 'पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी विश्व का प्राचीनतम व्याकरण ग्रंथ है।
- **निरुक्त (व्युत्पत्ति):** 'निरुक्त' (यास्क) 'निघंटु' (कश्यप) पर आधारित है और कठिन वैदिक शब्दों का संग्रह है। कृपया ध्यान दें कि निघंटु विश्व का सबसे पुराना शब्द–संग्रह है जबकि निरुक्त विश्व का सबसे पुराना शब्द अर्थ संग्रह है।
- **श्री भास्काचार्य** ने 'निरुक्त–व्युत्पत्ति–विज्ञान–भाषाशास्त्र और शब्दार्थ–विज्ञान पर सबसे पुराना भारतीय ग्रंथ' नामक पुस्तक लिखी। निरुक्त छः वेदांगों में से एक है।
- **छंद (मैट्रिक्स):** पिंगल द्वारा लिखित 'छंद सूत्र' एक प्रसिद्ध ग्रंथ है।
- **ज्योतिष (खगोल विज्ञान):** लगध मुनि द्वारा लिखित 'वेदांग ज्योतिष' सबसे पुराना ज्योतिष ग्रंथ है।

➢ **स्मृतियाँ:** छह प्रसिद्ध स्मृतियाँ हैं:

- **मनु स्मृति** यह पुराना स्मृति ग्रन्थ है जो पूर्व–गुप्त काल का है। इसके भाष्यकार विश्वरूप, मेघातिथि, गोबिंदराज और कुल्लूक भट्ट थे।
- **याज्ञवल्क्य स्मृति** पूर्व–गुप्त काल की है और इसके टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क (शिलाहार वंश के एक राजा) थे।
- **नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति और पराशर स्मृति** गुप्तकाल की हैं।

➢ **महाकाव्य:** मुख्य रूप से दो महाकाव्य (महाकाव्य) हैं–

- **रामायण या आदि काव्य की** रचना वाल्मीकि ने की थी। यह दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य है। इसमें 7 कांडों में 24,000 श्लोक अर्थात छंद (मूल रूप से 6,000, बाद में – 12,000, अंत में – 24,000) शामिल हैं। पहला और सातवाँ कांडा नवीनतम जोड़ा थे।
- **महाभारत की** रचना वेद व्यास ने की थी। यह दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य है। वर्तमान में, इसमें 1,00,000 श्लोक अर्थात छंद और 18 पर्व शामिल हैं, जिसमें पूरक के रूप में हरिवंश है। भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गई है। शांति पर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व (अध्याय) है। मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता के नाम से जाना जाता था। बाद में इसमें 24,000 श्लोक थे और इसे चतुरविंशती सहस्त्री संहिता / भरत के नाम से जाना जाता था। अंत में, इसमें 1,00,000 थे और इसे शतसहस्त्री संहिता / महाभारत के रूप में जाना गया।
- महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई कुल 18 दिन तक लड़ी गई। यह युद्ध कौरव और पांडवों के मध्य कुरु साम्राज्य के सिंहासन की प्राप्ति के लिए लड़ा गया।

➢ **पुराण:** 18 प्रसिद्ध पुराण हैं। मत्स्य **पुराण** प्राचीनतम पुराण ग्रन्थ है। अन्य महत्वपूर्ण पुराण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और वायु पुराण हैं। वे विभिन्न शाही राजवंशों की वंशावली का वर्णन करते हैं।

➢ **उपवेद:** उपवेद (सहायक वेद) पारंपरिक रूप से वेदों से जुड़े थे:

- **आयुर्वेद (चिकित्सा)** ऋग्वेद से जुड़ा है जबकि **गंधर्व वेद (संगीत)** सामवेद से जुड़ा है। **धनुर वेद (तीरंदाजी)** यजुर वेद से जुड़ा है जबकि **शिल्प वेद (शिल्प का विज्ञान)** और **अर्थवेद (धन का विज्ञान)** अथर्ववेद से जुड़ा है।

➢ **षड–दर्शन:** दर्शन के छह स्कूल हैं जिन्हें षड–दर्शन के नाम से जाना जाता है। ये इस प्रकार हैं:

- सांख्य दर्शन (संस्थापक: कपिला और मूल पाठ: सांख्य सूत्र)
- योग दर्शन (संस्थापक: पतंजलि और मूल पाठ: योग सूत्र)
- न्याय दर्शन (संस्थापक: गौतम और मूल पाठ: न्याय सूत्र)
- वैशेषिका दर्शन (संस्थापक: कणाद और मूल पाठ: वैशेषिक सूत्र)
- मीमांसा/पूर्व मीमांसा (संस्थापक: जैमिनी और मूल पाठ: पूर्व मीमांसा सूत्र)
- वेदांत/उत्तर मीमांसा (संस्थापक: बादरायण और मूल पाठ: ब्रह्म सूत्र/वेदांत सूत्र)

3. जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) को प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान व्यापार और शहरीकरण के पुनरुद्धार के साथ उत्तरी भारत में एक नई सभ्यता का विकास शुरू हुआ। उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के इस दौर में बुद्ध और महावीर का जन्म हुआ। उनकी मृत्यु के बाद की सदी में, बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने भारत में प्रमुख धर्मों के रूप में जड़ें जमा लीं।
- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
- एक 'तीर्थंकर', वह है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया।

क्या आप जानते हैं?

★ जैन मान्यता के अनुसार एक तीर्थकर को एक तीर्थ के संस्थापक के रूप में परिभाषित किया गया है।

★ प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। UP Police Constable जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे। जिनका जन्म 872 ई. पू. में वाराणसी में एक क्षत्रिय कुल में हुआ था।

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।

- ऋषभनाथ का निर्वाण स्थल अष्टापद है। तीर्थंकर नेमिनाथ का निर्वाण का स्थल ऊर्जयन्त है। तीर्थंकर महावीर का निर्वाण स्थल पावापुरी है। वासुपूज्य 12 वें तीर्थंकर हैं इनका निर्वाण स्थल चम्पापुरी है।
- जैन धर्म के तीर्थंकर तथा उनके चिह्न–

  आदिनाथ – वृषभ

  मल्लिनाथ – जल–कलश

  पार्श्वनाथ – सर्प

  सम्भवनाथ – अश्व
- वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व (बीसीई) में वैशाली के पास कुंडाग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
- तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए
- बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बुद्धिमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाना जाने लगे। तत्पश्चात, वह जिना बन गयो जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
- उन्होंने एक सरल सिद्धांत दिया जो पुरुष और महिलाएं ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें अहिंसा के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करना चाहिए, जिसका अर्थ है जीवित प्राणियों को चोट पहुँचाना या मारना नहीं चाहिए।
- महावीर के अनुयायी, जो जैन कहलाते थे, बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे।
- महावीर ने मगध, विदेह और अंग के राज्यों में प्रचारक के रूप में बड़े पैमाने पर यात्रा की। मगध शासक बिंबिसार और अजातशत्रु उनकी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे।
- 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व (बीसीई) में पावापुरी में मृत्यु हो गई।
- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा** – किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य** – सत्य बोलना
  - **अस्तेय** – चोरी न करना
  - **अपरिग्रह** – संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य** – ब्रह्मचर्य
- **जैन धर्म के संप्रदाय/पद्धति:** जैन धर्म को दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित किया गया है; दिगंबर और श्वेतांबर। विभाजन मुख्य रूप से मगध में अकाल के कारण हुआ जिसने भद्रबाहु के नेतृत्व वाले एक समूह को दक्षिण भारत जाने के लिए मजबूर किया।
- 12 वर्षों के अकाल के दौरान, दक्षिण भारत में समूह सख्त प्रथाओं पर अड़ा रहा, जबकि मगध में समूह ने अधिक लचीला रवैया अपनाया और सफेद कपड़े पहनना शुरू कर दिया।
- अकाल की समाप्ति के बाद, जब दक्षिणी समूह मगध में वापस आया, तो परिवर्तित प्रथाओं ने जैन धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित कर दिया।
  - **दिगंबर:** इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्नता में विश्वास करते हैं। पुरुष साधु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भिक्षु बिना सिले सादी सफेद साड़ी पहनती हैं। सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करें। माना कि स्त्री मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
  - **श्वेतांबर:** साधु सफेद वस्त्र पहनते हैं। केवल 4 व्रतों का पालन करें (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)। विश्वास करें कि महिलाएं मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं। स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- भारत में जैन धर्म की व्यापक स्वीकृति के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं:
  - लोकभाषा का प्रयोग।
  - बोधगम्य उपदेश।
  - शासकों और व्यापारियों का समर्थन।
  - जैन मुनियों की दृढ़ता।
- **जैन परिषद:**
  - **प्रथम जैन परिषद:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - पूर्वों के स्थान पर 12 अंगों का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **जैन धर्म का पतन:** शाही संरक्षण की कमी, इसकी गंभीरता, गुटबाजी और बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारत में जैन धर्म का पतन हुआ।

- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूंकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें श्शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता था।
- गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी गार्डन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।
- पारिवारिक जीवन के दौरान से ही गौतम बुद्ध कई वर्षों तक भटकते रहे, अन्य विचारकों से मिलते रहे और विचार–विमर्श करते रहे
- वे "फोर ग्रेट साइट्स" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान दृश्य 29 वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ ने चार दुःखद दृश्य देखे। वह थे:
  - एक बेपरवाह बूढ़ा जिसने चिथड़े, पहन रखे हैं अपनी झुकी हुई पीठ के साथ।
  - एक बीमार आदमी एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित है।
  - एक मृत आदमी को उसके परिजन रोते बिलखते श्मशान घाट में ले जा रहे हैं।
  - एक तपस्वी
- सिद्धार्थ इन स्थलों से गहराई से हिल गए थे। उन्होंने एक तपस्वी को भी देखा जिसने संसार को त्याग दिया था और दुःख का कोई निशान नहीं पाया। इन 'चार महान स्थलों' ने उन्हें दुनिया को त्यागने और दुख के कारण की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- 512 ईसा पूर्व में, वह अपना महल छोड़कर सत्य की खोज में जंगल में चले गये। अपने भटकने के दौरान, वह कई दिनों तक एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो गई।
- माना जाता है कि गौतम बुद्ध ने अंतिम अनुभूति के लिए बोधगया जाने से पहले छः साल तक डुंगेश्वरी गुफा नामक स्थान पर पवित्रतापूर्वक ध्यान किया।
- जिस स्थान पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) में आज भी मौजूद है। अपने ज्ञानोदय के बाद, बुद्ध ने लोगों को अपना ज्ञान प्रदान करने का निर्णय लिया।
- वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व (बीसीई) में अंतिम सांस ली।
- वैशाली नामक बौद्ध स्थल पर सर्वप्रथम महिलाओं को संघ में शामिल किया गया। गौतम बुद्ध पहले महिलाओं को संघ में शामिल करने के पक्ष में नहीं थे लेकिन आनंद के कहने पर उन्होंने ऐसा किया।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुख (पीड़ा का सच):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख के कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख के अंत) :** निर्वाण की प्राप्ति से पीड़ा/दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।
- **आठ गुना पथ:** इसमें ज्ञान, आचरण और ध्यान प्रथाओं से संबंधित विभिन्न परस्पर क्रियाएं शामिल हैं।
  - सम्यक दृश्य (सम्मा दित्ती)
  - सम्यक इरादा (सम्मा संगकप्पा)
  - सम्यक भाषण (सम्मा वेक्का)
  - सम्यक कार्रवाई (सम्मा कम्मंता)
  - सम्यक आजीविका (सम्मा अजिवा)
  - सम्यक सचेतनता (सम्मा सती)
  - सम्यक प्रयास (सम व्यायाम)
  - सम्यक एकाग्रता (सम्मा समाधि)
- **जीवन का पहिया:** यह दुनिया के बौद्ध दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
- **बौद्ध संघ:** बुद्ध ने संघ नामक एक मिशनरी संगठन की नींव रखी, जिसका अर्थ है उनके विश्वास के प्रचार के लिए 'संगठन'। सदस्यों को भिक्खु (भिक्षु) कहा जाता था। वे तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे।

क्या आप जानते हैं?

- **चैत्य** – एक बौद्ध मंदिर या एक ध्यान कक्ष।
- **विहार** – मठ/भिक्षुओं के रहने के स्थान।
- **स्तूप** – बुद्ध के शरीर के अवशेषों पर निर्मित, वे महान कलात्मक मूल्य के स्मारक।

- **बौद्ध धर्म में विभाजन:** कनिष्क के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु नागार्जुन ने बौद्ध धर्म के पालन के तरीके में सुधारों की शुरुआत की। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म हीनयान और महायान के रूप में दो भागों में विभाजित हो गया।
  - **हीनयान (कम वाहन):** यह बुद्ध द्वारा प्रचारित मूल पंथ था। इस रूप के अनुयायी बुद्ध को अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान के रूप में नहीं पूजते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा से इनकार किया और लोगों की भाषा पाली को जारी रखा।
  - **महायान (बड़ा वाहन):** इस संप्रदाय में, बुद्ध को भगवान और बोधिसत्व को उनके पिछले अवतार के रूप में पूजा जाता था। अनुयायियों ने बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र और मूर्तियाँ बनाई और प्रार्थनाएँ कीं, और उनकी स्तुति में भजनों (मंत्रों) का पाठ किया। बाद में, उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत में लिखीं। बौद्ध धर्म के इस रूप को कनिष्क ने संरक्षण दिया था।
- **थेरवाद:** यह आज के बौद्ध धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। यह बुद्ध की मूल शिक्षाओं के सबसे करीब है। थेरवाद बौद्ध धर्म श्रीलंका में

विकसित हुआ और बाद में दक्षिण पूर्व एशिया के बाकी हिस्सों में फैल गया। यह कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, श्रीलंका और थाईलैंड में धर्म का प्रमुख रूप है।

- **वज्रयान:** वज्रयान का अर्थ है "वज्र का वाहन", जिसे तांत्रिक बौद्ध धर्म के रूप में भी जाना जाता है। यह बौद्ध स्कूल भारत में लगभग 900 CE के आसपास विकसित हुआ। यह बाकी बौद्ध स्कूलों की तुलना में गूढ़ तत्वों और अनुष्ठानों के एक बहुत ही जटिल समुच्चय/प्रक्रिया पर आधारित है।
- **जेन:** यह महायान बौद्ध धर्म का एक स्कूल है जो चीन में तांग राजवंश के दौरान चीनी बौद्ध धर्म के चौन स्कूल के रूप में उत्पन्न हुआ और बाद में विभिन्न स्कूलों में विकसित हुआ। यह 7वीं शताब्दी में जापान में फैल गया। ध्यान और तंत्र इस बौद्ध परंपरा की सबसे विशिष्ट विशेषताएँ हैं।
- **बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण:**
  - स्थानीय भाषा में बुद्ध के उपदेशों की सरलता ने लोगों को आकर्षित किया।
  - बौद्ध धर्म ने व्यापक धार्मिक रीति–रिवाजों को खारिज कर दिया जबकि रूढ़िवादी वैदिक धर्म के अभ्यास ने महंगे कर्मकांडों और बलिदानों पर जोर दिया।
  - बुद्ध का जोर धम्म के पालन पर था। इस कारण बौद्ध संघों ने बुद्ध के संदेशों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बौद्ध परिषदें

आयोजन	जगह	अध्यक्ष	संरक्षक राजा
पहली	राजगृह	महाकस्सप	अजातशत्रु
दूसरी	वैशाली	साबकमीरा/ सबाकामी	कालाशोक
तीसरी	पाटलिपुत्र	भोगाली पुत्ततिस	अशोक
चौथी	कश्मीर	वसुमित्र	कनिष्क

- **त्रिपिटक:** विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के मठवासी जीवन पर लागू होने वाले आचरण और अनुशासन के नियम शामिल हैं।
- सुत्तपिटक में बुद्ध के मुख्य शिक्षण या धम्म शामिल हैं। इसे पाँच निकायों या संग्रहों में विभाजित किया गया है :
  - दीर्घ निकाय
  - मज्जिम निकाय
  - संयुक्त निकाय
  - अंगुत्तार निकाय
  - खुद्दक निकाय
- अभिधम्म पिटक भिक्षुओं के शिक्षण और विद्वतापूर्ण गतिविधियों का एक दार्शनिक विश्लेषण और व्यवस्थितकरण है।

क्या आप जानते हैं?

★ उपसाक पिटक के अलावा अभिधम्म सुत्त और विनय पिटक बौद्ध ग्रन्थ हैं जिन्हें पालि भाषा में लिखा गया है।

- अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों में दिव्यावदान, दीपवंश, महावंश, मिलिंद पन्हे आदि शामिल हैं।
- वंशपाकसिनी भारत में लिखा गया अंतिम बौद्ध ग्रन्थ था। इससे हमें मौर्यों की उत्पत्ति के बारे में जानकारी मिलती है।
- सिलप्पादिकारम और मणिमेकलई बौद्ध धर्म से संबंधित पुस्तकें हैं, जो तमिल साहित्य में पाई जाती हैं। ये एक बौद्ध भिक्षु इलंगो आदिगल द्वारा लिखी गई हैं।
- 'पेंरुगदायी कोंगु बेलिर द्वारा लिखित महाकाव्य कृति है। यह भारत के तमिल साहित्य से सम्बन्धित है। यह संगम काल की रचना है, इसमें कोंगु क्षेत्र का वर्णन मिलता है, जिसके नियंत्रण के लिए इस काल की तीनों शक्तियाँ चेर, चोल, पाण्डेय निरन्तर प्रयासरत रहती थीं।

4. मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** राजतंत्र
- **ऐतिहासिक युग:** सी। 322 ईसा पूर्व (बीसीई) 187 ईसा पूर्व (बीसीई)
- **महत्वपूर्ण राजा:** चंद्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक
- **मौर्य शासक**
  - **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
  - विष्णुगुप्त, जिन्हें बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाना गया, नंद राजा से अपमानित हुए थे। नदों को समूल नष्ट करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के सिकंदर से प्रेरित होकर, एक सेना खड़ी कर रहा था और अपना खुद का राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
  - सिकन्दर की मृत्यु का समाचार सुनकर चन्द्रगुप्त ने लोगों को इकट्ठा किया और उनकी सहायता से यूनानी सेना को खदेड़ दिया जिसे सिकन्दर ने तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र की ओर कूच किया और 322 ईसा पूर्व (बीसीई) में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश की स्थापना हुई।
  - चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान, सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस, जिनका एशिया माइनर से लेकर भारत तक के देशों पर नियंत्रण था, ने सिंधु को पार किया परन्तु चंद्रगुप्त से हार गया। कहा जाता है कि सेल्यूकस के दूत, मेगस्थनीज, भारत में बना रहा और इंडिका नामक उसका ग्रंथ मौर्य राजनीति और समाज के बारे में एक उपयोगी रिकॉर्ड है।
- गंगा के मैदान पर नियंत्रण पाने के बाद, चंद्रगुप्त ने अपना ध्यान उत्तर–पश्चिम की ओर लगाया ताकि सिकंदर के निधन से उत्पन्न शून्यता का लाभ उठाया जा सके। इन क्षेत्रों में वर्तमान अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और मकरान शामिल थे, जिन्होंने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात चंद्रगुप्त न मध्य भारत की ओर अभियान शुरू किया।
  - भद्रबाहु, एक जैन भिक्षु, चंद्रगुप्त मौर्य को दक्षिण भारत ले गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में साललेखन (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास करता है) विधि से अपने प्राण त्याग दिए।
  - **बिन्दुसार :** उनका वास्तविक नाम सिहासेना था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र था। ग्रीक विद्वानों द्वारा उसे अमित्रोचेट्स (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में उल्लेखित किया है, जबकि महाभाष्य उन्हें अमित्रघात (शत्रुनाशक) के रूप में संदर्भित करता है।

- बिंदुसार स्पष्ट रूप से एक सक्षम शासक था जिससे पश्चिम एशिया के ग्रीक राज्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क की अपने पिता की परंपरा को जारी रखा। ऐसा माना जाता है कि उसने दो समुद्रों यानी अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त की थी। उन्हें चाणक्य और अन्य सक्षम मंत्रियों द्वारा सलाह दी जाती रही। ऐसा माना जाता है कि बिंदुसार अजीविका संप्रदाय में दीसित हो गया था।
- उसने अपने पुत्रों को साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के वाइसराय के रूप में नियुक्त किया था। बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया, और उनकी मृत्यु 272 ईसा पूर्व में हुई थी। अशोक बिन्दुसार चुना हुआ उत्तराधिकारी नहीं था, और तथ्य यह है कि वह केवल चार साल बाद 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर आ रहा हुआ था, यह दर्शाता है कि उत्तराधिकार के लिए बिन्दुसार के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ होगा।
- अपने शासन के दौरान, बिन्दुसार कर्नाटक तक मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा। उसकी मृत्यु के समय, उपमहाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मौर्य आधिपत्य के अधीन आ गया था। उसने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद, अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।
- **अशोक:** अशोक, चौथी शताब्दी ई.पू. में अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान और शासकों में से एक थे। उन्हें राधागुप्त नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति (प्रधानमंत्री) का समर्थन प्राप्त था।
- चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए हैं। अशोक पहला शासक था जिसने शिलालेखों के माध्यम से अपना संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत भाषा में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
- उन्हें श्देवनाम प्रिय' के रूप में जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह द्रवित हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न करने का निर्णय लिया।
- अशोक के आक्रमण के दौरान कलिंग (पूर्वी प्रांत) की राजधानी तोशाली थी। इसका उल्लेख उसके 13वें शिलालेख में मिलता है। इसी युद्ध के बाद अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई।
- वह दुनिया के इतिहास में एकमात्र ऐसा राजा था जिसने युद्ध जीतने के बाद विजय प्राप्त करना छोड़ दिया। युद्ध की विभीषिका का वर्णन राजा ने स्वयं अपने शिलालेख XIII में किया है।
- बिंदुसार चाहता था कि उसका पुत्र सुसीम उसका उत्तराधिकारी बने। राधागुप्त नामक एक मंत्री की सहायता से अशोक अपने 99 भाइयों को मारने के बाद, अशोक (बिंदुसार के पुत्र) ने सिंहासन हासिल किया।
- तक्षशिला के लोगों द्वारा स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह करने पर अशोक तक्षशिला का राज्यपाल (वायसराय) था, और बाद में एक प्रमुख शहर और वाणिज्यिक केंद्र अवंती की राजधानी उज्जैन का राज्यपाल (वाइसराय) नियुक्त किया गया था।
- अशोक सभी समय के महानतम राजाओं में से एक था, और अपने शिलालेखों के माध्यम से अपने लोगों के साथ सीधा संपर्क बनाए रखने वाला पहला शासक माना जाता है। सम्राट के अन्य नामों में बुद्धशाक्य (मास्की शिलालेख में), धर्मसोक (सारनाथ शिलालेख), देवानामपिया (अर्थात् देवताओं के प्रिय) और पियदस्सी (मनभावन उपस्थिति का अर्थ) शामिल हैं, जो श्रीलंकाई बौद्ध कालक्रम दीपवश और महावशं में दिए गए हैं।
- अशोक के शासनकाल के दौरान, मौर्य साम्राज्य ने हिंदुकुश से लेकर बंगाल तक पूरे क्षेत्र में विस्तार किया, और अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और पूरे भारत में कश्मीर और नेपाल की घाटियों सहित, सुदूर दक्षिण में एक छोटे से हिस्से को छोड़कर, जिस पर चोलों और रॉक शिलालेख 13 के अनुसार पांड्य और रॉक शिलालेख 2 के अनुसार केरलपुत्रों और सत्यपुत्रों द्वारा शासित था।
- उसने सीरिया, मिस्र, मैसेडोनिया, साइरेनिका (लीबिया) और एपिरस के अपने समकालीनों शासकों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए, इन सभी का उल्लेख अशोक के शिलालेखों में किया गया है।
- अशोक के शासन की परिभाषित घटना उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में कलिंग (वर्तमान ओडिशा) के खिलाफ उसका अभियान था। यह मौर्यों का एकमात्र दर्ज सैन्य अभियान था।
- युद्ध में मारे गए और निर्वासित किये गये, लोगों की संख्या हजारों में थी।
- अभियान शायद सामान्य से अधिक क्रूर था क्योंकि यह कलिंग के खिलाफ एक दंडात्मक कार्यवाही थी, जो सम्भवतः बिन्दुसार के समय में मगध साम्राज्य से अलग हो गया था (हाथीगुम्फा शिलालेख कलिंग को नंद साम्राज्य के एक हिस्से के रूप में बताता है)।
- अशोक नरसंहार से इतना तबाह हो गया था और पीड़ा से हिल गया था कि जिसने उसके दृष्टिकोण और मूल्यों को बदल दिया।
- अशोक अपने आध्यात्मिक गुरु उपगुप्त से बेहद प्रभावित थे उन्हीं के प्रभाव में आकर वह बौद्ध बन गए और उनके नए-नए मूल्यों और विश्वासों की एक परम्परा को अपना लिया, जो शांति और नैतिक धार्मिकता या धम्म (संस्कृत में धर्म) के लिए उनके जुनून की पुष्टि करते हैं।
- **अशोक के शिलालेख:** जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश तत्वशास्त्री और औपनिवेशिक प्रशासक अशोक के शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। अशोक के ये अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रथम मूर्त प्रमाण हैं।
- **लघु शिलालेख** अशोक के जिला लेखों के अवल उसके अशोक के जिला लेखों के अलव उसके देश भर में और अफगानिस्तान में भी 15 चट्टानों पर पाए जाते हैं। अशोक अपने नाम का प्रयोग इनमें से केवल चार स्थानों पर करता है–
  - मस्की,
  - ब्रह्मगिरी (कर्नाटक),
  - गुर्जरा (मध्य प्रदेश) और
  - नेट्टूर (आंध्र प्रदेश)
- **स्तंभ शिलालेख:** सभी स्तंभ मोनोलिथ (पत्थर से उकेरे गए) हैं और सतह अच्छी तरह से पॉलिश की गई है। वे कंधार (अफगानिस्तान), खैबर पख्तूनख्वा (पाकिस्तान), दिल्ली, वैशाली और चंपारण (बिहार), सारनाथ और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), अमरावती (आंध्र

प्रदेश), और सांची (मध्य प्रदेश) जैसे विभिन्न स्थानों से पाए गए हैं।

- **चंद्रशोक (अशोक, दुष्ट) से धर्मसोका (अशोक धर्मी):** कलिंग की लड़ाई के बाद, उपगुप्त के प्रभाव में आकर अशोक बौद्ध बन गया। उसने धम्म की नीति पर लोगों को निर्देश देते हुए देश के विभिन्न भागों में दौरे (धर्मसूत्र) किए।
- **अशोक का धम्म:** 'धम्म' संस्कृत शब्द :धर्म' के लिए प्राकृत शब्द है। अशोक के स्तंभ शिलालेख II में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ का प्रदर्शन शामिल नहीं था। अशोक अपना कर्तव्य समझता था कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे और वह बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करे।
- अशोक के धम्म में मानवतावाद के महानतम विचार निहित थे, जो सभी धर्मों का सार था। उन्होंने करुणा, दान, पवित्रता, साधुता, संयम, सत्यवादिता, आज्ञाकारिता और माता–पिता, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान पर जोर दिया।
- जो भिक्षु धम्म के बारे में पढ़ाने के लिए जगह–जगह जाते थे। उन्हें धम्म महामात्त कहा जाता था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महिंद और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। अशोक ने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्ममहाभात्त को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
- अशोक ने बौद्ध धर्म में आस्था प्रकट करते हुए अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया था।

क्या आप जानते हैं?

- **अशोक का सिंह शीर्ष:** भारतीय गणराज्य का प्रतीक सारनाथ में स्थित अशोक के स्तंभों में से एक के सिंह शीर्ष से अपनाया गया है। वृत्ताकार आधार से निकला पहिया, अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वज का एक भाग है।

5. गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी और उसका उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच था। यह राजवंश चंद्रगुप्त–प्रथम, और समुद्रगुप्त आदि जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त साम्राज्य के राजाओं का विवरण नीचे दिया गया है–
  - **श्री गुप्त:** गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त था। वह अपने घटोत्कच पुत्र के कारण स्वतंत्र होने में सफल हुआ था। इन दोनों को महाराज कहा जाता था।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम (320 – 330 ईस्वी):** चंद्रगुप्त प्रथम, वह महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली। उन्होंने उस परिवार की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
  - महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है। चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है जो 320 ईस्वी में उसके राज्यारोहण के साथ शुरू होता है।
  - **समुद्रगुप्त (330–380 ई.):** समुद्रगुप्त संभवतरू गुप्त वंश के शासकों में सबसे महान था। इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारतीय राजाओं के खिलाफ अभियान किया था।
  - समुद्रगुप्त की प्रशस्ति, संस्कृत में एक कविता के रूप में हरिषेण कवि द्वारा रचित थी। जिसे प्रयागराज (इलाहाबाद) के अशोक स्तंभ पर अंकित किया गया था।
  - प्रयाग प्रशस्ति को समुद्रगुप्त के शासनकाल के सबसे महत्वपूर्ण शिलालेखों में से एक माना जाता है तथा यह शिलालेख समुद्रगुप्त की विजयों, गुप्त साम्राज्य की शक्ति और विस्तार का वर्णन करता है।
  - प्रयाग प्रशस्ति को संस्कृत साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है। यह कविता की सुंदरता और समुद्रगुप्त की प्रशंसा के लिए प्रसिद्ध है तथा इसमें दरबारी कवि हरिषेण ने समुद्रगुप्त को एक महान् योद्धा एक उदार शासक और एक विद्वान राजा के रूप में चित्रित किया है।
  - समुद्रगुप्त में अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने और चांदी के सिक्के जारी किए जिन पर 'अश्वमेध को पुनर्स्थापित करने वाले' की कथा अंकित थी। उनकी सैन्य उपलब्धियों के कारण समुद्रगुप्त को श्भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था।
  - **चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना। वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने कुबेरनागा से विवाह किया, वह मध्य भारत की एक नागा वंश की राजकुमारी थीं।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय की सबसे बड़ी सैन्य उपलब्धि पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों के खिलाफ उसका युद्ध था। अपनी जीत के बाद, उसने घोड़े की बलि दी और सकारी की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है, 'शकों का नाश करने वाला'। वह अपने को 'विक्रमादित्य' भी कहता था।
  - उसके अन्य नाम देवगुप्त, देवराज तथा देवश्री और उपाधियाँ विक्रमांक और परमभागवत आदि थीं। मेहरौली लेख के अनुसार उसने विष्णुपद पर्वत पर विष्णु ध्वज की स्थापना कराई थी। उसे शक विजेता के रूप में भी जाना जाता है।
  - उज्जैन एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था और गुप्तों की वैकल्पिक राजधानी था। गुप्त साम्राज्य की महान समृद्धि विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्कों से प्रकट होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। फाहियान ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी है।
  - **कुमारगुप्त:** कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने कई सिक्के जारी किए और उसके शिलालेख पूरे गुप्त साम्राज्य में पाए गए हैं। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संस्थान के रूप में उभरा। 'पुष्यमित्र' नामक शक्तिशाली धनी जनजाति ने गुप्त सेना को उसके शासनकाल के अंत में हराया था।

- **स्कंदगुप्त:** मध्य एशिया के हूणों की एक शाखा ने हिंदू कुश पर्वतों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया। स्कंदगुप्त जिसने वास्तव में हूणों के आक्रमण का सामना किया था। उसने हूणों के खिलाफ विजय प्राप्त की और साम्राज्य को बचाया तथा उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दिया।
- नीतिसार (राजनीति के तत्व) जिसमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र का प्रारंभिक मूल पाठ शामिल है, इसे कामन्दक के द्वारा लिखा गया था।

6. गुप्तोत्तर काल

- गुप्तों और वाकाटक शासकों के पतन के साथ राजनीतिक स्थिति जटिल हो गई। गुप्तों के सामंत उत्तर में स्वतंत्र हो गए। दक्कन और सुदूर दक्षिण में भी स्वतंत्र हुई शक्तियों की बहुलता देखी गई।
- गुप्तों के पतन से लेकर हर्ष के उदय तक भारत में राजनीतिक परिदृश्य विस्मयकारी था। कुछ समय तक बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होता रहा। गुप्तों की विरासत के लिए छोटे–छोटे राज्यों में आपस में होड़ मच गई। उत्तरी भारत को मगध के बाद के गुप्तों, मौखरियों, पुश्य भूतियों और मैत्रकों के चार राज्यों में विभाजित किया गया था। मौखरियों ने सर्वप्रथम कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर अधिकार किया। धीरे–धीरे उन्होंने बाद के गुप्तों को पराजित कर उन्हें मालवा में स्थानांतरित कर दिया।

शासक राजवंश

उत्तर भारत	दक्षिण भारत
मैत्रक	ईक्ष्वाकुओं
मौखरी	बादामी के चालुक्य
गौड़	कांची के पल्लव
हूणों	कदम्ब साम्राज्य
थानेसर के पुष्यभूति	कालभ्रस

- **पुष्यभूति वंश:** पुष्यभूति या वर्धन वंश की स्थापना थानेसर (कुरुक्षेत्र जिला) में पुष्यभूति द्वारा संभवतः 6वीं शताब्दी की शुरुआत में की गई थी। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, लेकिन हूणों के आक्रमणों के बाद वे स्वतंत्र हो गए।
- राजवंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकर वर्धन (580–605 ई.) था। प्रभाकर वर्धन ने अपने सबसे बड़े पुत्र राज्यवर्धन (605–606 ईस्वी) को उत्तराधिकारी बनाया गया था, राज्यवर्धन को 606 ईस्वी में शशांक द्वारा मार डाला गया था।
- हर्षवर्धन का जन्म 590 ई. में स्थानेश्वर (थानेसर, हरियाणा) के राजा प्रभाकर वर्धन के यहाँ हुआ था। वह पुष्यभूति से संबंधित था जिसे वर्धन वंश भी कहा जाता था। वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह दुर्गावती से हुआ था।
- उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के मैतक वंश के एक राजा से विवाह किया था, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार डाला। चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने लेखन में राजा हर्षवर्धन के कार्यों की प्रशंसा की।
- प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद, उनका बड़ा पुत्र राज्यवर्धन थानेसर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष की एक बहन थी, राज्यश्री जिसका विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ था। गौड़ शासक शशांक ने ग्रहवर्मन को मार डाला और राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- इस घटना ने राज्यवर्धन को शशांक के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। लेकिन शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला। इसके बाद युद्ध के मैदान में ही 16 वर्षीय हर्षवर्धन को 606 ईस्वी में थानेसर की पर बैठने का अवसर मिला। उसने अपने भाई की हत्या का बदला लेने और अपनी बहन को बचाने की कसम खाई।
- इसके लिए उसने कामरूप के राजा भास्करवर्मन के साथ संधि की। हर्ष और भास्करवर्मन ने शशांक के खिलाफ अभियान किया। अंततः शशांक बंगाल भाग गया और हर्ष कन्नौज का भी राजा बना।
- **हर्ष का साम्राज्य:** कन्नौज को प्राप्त करने पर, हर्ष ने थानेसर और कन्नौज दो राज्यों को एकजुट किया। वह अपनी राजधानी कन्नौज ले गया। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया था। परन्तु हर्ष अपने नेतृत्व में उनमें से कई को एकजुट करने में सफल रहा।
- पंजाब और मध्य भारत पर उसका अधिकार था। शशांक की मृत्यु के बाद उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। उन्होंने गुजरात के वल्लभी राजा को भी हराया। यद्यपि (हर्ष की बेटी और वल्लभी राजा ध्रुवभट्ट के बीच विवाह से वल्लभी राजा और हर्ष में समझौता हो गया और दोनों राज्यों में मित्रता हो गई।)
- हालाँकि, दक्षिण को जीतने की हर्ष की योजना अधूरी रह गई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन द्वितीय ने 618–619 ईस्वी में हर्ष को हराया, इसने नर्मदा नदी के रूप में हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को सीमित कर दिया।
- यहां तक कि सामंत भी हर्ष के कड़े नियंत्रण में थे। हर्ष के शासनकाल ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। ह्वेन त्सांग ने हर्ष के शासनकाल में भारत का दौरा किया था। उसने राजा हर्ष और उसके साम्राज्य का बहुत अनुकूल विवरण दिया है। वह उसकी उदारता और न्याय की प्रशंसा करता है।
- हर्ष कला का महान संरक्षक था। वे स्वयं एक सिद्धहस्त लेखक था। उन्हें संस्कृत कृतियों रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद को लेखन का श्रेय दिया जाता है। बाणभट्ट उसके दरबारी कवि थे उन्होंने हर्षचरित की रचना की जिसमें हर्ष के जीवन और कार्यों का लेखा–जोखा दिया गया है।
- हर्ष ने नालंदा विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक दान दिया। हर्ष ने एकत्र किए गए सभी करों का एक चौथाई दान और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
- हर्ष एक सक्षम सैन्य विजेता और एक सक्षम प्रशासक था। हर्ष मुसलमानों के आक्रमण से पहले भारत में एक विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजा था।
- **हर्ष की मृत्यु:** हर्ष की मृत्यु 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हुई। चूंकि वह बिना किसी उत्तराधिकारी के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य बिखर गया।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई, कितने दिनों तक लड़ी गई थी ?
(A) 16 दिन (B) 18 दिन
(C) 20 दिन (D) 24 दिन

2. हड़प्पा स्थल की सर्वप्रथम संक्षिप्त खुदाई निम्नलिखित में से किसके द्वारा की गई थी?
(A) राखालदास बनर्जी
(B) बी.के. थापर
(C) सर अलेक्जेंडर कनिंघम
(D) अर्नेस्ट जे.एच. मैक

3. निम्नलिखित में से किस स्थान पर "पुजारी राजाओं" की मूर्ति मिली थी ?
(A) लोथल (B) मोहनजोदड़ो
(C) कोटदीजी (D) हड़प्पा

4. हड़प्पा सभ्यता के दौरान डांसिंग गर्ल (नर्तकी) की कांस्य प्रतिमा बनाने के लिए..... तकनीक का इस्तेमाल किया गया था।
(A) पत्थर की नक्काशी
(B) हाथीदांत नक्काशी
(C) लकड़ी की नक्काशी
(D) मोम लोपी ढलाई (कास्टिंग)

5. 6वीं से 14वीं शताब्दी तक निम्नलिखित में से कौन–सा सबसे शक्तिशाली महाजनपद था ?
(A) अंग (B) मगध
(C) वैशाली (D) वज्जि

6. जैन धर्म का सबसे महत्त्वपूर्ण मौलिक सिद्धान्त है :
(A) कर्म (B) अहिंसा
(C) वैराग्य (D) निष्ठा

7. वैदिक देवता इन्द्र किसके देवता हैं?
(A) हवा के
(B) तूफान के
(C) वर्षा व चक्रवात के
(D) अग्नि के

8. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक में एक वृत्ताकार अबेकस पर चार शेर एक के बाद एक जुड़े हुए हैं। अबेकस के चित्रवल्लरी में चार अलग-अलग जानवरों की मूर्तियाँ हैं, जिन्हें धर्म चक्रों के बीच से अलग किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर अबेकस की चित्रवल्लरी का हिस्सा नहीं है?
(A) बाघ (B) बैल
(C) हाथी (D) दौड़ता हुआ घोड़ा

9. निम्नलिखित में से कौन वह व्यक्ति है जिनका नाम 'देवानामप्रिय पियदर्शी' भी था?
(A) मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त
(B) भगवान महावीर
(C) मौर्य सम्राट अशोक
(D) गौतम बुद्ध

10. चन्द्रगुप्त मौर्य के इस प्रसिद्ध राजनीतिक सलाहकार को निम्नलिखित सभी नामों से जाना जाता था, इसके अलावा:''
(A) चाणक्य (B) विष्णुगुप्त
(C) कौटिल्य (D) समुद्रगुप्त

11. सम्राट अशोक का कौन-सा शिलालेख कलिंग पर उनकी विजय का उल्लेख करता है ?
(A) प्रथम (B) चतुर्थ
(C) दसवें (D) तेरहवें

12. मौर्य अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से ..... पर निर्भर थी।
(A) कृषि अर्थव्यवस्था
(B) व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था
(C) उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था
(D) युद्ध आधारित अर्थव्यवस्था

13. वृहद् साँची स्तूप किस काल से सम्बन्धित है?
(A) कुषाण काल
(B) गुप्त काल
(C) हर्षवर्धन काल
(D) मौर्य काल

14. कुषाण मूलतः कहाँ के निवासी थे ?
(A) मध्य एशिया (B) चीनी तुर्किस्तान
(C) तिब्बत (D) ईरान

15. कनिष्क के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से कौन-सी बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी ?
(A) पहली (B) दूसरी
(C) चौथी (D) पाँचवीं

16. शूद्रक द्वारा लिखित "मृच्छकटिकम्" का साहित्यिक प्रकार निम्नलिखित में से कौन–सा है ?
(A) निबंध (B) कविता
(C) टीका (D) नाटक

17. निम्नलिखित में से किस शासक के दरबार में बहुत से विद्वानों को 'नवरत्न' के रूप में अलंकृत किया गया था ?
(A) चन्द्रगुप्त II (B) इनमें से कोई नहीं
(C) श्रीगुप्त (D) समुद्रगुप्त

18. हर्षवर्धन ने '5 इंडीज' को अपने नियंत्रण में लिया। इनमें से कौन-सा '5 इंडीज' था ?
(A) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार और जयपुर
(B) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार और उड़ीसा
(C) पंजाब, कन्नौज, बंगाल, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा
(D) राजस्थान, कन्नौज, बंगाल, बिहार और उड़ीसा

19. ''विजयनगर वास्तुकला द्रविड़ शैली का सबसे विकसित उदाहरण है।'' निम्नलिखित में से कौन-सा मंदिर विजयनगर स्थापत्य शैली का है?
(A) विरूपाक्ष मंदिर (B) तिरुपति मंदिर
(C) सोमनाथ मंदिर (D) मिनाक्षी मंदिर

20. जयचंद के विश्वासघात के कारण पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई। कालांतर में जयचंद कहाँ और कब मारा गया?
(A) तराई, 1192
(B) चंदावर, 1193
(C) कन्नौज, 1194
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (B)	**2.** (C)	**3.** (B)	**4.** (D)	**5.** (B)
6. (B)	**7.** (C)	**8.** (A)	**9.** (C)	**10.** (D)
11. (D)	**12.** (A)	**13.** (D)	**14.** (A)	**15.** (C)
16. (D)	**17.** (A)	**18.** (B)	**19.** (A)	**20.** (B)

❑❑

अध्याय 1

संख्या पद्धति

1. संख्याएँ (Numbers)

I. अंक (Digits)–0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, तथा 9 को गणित में अंकों की परिभाषा दी गई है। इन अंकों के द्वारा विभिन्न संख्याओं का निर्माण किया जाता है। जैसे–10, 123, 456, 789 इत्यादि।

II. संख्यांक प्रणाली (Number System)–संख्यांक प्रणाली में मुख्यतः दो प्रकार की प्रणाली निहित होती है–(i) दाशमिक अंकन प्रणाली, (ii) रोमन अंकन प्रणाली।

दाशमिक अंकन प्रणाली (Decimal Number System)–0 से 9 अर्थात् दस अंकों के होने के कारण इसे दाशमिक अंकन प्रणाली कहा जाता है। इस प्रणाली में संख्याओं को दो प्रकार से लिखा और पढ़ा जाता है–(a) भारतीय संख्या प्रणाली, (b) अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली।

(a) भारतीय संख्या प्रणाली के अन्तर्गत संख्याओं को उनके स्थानीय मानों के अनुरूप पढ़ा और लिखा जाता है। इन संख्याओं को नीचे दी गई तालिका के अनुसार पढ़ा जाता है:

दस करोड़	करोड़	दस लाख	लाख	दस हजार	हजार	सैकड़ा	दहाई	इकाई
10^8	10^7	10^6	10^5	10^4	10^3	10^2	10^1	$10^0=1$

उदाहरणार्थ: संख्या 51, 45, 42, 786 को इकयावन करोड़, पैंतालीस लाख, बयालीस हजार सात सौ छियासी पढ़ा जाता है।

1 दहाई = 10 इकाइयाँ
1 सैकड़ा = 10 दहाइयाँ
= 100 इकाइयाँ
1 हजार = 10 सैकड़ा
= 100 दहाइयाँ
1 लाख = 100 हजार
= 1000 सैकड़ा
1 करोड़ = 100 लाख
= 10,000 हजार

(b) अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली के अन्तर्गत सभी संख्याओं को निम्नलिखित तालिका के अनुसार पढ़ा और लिखा जाता है:

दस मिलियन	एक मिलियन	सौ हजार	दस हजार	हजार	सैकड़ा	दहाई	इकाई
10^7	10^6	10^5	10^4	10^3	10^2	10^1	$10^0=1$

उदाहरणार्थ : संख्या 14, 542, 786 को अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली में चौदह मिलियन पाँच सौ बयालीस हजार सात सौ छियासी पढ़ा जाता है।

III. सबसे बड़ी संख्याएँ एवं छोटी संख्याएँ–

(i) इकाई–अंक 0 से 9 तक इकाई अंक होते हैं। सबसे छोटी तथा सबसे बड़ी 1–अंक की संख्या क्रमशः 0 तथा 9 है।

(ii) दहाई–10 से 99 तक की संख्याएँ दहाई वाली संख्याएँ होती हैं। संख्या 10, 2–अंकों की सबसे छोटी तथा 99, 2–अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(iii) सैकड़ा–100 से 999 तक की संख्याएँ सैकड़े वाली संख्याएँ होती हैं। 3–अंकों की सबसे छोटी एवं सबसे बड़ी संख्या क्रमशः 100 तथा 999 है।

(iv) हजार–1,000 से 9999 तक की संख्याएँ हजार वाली संख्याएँ होती हैं जहाँ, 1000 सबसे छोटी 4-अंकों की संख्या तथा 9,999, 4-अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(v) दस हजार–10,000 से 99,999 तक की संख्याओं में 10,000 सबसे छोटी 5-अंकों की संख्या तथा 99,999, 5-अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(vi) लाख–1,00,000 से 9,99,999 तक की संख्याएँ लाख वाली संख्याएँ होती हैं। 6 अंकों की सबसे छोटी तथा सबसे बड़ी संख्या क्रमशः 1,00,000 तथा 9,99,999 है।

(vii) दस लाख–10,00,000 से 99,99,999 तक की संख्याएँ दस लाख वाली संख्याएँ हैं। 7-अंकों की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी संख्या क्रमशः 99,99,999 तथा 10,00,000 है।

(viii) 1 करोड़–8 अंकों की सबसे बड़ी संख्या 9,99,99,999 तथा सबसे छोटी संख्या 1,00,00,000 है।

IV. अंकों के मान

(i) स्थानीय मान–दी गई संख्या में किसी अंक का मान उसके स्थानीय मान तथा स्वयं के गुणनफल से प्राप्त मान होता है। जैसे–संख्या 4,89,765 में 6 का स्थानीय मान $6 \times 10 = 60$ होगा, जहाँ 6 को उसके स्थानीय मान अर्थात् दहाई स्थान (10) से गुणा किया गया है। इसी प्रकार उपरोक्त संख्या में 8 का स्थानीय मान 80,000 तथा 4 का स्थानीय मान 4,00,000 होता है।

(ii) वास्तविक मान–किसी संख्या में अंक का वास्तविक मान स्वयं संख्या होती है। जैसे–संख्या 59,438 में 9 का वास्तविक मान 9 ही होता है।

नोट– यदि दो अंकों x तथा y से बनी एक संख्या $10x + y$ है, तो x दहाई का अंक तथा y इकाई का अंक होता है।

V. संख्याओं की तुलना

(i) संख्याओं की तुलना जिनमें अंकों की संख्या बराबर नहीं हो–अधिक अंकों वाली संख्या कम अंकों वाली संख्या से बड़ी होती है अथवा कम अंकों वाली संख्या अधिक अंकों वाली संख्या से छोटी होती है।

(ii) संख्याओं की तुलना जिनमें अंकों की संख्या बराबर हो–आठ अंकों वाली संख्याओं में बायें से दायें क्रमशः करोड़, दस लाख, लाख, दस हजार, हजार, सैकड़ा, दहाई, इकाई के स्थानों पर लिखे अंकों की तुलना के आधार पर छोटी अथवा बड़ी संख्या ज्ञात करते हैं।

उदा. 1. 54,29,683 और 54,29,684 में दस लाख, लाख, दस हजार, हजार, सैकड़ा, दहाई के स्थानों पर लिखे अंक समान हैं तथा इकाई के स्थान पर लिखे अंकों में $3 < 4$ अथवा $4 > 3$ है। अतः

54,29,683 < 54,29,684 अथवा 54,29,684 > 54,29,683

उदा. 2. 5403100, 2560860, 14580872, 1450378 को आरोही क्रम में लिखिये।

हल : दी गई संख्याओं को छोटे से बड़े क्रम में रखने पर इनका आरोही क्रम = 1450378, 2560860, 5403100, 14580872

उदा. 3. 1329543, 2329543, 13295406, 329543 को अवरोही क्रम में लिखिये।

हल : दी गई संख्याओं को बड़े से छोटे क्रम में रखने पर इनका अवरोही क्रम = 13295406, 2329543, 1329543, 329543

2. संख्याओं का वर्गीकरण (Classification of Numbers)

दशमलव संख्या पद्धति (Decimal System) में संख्याओं को 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 आदि अंकों के प्रयोग द्वारा निरूपित किया जाता है। संख्याओं को उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग समूह में वर्गीकृत किया गया है।

I. प्राकृत संख्याएँ (Natural Numbers)– ये संख्याएँ 1 से प्रारम्भ होती हैं और अनन्त तक जाती हैं। इनके समूह को N से दर्शाते हैं।

$$N = \{1, 2, 3, 4, 5...\}$$

II. पूर्ण संख्याएँ (Whole Numbers)–जब प्राकृत संख्याओं में शून्य को शामिल किया जाता है तो पूर्ण संख्याएँ बन जाती हैं।

$$W = \{0, 1, 2, 3, 4...\}$$

III. सम संख्याएँ (Even Numbers)–वे संख्याएँ जो 2 से भाज्य होती हैं, सम संख्याएँ कहलाती हैं।

$$E = \{2, 4, 6, 8, ...\}$$

IV. विषम संख्याएँ (Odd Numbers)–वे संख्याएँ जो 2 से भाज्य नहीं होती हैं, विषम संख्याएँ कहलाती हैं।

$$O = \{1, 3, 5, 7, ...\}$$

V. पूर्णांक संख्याएँ (Integers)–धनात्मक व ऋणात्मक चिह्न वाली संख्याओं को पूर्णांक संख्याएँ कहते हैं।

$$I = \{...– 3, – 2, – 1, 0, 1, 2, 3...\}$$

VI. अभाज्य संख्याएँ (Prime Numbers)–1 से बड़ी उन सभी प्राकृत संख्याओं का समूह जिसमें उस संख्या तथा 1 को छोड़कर अन्य किसी भी संख्या से भाग देने पर वह पूर्णतः विभाजित न हो सके। '2' एक मात्र ऐसी संख्या है जो सम भी है और रूढ़ भी है।

$$P = \{2, 3, 5, 7, 11, ...\}$$

VII. परिमेय संख्याएँ (Rational Numbers)–वे संख्याएँ जिनको p/q के रूप में लिखा जा सकता है जहाँ p और q कोई ऐसी संख्याएँ हैं जो कि अभाज्य हैं तथा $q \neq 0$ है। इनके समूह को परिमेय संख्या (Rational Number) कहा जाता है।

$$R = \left\{.....\frac{2}{5}, \frac{1}{5}, -4, 0, 4, \frac{7}{5}\right\}$$

VIII. अपरिमेय संख्याएँ (Irrational Numbers)–वे संख्याएँ जिनको p/q के रूप में लिखना सम्भव न हो, ऐसी संख्याओं के समूह को अपरिमेय संख्या कहते हैं। यहाँ भी p व q परस्पर अभाज्य संख्याएँ होंगी तथा $q \neq 0$ होगा।

$$L = \{.....\sqrt{2}, \sqrt{3}, \sqrt{7}.....\}$$

IX. सहअभाज्य संख्याएँ (Co-prime Numbers)–ऐसी दो संख्याएँ जिनका उभयनिष्ठ गुणनखंड 1 हो सह–अभाज्य संख्याएँ कहलाती हैं।
उदा. 4 या 5

X. पूर्ववर्ती संख्या (Preceding Numbers)–किसी प्राकृत संख्या से ठीक पहले की प्राकृत संख्या उसकी पूर्ववर्ती होती है।
उदा. : संख्या 65 की पूर्ववर्ती संख्या = 65 – 1 = 64
संख्या 127 की पूर्ववर्ती संख्या = 127 – 1 = 126

XI. अनुवर्ती संख्या (Successive Numbers)–किसी प्राकृत संख्या से ठीक अगली प्राकृत संख्या उसकी अनुवर्ती (परवर्ती) संख्या होती है।
उदा. : संख्या 785 की अनुवर्ती संख्या = 785 + 1 = 786
संख्या 109 की अनुवर्ती संख्या = 109 + 1 = 110

3. पूर्णांक (Integers)

संख्या रेखा पर अंकित शून्य के दोनों ओर की समस्त ऋणात्मक संख्याओं तथा धनात्मक संख्याओं के समुच्चय को पूर्णांक कहते हैं।

उदाहरण : –5, – 4, – 3, –2, –1, 0, 1, 2, 3, 4 तथा 5 सभी पूर्णांक संख्याएँ हैं। संख्या रेखा पर पूर्णांक संख्याओं को निम्नलिखित भाँति दर्शाया जाता है :

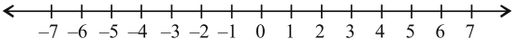

I. पूर्णांक संख्याओं के गुणधर्म

(i) संवृत गुणधर्म (योग, घटाव और गुणा के लिए)–किन्ही दो पूर्ण संख्याओं का योगफल सदैव एक पूर्ण संख्या ही होती है और हम कहते हैं कि पूर्ण संख्याएँ योग के लिए संवृत होती हैं।

यदि a और b दो पूर्णांक हैं, तब $(a + b)$ और $(a * b)$ भी पूर्णांक होंगे।

उदा. :

$4 + 5 = 9$	पूर्णांक
$4 \times 5 = 20$	पूर्णांक
$4 – 5 = – 1$	पूर्णांक
$4 \div 5 = \frac{4}{5}$	पूर्णांक नहीं है

स्पष्ट है कि पूर्णांक का संवृत्त नियम, भाग की संक्रिया का अनुसरण नहीं करता है।

(ii) क्रमविनिमय गुणधर्म (योग और गुणा के लिए)–यदि a और b दो पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) = b + a$ $\qquad$ $a * b = b * a$

उदा. : $4 + 5 = 9 = 5 + 4$
$4 \times 5 = 20 = 5 \times 4$
$4 – 5 = –1 \neq 5 – 4$
$4 \div 5 = \frac{4}{5} \neq 5 \div 4$

स्पष्ट है कि पूर्णांक का क्रमविनियम गुणधर्म व्यवकलन तथा भाग की संक्रिया का अनुसरण नहीं करता है।

(iii) साहचर्य गुणधर्म (योग व गुणा के लिए)–यदि a, b और c तीन पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) + c = a + (b + c)$
$(a * b) * c = a * (b * c)$

उदा. : $4 + (5 + 6) = 15 = (4 + 5) + 6$
$4 * (5 * 6) = 120 = (4 * 5) * 6$

(iv) वितरण या बंटन गुणधर्म (योग पर गुणा के लिए)–यदि a, b और c तीन पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) * c = (a * c) + (b * c)$

उदा. : $(4 + 5) * 6 = (4 * 6) + (5 * 6)$
$9 * 6 = 24 + 30$
$54 = 54$

(v) तत्समक अवयव (योग व गुणा के लिए)–

योज्य तत्समक–पूर्णांकों के लिए '0' (शून्य) को योज्य तत्समक कहा जाता है, क्योंकि किसी भी संख्या में शून्य जोड़ने पर वही संख्या प्राप्त होती है।

उदा.: $4 + 0 = 4$, पूर्णांक
$5 + 0 = 5$, पूर्णांक

गुणानात्मक तत्समक–'1' को गुणनात्मक तत्समक कहा जाता है।

उदा.: $4 \times 1 = 4$, पूर्णांक
$5 \times 1 = 5$, पूर्णांक

II. पूर्णांकों का गुणन

(i) धनात्मक पूर्णांक का ऋणात्मक पूर्णांक से गुणन–

$3 \times 4 = 4 + 4 + 4 = 12$
$3 \times (-4) = (-4) + (-4) + (-4) = -12$

इस विधि का उपयोग करते हुए हमने पाया कि धनात्मक पूर्णांक को ऋणात्मक पूर्णांक से गुणा करने पर ऋणात्मक पूर्णांक प्राप्त होता है, परन्तु क्या होता है जब ऋणात्मक पूर्णांक को धनात्मक पूर्णांक से गुणा करते हैं ?

$(-3) \times 4 = -12 = 3 \times (-4)$ इसी प्रकार हम $(-5) \times 3 = -15 = 3 \times (-5)$ भी प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) दो ऋणात्मक पूर्णांकों का गुणन–दो ऋणात्मक पूर्णांकों का गुणनफल एक धनात्मक पूर्णांक होता है। हम दो ऋणात्मक पूर्णांकों को पूर्ण संख्याओं के रूप में गुणा करते हैं तथा गुणनफल के पूर्व में (+) का चिह्न लगाते हैं।

उदाहरणत: $(-10) \times (-14) = 140, (-5) \times (-6) = 30$

व्यापक रूप में दो धनात्मक पूर्णांकों a तथा b के लिए $(-a) \times (-b) = a \times b$

(iii) शून्य से गुणन–किसी भी पूर्णांक को शून्य से गुणा करने पर शून्य प्राप्त होता है। व्यापक रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी पूर्णांक a के लिए

$$\boxed{a \times 0 = 0 = 0 \times a}$$

4. संख्याओं का विभाजकता नियम (Divisibility Rule of Numbers)

I. 2 से विभाजकता : यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0, 2, 4, 6, 8 में से हो, तो वह संख्या 2 से विभाज्य होती है।

II. 3 से विभाजकता : यदि किसी संख्या के सभी अंकों का योग, 3 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 3 से विभाजित होती है।

III. 4 से विभाजकता : यदि किसी संख्या के अन्तिम दो अंकों का युग्म, 4 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 4 से विभाजित होती है।

IV. 5 से विभाजकता : यदि संख्या का इकाई अंक 0 अथवा 5 है, तो वह संख्या 5 से पूर्णतया विभाजित होती है।

V. 6 से विभाजकता : यदि संख्या 2 तथा 3 से पूर्णतया विभाज्य है, तो वह संख्या 6 से भी पूर्णतया विभाजित होती है।

VI. 7 से विभाजकता : संख्या का इकाई अंक लेकर उसका दोगुना करें। प्राप्त संख्या को मूल संख्या के शेष अंकों में से घटायें। यदि प्राप्त नयी संख्या शून्य (0) अथवा 7 से विभाजित होने वाली संख्या है, तो मूल संख्या भी 7 से विभाजित होगी।

VII. 8 से विभाजकता : संख्या के अन्तिम तीन अंकों का युग्म, यदि 8 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 8 से विभाजित होगी।

VIII. 9 से विभाजकता : यदि संख्या के सभी अंकों को योग, 9 से विभाजित है, तो वह संख्या भी 9 से विभाजित होगी।

IX. 11 से विभाजकता : यदि संख्या में सम स्थानों पर अंकों के योग तथा विषम स्थानों पर अंकों के योग का अन्तर, 11 से विभाज्य है, तो संख्या भी 11 से विभाज्य होगी।

5. संख्याओं में भाग संक्रिया (Division Operations in Numbers)

- भाज्य = भाजक × भागफल + शेषफल, जहाँ $0 \le$ शेषफल $<$ भाजक
- शेषफल = भाज्य – भाजक × भागफल
- भाजक = (भाज्य – शेषफल)/भागफल
- भागफल = (भाज्य – शेषफल)/भाजक

भाजक) भाज्य (भागफल
शेषफल

उदा. : 808 को किसी संख्या से भाग देने पर भागफल 15 तथा शेषफल 13 प्राप्त होता है। भाजक ज्ञात कीजिए।

हल : $\text{भाजक} = \dfrac{\text{भाज्य} - \text{शेषफल}}{\text{भागफल}} = \dfrac{808 - 13}{15} = \dfrac{795}{15} = 53$

6. इकाई का अंक ज्ञात करना (To Find Unit's Digit)

संख्याओं के गुणनफल में तथा संख्या के घातांकीय रूप में इकाई का अंक ज्ञात करने की निम्नलिखित विधि हैं–

I. संख्याओं के गुणनफल में–संख्याओं के गुणनफल में इकाई का अंक ज्ञात करने के लिए सभी संख्याओं के इकाई अंकों का गुणनफल ज्ञात करते हैं। प्राप्त गुणनफल का इकाई अंक, दी गई संख्याओं के गुणनफल में प्राप्त इकाई के अंक के बराबर होता है।

उदा. : $786 \times 78 \times 687$ के गुणनफल में इकाई का अंक ज्ञात करो।

(A) 4 (B) 5 (C) 6 (D) 2

हल (C) : यहाँ $786 \times 78 \times 687$ में सभी संख्याओं के इकाई अंकों का गुणनफल करते हैं।

$= 6 \times 8 \times 7$ में इकाई का अंक
$= 336$ में इकाई का अंक $= 6$

अत: दिए गए गुणनफल में इकाई का अंक 6 होगा।

II. घातांकीय संख्याओं में–

(i) विषम संख्याओं के लिए–

5 को छोड़कर जब इकाई का अंक एक विषम संख्या हो तब,

$(\times\times\times\ 1)^n = (\times\times\times\ 1)$

$(\times\times\times\ 3)^{4n} = (\times\times\times\ 1)$

$(\times\times\times\ 7)^{4n} = (\times\times\times\ 1)$

$(\times\times\times\ 9)^n = (\times\times\times\ 1)$, यदि n एक सम संख्या है।

$= (\times\times\times\ 9)$, यदि n एक विषम संख्या है।

उदा. : $(27)^{43}$ में इकाई का अंक ज्ञात कीजिए।

(A) 3 (B) 4 (C) 5 (D) 6

हल (A) : $(27)^{43}$ में इकाई का अंक

$= (7)^{43}$ में इकाई का अंक

$= (7)^{4\times 10+3}$ में इकाई का अंक

$= (7)^3$ में इकाई का अंक

$= 3$

(ii) सम संख्याओं के लिए–

$(\times\times\times\ 2)^{4n} = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 4)^{2n} = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 6)^n = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 8)^{4n} = (\times\times\times\ 6)$

उदा. : $(44)^{69}$ में इकाई अंक ज्ञात कीजिए।

(A) 5 (B) 4 (C) 6 (D) 2

हल (B) : $(44)^{69}$ में इकाई का अंक

$= (4)^{69}$ में इकाई का अंक

$= (4)^{2\times 34+1}$ में इकाई का अंक

$= (6 \times 4)$ में इकाई का अंक $= 4$

नोट : संख्या में यदि इकाई का अंक 0, 1, 5 तथा 6 होने पर उनकी घातांकीय संख्या में भी अंक क्रमशः 0, 1, 5 तथा 6 ही होगा।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. 6 m 61, 11 से विभाज्य है। m का मान क्या है ?
(A) 4 (B) 5
(C) 0 (D) 3

2. दो क्रमागत अभाज्य संख्याओं का गुणनफल 7387 है। इन दोनों संख्याओं में कितना अंतर है?
(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 6

3. 654321 × 123456 गुणन के अंतिम तीन अंक क्या हैं?
(A) 344 (B) 376
(C) 324 (D) 352

4. तीन अंकों की सभी संख्याओं का योग क्या है जो 15 से विभाज्य है ?
(A) 28750 (B) 41200
(C) 32850 (D) 36825

5. संख्या 720 के गुणनखंडों 1 और 720 को छोड़कर कुल गुणनखंडों की संख्या कितनी है ?
(A) 29 (B) 28
(C) 32 (D) 27

6. तीन क्रमागत विषम संख्याओं का गुणनफल 693 है। तीनों संख्याओं में सबसे छोटी संख्या कौन-सी है?
(A) 11 (B) 7
(C) 5 (D) 9

7. यदि y, x के अनुक्रमानुपाती है, और जहाँ $x = 42$ होने पर $y = 61$ हो, तो $x = 54$ होने पर y का मान ज्ञात करें (पूर्णांक मान का संज्ञान लें)।
(A) 86 (B) 78
(C) 82 (D) 72

8. जब एक संख्या M को 7 से भाग किया जाता है, तो शेषफल 6 होता है। यदि M के वर्ग को 7 से भाग दिया जाये तो शेषफल क्या होगा ?
(A) 3 (B) 1
(C) 4 (D) 2

9. भाजक, भागफल का 24 गुना है तथा शेषफल का 8 गुना है। यदि भागफल 18 है। तब भाज्य है।
(A) 7830 (B) 7630
(C) 7840 (D) 7450

10. $2^{18} - 1$ विभाज्य है :
(A) 17 (B) 7
(C) 13 (D) 11

11. 9 से विभाज्य 19,596 की दो निकटतम संख्याएँ कौन–सी हैं?
(A) 19,509; 19, 611
(B) 19,564; 19, 620
(C) 19,611; 19, 575
(D) 19,593; 19, 602

12. यदि ग्यारह अंकों की कोई संख्या $5y5888406x6$ संख्या 72 से विभाज्य है, तो x के न्यूनतम मान के लिए, $(9x - 2y)$ का मान क्या होगा?
(A) 3 (B) 7
(C) 4 (D) 5

13. अंडे के एक टोकरे में, हर 25 अंडों में से एक सड़ा अंडा है। यदि 8 में से 5 सड़े अंडे अनुपयोगी होते हैं और टोकरी में कुल 10 व्यर्थ अंडे होते हैं, तो टोकरे में अंडों की संख्या की गणना करें।
(A) 380 (B) 400
(C) 420 (D) 440

14. $(4)^{11} \times (5)^5 \times (3)^2 \times (13)^2$ मे अभाज्य गुणनखंड की कुल संख्या की गणना करें।
(A) 30 (B) 31
(C) 33 (D) 32

15. यदि 100 और 1000 के बीच स्थित किसी पूर्णांक के अंकों का योग उस संख्या से घटा दिया जाए, तो परिणाम हमेशा होता है–
(A) 6 से विभाज्य
(B) 2 से विभाज्य
(C) 9 से विभाज्य
(D) 5 से विभाज्य

16. निम्नलिखित में से $\{(341)^{491} \times (625)^{317} \times (6374)^{1793}\}$ के गुणनफल में इकाई अंक कौन-सा है?
(A) 0 (B) 3
(C) 8 (D) 7

17. निम्नलिखित में से कौन-सा 11 के वर्ग को विषम संख्याओं के योग के रूप में व्यक्त नहीं करता है ?
(A) 1 + 3 + 5 + 7 + 13 + 17 + 23 + 25 + 27
(B) 1 + 3 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15 + 17 + 19 + 21
(C) 1 + 5 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15 + 17 + 21 + 23
(D) 3 + 7 + 9 + 11 + 13 + 15 + 17 + 19 + 27

उत्तरमाला

1. (C)	**2.** (D)	**3.** (B)	**4.** (C)	**5.** (B)
6. (B)	**7.** (B)	**8.** (B)	**9.** (A)	**10.** (B)
11. (D)	**12.** (A)	**13.** (B)	**14.** (B)	**15.** (C)
16. (A)	**17.** (C)			

❑❑

अध्याय

1 अपठित गद्यांश

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 5 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए–

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई चीज की खोज करता है, किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें– न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही, लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. 'संस्कृत' का अर्थ है–
- (A) आविष्कार करने वाला
- (B) भाषा का नाम
- (C) सभ्य
- (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति वह है, जो–
- (A) नये आविष्कारों का प्रयोग करता है
- (B) संस्कृत भाषा जानता है
- (C) तथ्यों को याद करता है
- (D) नये आविष्कार करे

3. सभ्य व्यक्ति वह है, जो–
- (A) अच्छे कपड़ा पहनता हो
- (B) शिक्षित हो
- (C) नये आविष्कार करता हो
- (D) जो आविष्कारों का ज्ञाता हो

4. 'विद्यार्थी' शब्द का सन्धि–विच्छेद है–
- (A) विद्या + आर्थी (B) विद्या + र्थी
- (C) विद्या + अर्थी (D) वि + द्यार्थी

5. "न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की" वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिये–
- (A) न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षणे बल की खोज की
- (B) न्यूटन के द्वारा गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की गयी
- (C) गुरुत्वाकर्षण बल न्यूटन ने खोजा
- (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

निर्देश (प्रश्न संख्या 6 से 10 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए–

जीवन में बहुत अंधकार है और अंधकार की ही भाँति अशुभ और अनीति है। कुछ लोग इस अंधकार को स्वीकार कर लेते हैं और तब उनके भीतर जो प्रकाश तक पहुँचने और पाने की आकांक्षा थी, वह क्रमशः क्षीण होती जाती है। मैं अधंकार की इस स्वीकृति को मनुष्य का सबसे बड़ा पाप कहता हूँ। यह मनुष्य का स्वयं अपने प्रति किया गया अपराध है। उसके दूसरों के प्रति किए गए अपराधों का जन्म इस मूल पाप से ही होता है। यह स्मरण रहे कि जो व्यक्ति अपने ही प्रति इस पाप को नहीं करता है, वह किसी के भी प्रति कोई पाप नहीं कर सकता है, किन्तु कुछ लोग अंधकार के स्वीकार से बचने के लिए उसके अस्वीकार में लग जाते हैं। उनका जीवन अंधकार के निषेध का ही सतत् उपक्रम बन जाता है।

6. गद्यांश में 'अंधकार' शब्द किस ओर संकेत करता है?
- (A) बुराइयों और कठिनाइयों की ओर
- (B) अपराधों की ओर
- (C) गरीबी की ओर
- (D) पाप की ओर

7. लेखक ने किसे सबसे बड़ा पाप कहा है–
- (A) मनुष्य का अपने प्रति पाप न करना
- (B) अंधकार को स्वीकार न करना
- (C) अंधकार को स्वीकार कर लेना
- (D) प्रकाश पाने की क्षीण आकांक्षा

8. जब व्यक्ति स्वयं के प्रति किये गये, अन्याय, शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठाता, तो–
- (A) वह केवल अपने प्रति अन्याय करता है
- (B) इससे शान्ति का माहौल बना रहता है
- (C) वह दण्ड का अधिकारी बन जाता है
- (D) इससे दूसरों के प्रति अन्याय, शोषण को बढ़ावा मिलता है

9. 'अंधकार का निषेध' किस ओर संकेत करता है?
- (A) समाज में फैले अंधकार को प्रकाश में बदल देना
- (B) समाज को अंधकार से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहना
- (C) यह मानना कि समाज में अन्याय, शोषण, बुराइयाँ नहीं हैं
- (D) अन्याय, शोषण, बुराइयों को सदा के लिए समाप्त करना

10. इस गद्यांश का मुख्य उद्देश्य है–
- (A) अन्याय और बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेरित करना
- (B) तरह–तरह के लोगों की विशेषतायें बताना
- (C) पाप और पुण्य की व्याख्या करना
- (D) अंधकार और प्रकाश की व्याख्या करना

निर्देश (प्रश्न संख्या 11 से 15 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर इस गद्यांश के आधार पर दीजिए–

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है, उन सबके प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्धवीर, दानवीर, दयावीर इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्धवीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा या मृत्यु की परवाह नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं, पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा का योग चाहिए।

11. सबसे प्राचीन वीरता कौन-सी है ?
- (A) वाक्वीरता (B) दानवीरता
- (C) युद्धवीरता (D) दयावीरता

12. युद्धवीरता के लिए किस प्रकार की प्रवृत्ति अपेक्षित है ?
(A) चतुराई और भीरुता
(B) चंचलता और अस्थिरता
(C) धृष्टता और साहस
(D) साहस, प्रयत्न और कष्ट सहने का धीरज

13. उत्कण्ठापूर्ण आनन्द किसके अन्तर्गत लिया जाता है ?
(A) उत्साह के अन्तर्गत
(B) वीरता के अन्तर्गत
(C) युद्ध के अन्तर्गत
(D) दान के अन्तर्गत

14. साहित्य मीमांसकों ने वीरता के कौन–कौन से भेद किए हैं ?
(A) युद्धवीर, दानवीर और दयावीर
(B) कर्मवीर और धर्मवीर
(C) अध्यवसायी और ईमानदार
(D) शूरवीर और परिश्रमी

15. उत्साह के भेद किस आधार पर किए गए हैं?
(A) उत्साह के आधार पर
(B) दुर्बलता के आधार पर
(C) पीड़ा या आघात के आधार पर
(D) कष्ट या हानि के भेद के आधार पर

निर्देश (प्रश्न संख्या 16 से 20 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

जलवायु परिवर्तन को समर्थनीय विकास का सर्वाधिक गम्भीर खतरा माना जाता है। इसका पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक गतिविधि, प्राकृतिक संसाधनों और भौतिक अवसंरचना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जलवायु स्वाभाविक रूप से परिवर्तित होती रहती है। जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अन्तर को ज्ञापित करने वाले सरकारी पैनल (आई.पी.सी.सी.) के अनुसार जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को पहले ही प्रेक्षित किया जा चुका है और वैज्ञानिक निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सतर्कता और शीघ्रतापूर्वक कार्रवाई किया जाना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन के प्रति भेद्यता सिर्फ भूगोल से नहीं जुड़ी है अथवा सिर्फ प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि जलवायु परिवर्तन के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयाम भी हैं, जो इस बात को प्रभावित करते हैं कि किस प्रकार से जलवायु परिवर्तन विभिन्न समूहों को प्रभावित करते हैं। निर्धन व्यक्तियों के पास प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूखा, बाढ़, महाचक्रवात आदि के कारण सम्पत्ति को होने वाली क्षति की पूर्ति करने के लिए शायद ही बीमा होता है। निर्धन समुदाय तो गरीबी और जलवायु बदलाव की विद्यमान चुनौतियों से पहले ही जूझ रहा है और जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक के लिए उससे जूझने और यहाँ तक कि अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जाएगा। यह महत्वपूर्ण है कि प्रकृति के बदलते आयामों के साथ सामंजस्य बैठाने में इन समुदायों की सहायता की जानी चाहिए। अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज अनिश्चित भविष्य के साथ सामंजस्य बिठाने में अपने को बेहतर ढंग से सक्षम बनाता है। जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन के तहत समुचित सामंजस्य और परिवर्तन करने के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने (सकारात्मक प्रभावों का फायदा उठाने) के लिए सही उपाय किए जाते हैं। इन उपायों में प्रौद्योगिकीय विकल्प यथा : बढ़ी हुई समुद्री सुरक्षा अथवा टिलुओं पर बाढ़-रक्षित घर से लेकर व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहारगत परिवर्तन जैसे सूखे के समय में पानी का कम प्रयोग शामिल है। अन्य रणनीतियों में चरम घटनाओं के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली, बेहतर जल प्रबन्धन, उन्नत जोखिम प्रबन्धन, विभिन्न बीमा विकल्प और जैव-विविधता संरक्षण सम्मिलित हैं। वैश्विक तापन वृद्धि के कारण जिस गति से जलवायु में परिवर्तन हो रहा है यह अत्यावश्यक हो जाता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रति विकासशील देशों की भेद्यता को कम किया जाए और उनकी अनुकूलन क्षमता को बढ़ाया जाए तथा राष्ट्रीय अनुकूलन नीतियाँ कार्यान्वित की जाएँ। जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन समुदाय से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर सामंजस्य और परिवर्तनों की माँग करता है। वर्तमान और भविष्य की जलवायु के साथ सामंजस्य बिठाने हेतु समुदायों को अपने सर्वाधिक पारम्परिक ज्ञान का उपयोग करने और अपनी आजीविका के विविधीकरण के साथ-साथ समुचित प्रौद्योगिकियों को अपनाने सहित अपनी नम्यता बनानी चाहिए। सरकारी और स्थानीय हस्तक्षेपों के साथ तालमेल बिठाते हुए सामंजस्य बिठाने वाली स्थानीय रणनीतियों और ज्ञान का प्रयोग किया जाना चाहिए। अनुकूलन सम्बन्धी हस्तक्षेप राष्ट्रीय परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। जलवायु सम्बन्धी बदलावों और चरम मौसमी घटनाओं के साथ सामंजस्य बिठाने के सम्बन्ध में स्थानीय समुदायों के पास वृहत ज्ञान और अनुभव है। स्थानीय समुदायों का हमेशा से उद्देश्य अपने जलवायु परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाना रहा है। ऐसा करने के लिए उन्होंने विगत के मौसमी पैटर्नों के अपने अनुभव के आधार पर अपने संसाधनों और संचित ज्ञान के अनुरूप तैयारियाँ की हैं। इसमें वे समय भी शामिल रहे हैं जब उन्हें बाढ़, सूखा और तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं से प्रतिक्रिया करना और उनसे उबरना पड़ा है। सामंजस्य बिठाने की स्थानीय रणनीतियाँ अनुकूलन के नियोजन में महत्वपूर्ण तत्व रही हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से समुदायों को बार-बार चरम जलवायु स्थितियों तथा नई जलवायु स्थितियों और चरम स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। पारम्परिक ज्ञान से उन समुदायों को जो वैश्विक तापन की वजह से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को महसूस कर रहे हैं, जलवायु परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाने तथा कुशल, समुचित और समयसिद्ध उपाय ढूँढ़ने में सहायता मिलेगी।

16. जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए विकासशील देशों को अत्यावश्यक रूप से निम्नलिखित में से क्या करने की जरूरत है ?
(A) अपने स्तर पर राष्ट्रीय अनुकूलन नीति का कार्यान्वयन
(B) अल्पावधि योजनाएँ अपनाना
(C) प्रौद्योगिकीय समाधन अपनाना
(D) जलवायु परिवर्तन कर लगाना

17. नीचे जलवायु परिवर्तन के प्रति निर्धन व्यक्तियों की भेद्यता के कारक दिए गए हैं। सही उत्तर वाले कूट का चयन करें।
1. प्राकृतिक संसाधनों पर उनकी निर्भरता
2. भौगोलिक कारण
3. वित्तीय संसाधनों की कमी
4. पारम्परिक ज्ञान का अभाव

कूट :
(A) 2, 3 और 4 (B) 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3 (D) 1, 2 और 3

18. अनुकूलन एक प्रक्रिया के रूप में समाजों को निम्नलिखित में से किसके साथ सामंजस्य बिठाने में समर्थ बनाता है ?
1. अनिश्चित भविष्य
2. सामंजस्य और परिवर्तन
3. जलवायु परिवर्तन का नकारात्मक प्रभाव
4. जलवायु परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव
निम्नलिखित कूट में से सर्वाधिक उपयुक्त का चयन करें :
(A) 1 और 3 (B) 2, 3 और 4
(C) केवल 3 (D) 1, 2, 3 और 4

19. इस गद्यांश का संकेन्द्रिक बिन्दु है–
(A) क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रयासों के बीच समन्वय
(B) जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन
(C) जलवायु परिवर्तन के सामाजिक आयाम
(D) पारम्परिक ज्ञान को समुचित प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना

20. पारम्परिक ज्ञान का उपयोग निम्नलिखित में से किसके माध्यम से किया जाना चाहिए ?
(A) राष्ट्रीय परिस्थितियों में सुधार द्वारा
(B) सरकार और स्थानीय हस्तक्षेपों के बीच तालमेल से
(C) आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा
(D) इसके प्रचार-प्रसार द्वारा

निर्देश (प्रश्न संख्या 21 से 25 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजनीति में साहित्यिक अरुचि के सम्बन्ध में ऐसा प्रतीत होता है कि वह साहित्यिक प्रस्तुति के विषय के रूप में काफी हद तक राजनीति के अस्पष्ट व्यवहार पर अधिक ध्यान केन्द्रित नहीं करता है, लेकिन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि इसे साहित्य में प्रायः कैसे चित्रित किया जाता है ? अर्थात् ऐसी प्रस्तुति की राजनीति क्या है ? राजनीतिक उपन्यास अधिकांशतः केवल राजनीति के बारे में एक उपन्यास नहीं होता है, अपितु उसकी

अपनी राजनीति होती है। इसलिए वह हमें केवल यह नहीं बताता है कि चीजें कैसी हैं ? अपितु इनसे सम्बन्धित विचारों को स्पष्ट रूप से निश्चित सोच प्रदान करता है कि चीजें कैसी होनी चाहिए ? और यह बताता है कि किसी को सही-सही ऐसा सोचना और करना चाहिए कि चीजें वांछित दिशा में अग्रसर हों, संक्षेप में वह पाठकों को कारण या विचारधारा विशेष में बदलना या सूचीबद्ध करना चाहता है। यह प्रायः साहित्य नहीं होता है (यह केवल अत्यधिक परिचित पदबन्ध है) लेकिन एक प्रचार होता है। इससे साहित्यिक भावना का अतिक्रमण ही होता है, जिससे हम विश्व को भली-भाँति समझते हैं और हमारी सहानुभूतियों का प्रभाव-क्षेत्र व्यापक होता है एवं हमारी सोच और सहानुभूति को कट्टर प्रतिबद्धता से संकीर्ण न करे जैसा कि जॉन कीट्स ने कहा है-''हमें ऐसे काव्य से घृणा होती है, जो हम पर लाद दिया जाता है।'' दूसरा कारण कि क्यों राजनीति उच्च प्रकार की साहित्यिक प्रस्तुति के प्रति अनुकूल आचरण नहीं करती है, यह है कि राजनीति अपने स्वभाव से ही विचार और विचारधारा से निर्मित होती है। यदि राजनीतिक स्थिति अपने को उपयुक्त साहित्यिक सम्मान नहीं दे पाती है तो इस सम्बन्ध में राजनीतिक विचार और भी गम्भीर समस्या पैदा करते हैं। साहित्य के सम्बन्ध में यह तर्क दिया जाता है कि यह बौद्धिक अमूर्त विचारों की बजाय मानव अनुभवों के बारे में होता है। यह मानव जाति की 'महसूस की गई वास्तविकता' पर विचार करता है और नीरस तथा निर्जीव विचारों की बजाय ओजपूर्ण और स्वादपूर्ण (रस) से सम्बन्धित होता है। अमेरिका की उपन्यासकार मेरी मकर्थी ने अपनी पुस्तक 'आइडिया और नॉवल' में इस विषय पर की गई व्यापक चर्चा में कहा है कि 'उपन्यास में व्यक्त विचारों के बारे में आज भी यह महसूस किया जाता है कि वे अनाकर्षक होते हैं।'' हालाँकि ऐसा 'पहले' अर्थात् 18वीं और 19वीं सदी में नहीं था। एक ओर विचार और दूसरी ओर उपन्यास के बीच असंगति के स्पष्ट स्वरूप का उनका निरूपण सम्भवतः इस मामले में विभाजित सोच का संकेत है और एक ऐसी दुविधा है जो कई लेखकों और पाठकों के बीच है: ''विचार सशक्त होते हैं, लेकिन मैं प्रायः सोचती हूँ कि उपन्यास में उसकी आवश्यकता होती है। इसके बावजूद उपन्यासकारों के लिए यह महसूस करना काफी सामान्य है''.....विचारों विरुद्ध शस्त्र उठाते समय विचारों के प्रति आकर्षण अनुभव करना वह भी उपहास के हथियारों के साथ।

21. इस गद्यांश के अनुसार एक राजनीतिक उपन्यास प्रायः निम्नलिखित में से क्या बन जाता है ?
(A) राजनीति के लिए साहित्यिक अरुचि
(B) राजनीति की साहित्यिक प्रस्तुति
(C) अपनी ही राजनीति वाला उपन्यास
(D) राजनीति की अस्पष्ट परिपाटी का चित्रण

22. अपने स्वभाव से राजनीति का ढाँचा होता है–
(A) प्रचलित राजनीतिक स्थिति
(B) विचार और विचारधाराएँ
(C) राजनीतिक प्रचार
(D) मानव स्वभाव की समझ

23. एक राजनीतिक उपन्यास से निम्नलिखित में से किसका पता चलता है ?
(A) चीजों की वास्तविकता
(B) लेखक का बोध
(C) पाठकों की विचारधारा विशेष
(D) साहित्य की भावना

24. साहित्य में निम्नलिखित में से किस पर चर्चा की जाती है ?
(A) राजनीति में मानव अनुभव
(B) बौद्धिक अमूर्त विचार
(C) शुष्क और रिक्त विचार
(D) मानव जीवन की महसूस की गई वास्तविकता

25. उपन्यासकार मेरी मकर्थी की टिप्पणियों से निम्नलिखित में से किसका पता चलता है ?
(A) उपन्यास में आज के अनदेखे महसूस किए गए विचार
(B) राजनीतिक विचारों और उपन्यासों पर अन्तश्चेता का द्विविभाजन
(C) विचारों और उपन्यास के बीच असंगति
(D) अनन्त विचार और उपन्यास

निर्देश (प्रश्न संख्या 26 से 30 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

अन्तिम महायुद्ध जिसने आधुनिक विश्व की आधारशिला को लगभग विकसित कर दिया, भारतीय साहित्य पर स्वल्प प्रभाव ही डाल सका है। यह हिंसा के विरुद्ध आम रूप से बढ़ावा देने की प्रवृत्ति तथा पश्चिमी दुनिया की 'मानवीय विज्ञप्तियों के बारे में मोहभंग की स्थिति को प्रखरता से अभिव्यक्ति देने में ही सिमटा रहा। इसकी मुखर अभिव्यक्ति टैगोर की अन्तिम कविताओं एवं उनके अन्तिम महाग्रन्थ 'क्राइसिस इन सिविलाइजेशन' के माध्यम से हुई।

इस समय भारत का बुद्धिजीवी वर्ग एक नैतिक अंतर्द्वन्द्व की दशा से गुजर रहा था। एक ओर जहाँ वह संकट की घड़ी में इंग्लैण्ड के अदम्य साहस के प्रति सहानुभूति व्यक्त किए बगैर नहीं रह सका, जिसमें रूसी लोग निष्ठुर नाजी सैन्य शक्ति से लोहा ले रहे थे, चीन, जापान की सेनाओं को बूटों तले रौंदा जा रहा था: वहीं दूसरी ओर उनका अपना ही देश अपनी धरती की सैन्य शक्ति के नियंत्रण में था। भारतीय सेना, सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में दूसरी ओर से उनके देश की मुक्ति का प्रयास कर रही थी।

निष्ठाओं के ऐसे द्वन्द्व में किसी भी प्रकार की सृजनात्मक प्रवृत्ति के प्रस्फुटन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह सही अनुमानित किया जा सकता है कि वर्ष 1947 में भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति जो 'मित्र राष्ट्रों' के आविर्भाव क्रम में महत्त्वपूर्ण है तथा जो पड़ोसी देशों, जैसे दक्षिण–पूर्व एशिया उपनिवेशवाद के अन्त के रूप में फलित हुआ, सृजनात्मक ऊर्जा के विस्फोट को गतिमान कर सकता था।

निःसन्देह ऐसा हुआ, किन्तु शीघ्र ही देश के विभाजन की यन्त्रणा, नरसंहार तथा लाखों लोगों का अपने ही देश से विस्थापित होने और महात्मा गाँधी शहादत की घटना के साथ कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण तथा बाद में बांग्लादेश में उसके अत्याचारों ने मर्मस्पर्शी लेखन को प्रेरित किया था।

इस कारण बांग्ला, हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी तथा उर्दू महत्त्वपूर्ण लेखन सामने आये, किन्तु केवल मर्मस्पर्शी अथवा भावपूर्ण लेखन अपने आपमें साहित्य को महानता प्रदान नहीं करता। इन आपदाओं के उपरान्त भी जो उत्साह एवं आत्मबल का कोश बना रहा, वो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा आर्थिक विकास में आत्मसात् हुआ।

महान साहित्य का अभ्युदय सर्वदा ही खलबलियों की शृंखलाओं से प्रस्फुटित हुआ है। आज का भारतीय साहित्य पहले के सापेक्ष अपने परिमाण, विस्तार एवं विविधता में अधिक समृद्ध है।

26. पिछले महायुद्ध का भारतीय साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा था ?
(A) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।
(B) इसने हिंसा के विरुद्ध जनाक्रोश बढ़ा दिया था।
(C) इसने साहित्य की नींव को हिला दिया था।
(D) इसने पश्चिमी दुनिया को प्रबल समर्थन दिया।

27. अपने अन्तिम महाग्रन्थ (टेस्टामेन्ट) में टैगोर ने किसकी अभिव्यक्ति की ?
(A) सुभाष चन्द्र बोस को समर्थन दिया था।
(B) पश्चिमी दुनिया की 'मानवीय–विज्ञप्तियों' की पोल खोली।
(C) इंग्लैण्ड के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की।
(D) देशों की मुक्ति को प्रोत्साहन प्रदान किया।

28. महायुद्ध के समय भारतीय बुद्धिजीवियों की क्या सोच थी ?
(A) वे रूसी लोगों के कष्टों के प्रति उदासीन थे
(B) वे जापानी सैन्य शक्तिवाद के पक्ष में थे
(C) उनकी अनिश्चित निष्ठावानता ने सृज–नात्मकता को बढ़ावा दिया
(D) उन्होंने इंग्लैण्ड के दृढ़–साहस के प्रति सहानुभूति जताई

29. भारतीय साहित्य में सृजनात्मक ऊर्जा को सन्निहित करने वाले कारक की पहचान कीजिए।
(A) अपनी ही धरती का सैन्य आधिपत्य
(B) औपनिवेशिक आधिपत्य का प्रतिरोध
(C) विभाजन के फलस्वरूप अनुभूत तीव्र यन्त्रणा
(D) मित्र राष्ट्रों की विजय

30. प्रस्तुत गद्यांश का कथ्य (सन्देश) क्या है ?
(A) आपदाएँ अवश्यम्भावी होती हैं
(B) संक्षौभ–शृंखलाओं से महान् साहित्य का अभ्युदय होता है
(C) भारतीय साहित्य का कोई विशिष्ट परिदृश्य नहीं है
(D) युद्ध और स्वतन्त्रता से साहित्य का कोई लेना–देना नहीं है

निर्देश (प्रश्न संख्या 31 से 35 तक)

निम्नलिखित अनुच्छेद को सावधानीपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हाल ही में मैंने वही काम किया जहाँ आपको एक बड़े कार्ड पर हस्ताक्षर करने होते हैं और यह काम अपने आप में एक संत्रास है, विशेषकर जबकि उस बड़े कार्ड का धारक मेरे ऊपर झुका हुआ था। मैं अचानक ऐसी स्थिति में था, जैसे अग्रदीप में एक खरगोश या विनोदपूर्ण संवाद भेजने अथवा इन–जोक अथवा आरेखन के बीच उधेड़बुन की स्थिति। इसके बजाय उपलब्ध अनेक विकल्पों से अभिभूत होकर मैंने यही लिखने का निर्णय किया: ''गुड लक, ठीक है, जोएल।'' भयभीत होकर अभी मैंने महसूस किया कि मैं तो लिखना ही भूल गया हूँ। मेरा तो इतना–सा वजूद है ''कम्प्यूटर पर अक्षरों को दबाओ।'' खरीददारी हेतु मेरी सूची तो मेरे फोन के नोट प्रकार्य में छिपी है। यदि मुझे कुछ याद करने की आवश्यकता पड़ती है, तो मैं अपने आप को ई–मेल भेज देता हूँ। जब मैं कुछ सोच–विचार में संघर्ष कर रहा होता हूँ, तो मैं अपनी कलम चबाने लगता हूँ। कागज कुछ इस तरह से है जिसे मैं लैपटॉप के नीचे एकत्रित करता हूँ, ताकि टंकण हेतु इसकी ऊँचाई मेरे लिए अधिक सुविधाजनक हो जाए।

लेखन सामग्री विक्रेताओं द्वारा 1,000 किशोर बालकों के सर्वेक्षण में, बिक ने पाया कि उनके 10 में से एक किशोर के पास अपनी कलम नहीं है, उनमें से हर तीसरे ने तो कभी पत्र नहीं लिखा है एवं 13 से 19 वर्ष के आयु के आधे किशोरों को कभी भी बाध्य नहीं किया गया कि वे बैठें और धन्यवाद का पत्र लिखें। 80% से अधिक किशोरों ने तो कभी भी कोई प्रेम पत्र नहीं लिखा, 56% के घर पर पत्र का कागज नहीं है। साथ ही एक–चौथाई को तो जन्मदिन के कार्ड लिखने की अनोखी जहमत की कोई जानकारी ही नहीं हुई। अधिक–से–अधिक यदि किसी किशोर को कलम के प्रयोग की आवश्यकता हुई तो वह सिर्फ परीक्षा प्रश्न–पत्र का उत्तर लिखने में।

बिक, क्या तुमने कभी मोबाइल फोन के बारे में सुना है? क्या तुमने ई–मेल, फेसबुक और स्नैप चैटिंग के बारे में सुना है? यही भविष्य है। कलम का जमाना गया। कागज का जमाना गया। हस्तलेखन अब स्मृतिशेष रह गयी है। ''हमारे पास हस्तलेखन सर्वाधिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है तथा इसे रेखाचित्र (स्केचिंग), चित्रकारी अथवा फोटोग्राफी जैसी कला के अन्य रूपों की तरह समान महत्त्व दिया जाना चाहिए।''

31. लेखक के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन काम–काज की सर्वाधिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है ?
(A) पढ़ना
(B) हस्तलेखन
(C) फोटोग्राफी
(D) रेखाचित्र बनाना (स्केचिंग)

32. एक बड़े कार्ड पर हस्ताक्षर करने की बात आई, तो लेखक को ''अग्रदीप में किसी खरगोश'' जैसा अनुभव हुआ। इस पद का क्या अर्थ है?
(A) वेदना की स्थिति
(B) उलझन की स्थिति
(C) प्रसन्नता की स्थिति
(D) दुश्चिन्ता की स्थिति

33. बिक के सर्वेक्षण के अनुसार, कितने किशोरों के पास कोई कलम नहीं है?
(A) 100 (B) 800
(C) 560 (D) 500

34. लेखक की सम्पूर्ण सत्ता.....के इर्द–गिर्द घूमती है।
1. कम्प्यूटर
2. मोबाइल फोन
3. टाइपराइटर
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए
(A) 2 और 3 (B) केवल 2
(C) 1 और 2 (D) 1, 2 और 3

35. लेखक की मुख्य चिन्ता क्या है?
(A) कि किशोर हस्तलेखन की कला भूल गए हैं
(B) कि किशोर संचार हेतु सामाजिक नेटवर्क का उपयोग करते हैं
(C) कि किशोर मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं
(D) कि किशोर कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं

निर्देश (प्रश्न संख्या 36 से 40 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

यदि भारत को अपनी आन्तरिक शक्तियाँ विकसित करनी हैं, तो उसको तीन गतिशील आयामों–जनता, सर्वांगीण अर्थव्यवस्था और सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए प्रौद्योगिकीय अवश्यकरणीयताओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। ये प्रौद्योगिकीय अवश्यकरणीयताएँ एक 'चौथे आयाम' समय, पर भी ध्यान रखती हैं, जो व्यवसाय, व्यापार एवं प्रौद्योगिकी की आधुनिकी गतिशीलता से निःसृत हैं और जो निरन्तर बदलते लक्ष्यों की ओर अग्रसर करती हैं। हमारा यह मानना है कि इस चौथे आयाम के सन्दर्भ में जनता की आकांक्षाओं में निरन्तर हो रहे परिवर्तन, वैश्विक सन्दर्भ में अर्थव्यवस्था तथा सामरिक महत्व वाले हित के परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिकीय शक्तियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, मानव इतिहास के मूल में प्रौद्योगिकी विकास समाया रहता है और इसका उपयोग बढ़ती प्रतिस्पर्धा वाले बाजार में प्रौद्योगिकी शक्तियाँ अधिक उत्पादक रोजगार पैदा करने तथा मानव–कौशलों को अद्यतन बनाए रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रौद्योगिकियों के व्यापक अनुप्रयोग के बिना हम आने वाले समय में अपने लोगों का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकते। देश की सामरिक शक्तियों के साथ प्रत्यक्ष संलग्नताएँ विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद से अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही हैं। कई मूल अनुक्षेत्रों में स्वयं भारत की शक्ति उसको भू–राजनीतिक सन्दर्भ में यथोचित शक्ति की स्थिति में रखती है। एक विकसित देश बनने के आकांक्षी किसी भी देश के लिए विभिन्न सामरिक प्रौद्योगिकियों में शक्ति–सम्पन्न होना और स्वयं की सृजनात्मक शक्तियों के माध्यम से उन्हें निरन्तर अद्यतन करते रहने की सामर्थ्य भी आवश्यक है। जन– अभिमुखी कार्यों के लिए भी चाहे विशाल स्तर पर उत्पादनशील रोजगार का सृजन हो या जनता की पोषण एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुरक्षा सुनिश्चित करनी हो या फिर जीवन-यापन की बेहतर स्थितियाँ हों–दोनों दृष्टियों से प्रौद्योगिकी एक महत्त्वपूर्ण आगत है। प्रौद्योगिकी पर अपेक्षाकृत अधिक बल की अनुपस्थिति से निम्न स्तरीय उत्पादकता और मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। निम्न स्तरीय उत्पादकता या निम्न स्तरीय, मूल्य– संवर्धन से जुड़े क्रियाकलाप अन्ततः अत्यन्त गरीब लोगों को सबसे अधिक हानि पहुँचाते हैं। हमारी जनता को एक नए जीवन तक पहुँचाना और वह जीवन प्रदान करना, जिसके लिए वह हकदार हैं, इस बारे में प्रौद्योगिकीय आवश्यकरणीयता महत्वपूर्ण है।

व्यापार और जीडीपी में वृद्धि की दृष्टि से एक बड़ी आर्थिक शक्ति होने का आकांक्षी भारत विदेश में डिजाइन को नई और निर्मित 'टर्नकी' परियोजनाओं की शक्ति या केवल संयन्त्र मशीनरी, उपकरण और तकनीकी ज्ञान के बल पर सफल नहीं हो सकता। अल्पकालिक यथार्थों पर ध्यान देते हुए हमारे उद्योगों में मध्यम एवं दीर्घकालिक रणनीतियों द्वारा औद्योगिकीय शक्तियों को विकसित करना विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए महत्वपूर्ण है।

36. विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए आवश्यक है–
(A) लघुकालिक परियोजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करना
(B) संकेन्द्रिक प्रौद्योगिकीय शक्ति का विकास
(C) प्रमुख आर्थिक शक्ति बनने की आकांक्षा
(D) विदेश में तैयार की गई परियोजना पर निर्भरता

37. प्रौद्योगिकी की अनुपस्थिति में किसका मार्ग प्रशस्त होगा?
1. कम प्रदूषण
2. मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी
3. निम्न स्तरीय मूल्य–संवर्धन
4. अत्यन्त गरीब लोगों को सबसे अधिक नुकसान

(A) 1, 2 और 4 (B) 1, 3 और 4
(C) 1, 2 और 3 (D) 2, 3 और 4

38. उपरोक्त गद्यांश के अनुसार निम्नलिखित में से कौन चौथे आयाम को इंगित करता है?
1. जन–आकांक्षाएँ
2. आधुनिक गतिशीलता
3. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था
4. सामरिक हित

कूट :
(A) 1, 3 और 4 (B) 1, 2 और 4
(C) 1, 2 और 3 (D) 2, 3 और 4

39. अधिक उत्पादक रोजगार पैदा करने के लिए आवश्यक है–
(A) भू–राजनीतिक सोच–विचार
(B) विशाल उद्योग
(C) प्रौद्योगिकी का व्यापक अनुप्रयोग
(D) प्रतिस्पर्धात्मक बाजार का दायरा सीमित करना

40. प्रौद्योगिकीय आगतों के लाभ का परिणाम होगा–
(A) पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों को गौण मानना
(B) हमारे लोगों को गरिमामयी जीवन तक पहुँचाना
(C) अनियन्त्रित प्रौद्योगिकीय संवृद्धि
(D) संयन्त्र मशीनरी का आयात

निर्देश (प्रश्न संख्या 41 से 45 तक)

अग्रलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिये गये बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें।

'कल्पना' और 'व्यक्तित्व' की, पाश्चात्य समीक्षा–क्षेत्र में, इतनी अधिक मुनादी हुई कि काव्य के और सब पक्षों से दृष्टि हटकर इन्हीं दो पर जा जमी। 'कल्पना' काव्य का बोध पक्ष है। कल्पना में आई रूप–व्यापार–योजना का कवि या श्रोता को अंतः साक्षात्कार का बोध होता है। पर इस बोध पक्ष के अतिरिक्त काव्य का भाव पक्ष भी है। कल्पना को रूप योजना के लिए प्रेरित करने वाले और कल्पना में आयी हुई वस्तुओं में श्रोता या पाठक को रमाने वाली रति, करुणा, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य इत्यादि भाव या मनोविकार होते हैं। इसी से भारतीय दृष्टि ने भावपक्ष को प्रधानता दी और रस के सिद्धांत की प्रतिष्ठा की। पर पश्चिम में 'कल्पना'–'कल्पना' की पुकार के सामने धीरे–धीरे समीक्षकों का ध्यान भाव पक्ष से हट गया और बोधपक्ष पर ही भिड़ गया। काव्य की रमणीयता उस हल्के आनंद के रूप में ही मानी जाने लगी जिस आनंद के लिए हम नई–नई सुंदर भड़कीली और विलक्षण वस्तुओं को देखने जाते हैं। इस प्रकार कवि तमाशा दिखाने वाले के रूप में और श्रोता या पाठक तटस्थ तमाशबीन के रूप में समझे जाने लगे। केवल देखने का आनंद कुछ विलक्षण को देखने का कौतूहल मात्र होता है।

41. कवि या श्रोता को अंतःसाक्षात्कार बोध किसका होता है ?
(A) व्यक्तित्व का
(B) विलक्षणता का
(C) कल्पना में आई रूप–व्यापार–योजना का
(D) मनोविकारों का

42. भारतीय दृष्टि में काव्य ने किस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की ?
(A) रस सिद्धांत की
(B) कौतूहल सिद्धांत की
(C) कल्पना सिद्धांत की
(D) श्रोता या पाठक की तटस्थता की

43. केवल देखने का आनंद क्या है ?
(A) रसानुभूति
(B) श्रोता या पाठक को काव्य का मर्म समझाना
(C) भावपक्ष को प्रबल बनाना
(D) कुछ विलक्षण को दिखाने का कौतूहल मात्र

44. 'कल्पना' काव्य का कौन-सा पक्ष है ?
(A) भावपक्ष (B) बोध पक्ष
(C) रमणीय पक्ष (D) अलंकार पक्ष

45. काव्य में पाश्चात्य समीक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चा किस तत्व को लेकर हुई है ?
(A) भावपक्ष की
(B) रस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की
(C) काव्य में गम्भीर रमणीयता की
(D) कल्पना और व्यक्तित्व की

निर्देश (प्रश्न संख्या 46 से 50 तक)

निम्नलिखित अवतरण के आधार पर उत्तर दीजिए। प्रश्नों के उत्तर केवल दिए गए गद्यांश पर ही आधारित होने चाहिए।

देश की उन्नति के लिए गांधीजी ने ग्रामोन्नति को सर्वोपरि माना है। भारतीय ग्राम, भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के प्रतीक हैं। ग्राम ही भारतवर्ष की आत्मा हैं और सम्पूर्ण भारत उनका शरीर। शरीर की उन्नति आत्मा की स्वस्थ स्थिति पर निर्भर है। आत्मा के स्वस्थ होने पर ही संपूर्ण शरीर में नवचेतना व नवशक्ति का संचार होता है। आज भी भारत की साठ प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में ही बसती है। गांधीजी कहा करते थे– 'भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं।' अतः भारत की उन्नति नगरों की उन्नति पर नहीं अपितु गाँवों की उन्नति पर निर्भर करती है। अतः ग्रामोन्नति का कार्य देशोन्नति का कार्य है। महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने 'भारतमाता ग्रामवासिनी' नामक कविता में ठीक ही कहा है कि भारतवर्ष का वास्तविक स्वरूप गाँवों में है।

46. 'ग्रामोन्नति' शब्द बना है–
(A) ग्रामों + न्नति (B) ग्रामो + नति
(C) ग्रामोन्न + ति (D) ग्राम + उन्नति

47. भारत की उन्नति निर्भर करती है–
(A) महानगरों की उन्नति पर
(B) शहरों की उन्नति पर
(C) कस्बों की उन्नति पर
(D) ग्रामों की उन्नति पर

48. किसानों को क्या बताया गया है ?
(A) उन्नति का प्रतीक
(B) आलसियों का अवतार
(C) सेवा और परिश्रम का अवतार
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

49. शरीर में चेतना व शक्ति का संचार कब होता है ?
(A) जब शरीर स्वस्थ हो
(B) जब लोग स्वस्थ हों
(C) जब आत्मा स्वस्थ हो
(D) जब कोई भी स्वस्थ न हो

50. भारतीय ग्राम किसके प्रतीक हैं ?
(A) यूरोप की प्राचीन सभ्यता के
(B) भारत की प्राचीन संस्कृति के
(C) भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (A)	**2.** (D)	**3.** (D)	**4.** (C)	**5.** (B)
6. (A)	**7.** (C)	**8.** (D)	**9.** (C)	**10.** (A)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (A)	**14.** (A)	**15.** (D)
16. (A)	**17.** (D)	**18.** (D)	**19.** (B)	**20.** (B)
21. (C)	**22.** (B)	**23.** (B)	**24.** (D)	**25.** (C)
26. (B)	**27.** (B)	**28.** (D)	**29.** (C)	**30.** (B)
31. (A)	**32.** (B)	**33.** (A)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (B)	**37.** (D)	**38.** (A)	**39.** (C)	**40.** (B)
41. (C)	**42.** (A)	**43.** (D)	**44.** (B)	**45.** (D)
46. (D)	**47.** (D)	**48.** (C)	**49.** (C)	**50.** (C)

❐❐

Chapter 1

Comprehension (Unseen Passage)

Important Questions

Direction (Q. No. 1 to 5)

In the following questions, you have a brief passage with 5 questions following the passage. Read the passage carefully and choose the best answer to each question out of the four alternatives.

Earth is the only planet so far known with the suitable environment for sustaining life. Land, water, air, plants and animals are the major components of the global environment. Population, food and energy are the three fundamental problems facing mankind. Unemployment, inflation, crowding, dwindling resources and pollution are all due to the factors like increasing population, high standard of living, deforestation, etc.

Man has been tampering with the Ecosphere for a very long time and is forced to recognize that environmental resources are scarce. Environmental problems are really social problems. They begin with people as cause and end with people as victims. Unplanned use of resources has resulted in the depletion of fossils, fuels, pollution of air and water, deforestation, which has resulted in ecological imbalance and draining away of national wealth through heavy expenditure on oil and power generation.

1. Increasing population causes :
- (A) unemployment and crowding
- (B) inflation and pollution
- (C) dwindling resources
- (D) unemployment,inflation, crow-ding, dwindling resources and pollution

2. National wealth is drained away by spending heavily on :
- (A) power generation
- (B) fuels
- (C) water and power generation
- (D) oil and power generation

3. The three major components of the global environment are :
- (A) food, energy and population
- (B) high standard of living, crowding and inflation
- (C) land, water and air
- (D) plants, animals and mankind

4. Depletion of fossils and fuels, pollution of air and water and deforestation will never occur in case of :
- (A) improper use of resources
- (B) planned use of resources
- (C) unplanned use of resources
- (D) over use of resources

5. We face the three fundamental problems that are :
- (A) inflation, deforestation and unemp-loyment
- (B) population, deforestation and energy
- (C) population, inflation and food
- (D) population, food and energy

Direction (Q. No. 6 to 10)

Read the passage carefully and choose the best answer to each question out of the four alternatives.

John had never thought much about the origin of wealth or inequalities in life. It was his firm belief that if this world was not good, the next would be good, and this faith sustained him. He was not like some others whom he knew, who would sell their souls to the devil. He always thought of God before doing anything. He lived the life of an honest man. He had not married but did not desire another man's wife. He believed that women weakened men as was described in the story of Samson and Delilah.

6. 'To sell one's soul to the devil' means :
- (A) suppressing one's conscience
- (B) giving up goodness in exchange for evil
- (C) giving up one's honesty for the sake of monetary benefits
- (D) to sell oneself to earn livelihood

7. John thought that women weakened men because :
- (A) he thought that women were evil
- (B) he believed that a woman was a fancy devil
- (C) he thought that a woman would spoil his life
- (D) he was convinced that what the story of Samson and Delilah illustrates is correct

8. It was John's belief that :
- (A) one can be happy only by remaining a bachelor
- (B) the world is a happy place
- (C) there is no other world
- (D) one must lead an honest life

9. By not desiring another man's wife John showed that :
- (A) he wanted to get married
- (B) he was a man of principles
- (C) he felt sorry for other men
- (D) he had no desire for another's wealth

10. From the above passage we understand that John was :
- (A) not highly educated
- (B) a man of simple faith
- (C) a deeply pessimistic man
- (D) a scholar of scriptures

Direction (Q. No. 11 to 15)

Read the following passage carefully and answer that follow :

It is not luck but labour that makes men. Luck, says an American writer, is ever waiting for something to turn up "labour with keen eyes and strong will always turns up" something. Luck lies in bed and wishes the postman would bring him news of a legacy; labour turns out at six and with busy pen and ringing hammer lays the foundation of competence. Luck whines, labour watches. Luck relies on chance, labour on character. Luck slips downwards to self-indulgence; labour strides upwards and aspires to independence. The conviction, therefore, is extending that diligence is the mother of good luck; in other words, that a man's success in life will be proportionate to his efforts, to his industry, to his attention to small things.

11. What is the meaning of the word 'legacy'?
- (A) A sad or disappointing news.
- (B) Bankruptcy or misfortune.
- (C) Money or property left to someone in a will.
- (D) None of the above.

12. What would be the synonym of the word 'stride' ?
- (A) Retreat (B) March
- (C) Delay (D) Wait

13. What is the meaning of the proverb 'dilligence is the mother of good luck' ?
- (A) If a person is born in a rich and aristocratic family, he is considered lucky.
- (B) If one works carefully and constantly, one's chances of being successful will be much greater.
- (C) Bravery brings good luck.
- (D) None of the above.

14. According to the passage what is the most important thing for success ?
(A) Hard work
(B) Only luck
(C) Noble parentage
(D) All of the above

15. Which word in the passage means 'to complain or express disappointment or unhappiness repeatedly' ?
(A) Whine (B) Keen
(C) Aspire (D) Hammer

Direction (Q. No. 16 to 20)

Read the following passage carefully. Answer the questions given below the passage. Choose the appropriate alternatives out of (A), (B), (C) and (D).

One of the most famous monuments in the world, the Statue of Liberty was presented to the United States of America by the people of France. The great statue which was designed by the sculptor Auguste Bartholdi, took ten years to complete. The actual figure was made of copper supported by a metal framework which had been specially constructed by Eiffel. Before it could be transported to the United States, a site had to be found for it and a pedestal had to be built. The site chosen was an island at the entrance of the New York harbour. By 1884, a statue which was 151 feet tall had been erected in Paris. The following year, it was taken to pieces and sent to America. By the end of October 1886, the statue had been put together again and it was officially presented to the American people by Bartholdi. Ever since then, the great monument had been a symbol of liberty for the millions of people who have passed through New York harbour to make their homes in America.

16. The Statue of Liberty was presented to America by :
(A) Eiffel
(B) the people of England
(C) the people of France
(D) the people who made their homes in America

17. The great statue which took ten years to complete was designed by :
(A) Bartholdi
(B) Lutian
(C) Eiffel
(D) A group of sculptors

18. The great statue was taken to pieces because :
(A) it needed a pedestal
(B) it was not complete
(C) it was 151 feet tall
(D) it was a monument

19. What was the site for the great monument to be installed ?
(A) At Atlanta
(B) At the bank of Amazon
(C) Washington D.C.
(D) New York harbour

20. Since October, 1886 it had been a symbol of :
(A) sculptor (B) liberty
(C) fraternity (D) honesty

Direction (Q. No. 21 to 24)

Read the following passage and answer the questions given below:

Beni Ram found Gannu sitting close to her mother's body. Her leathery face was stained with tears. Beni Ram walked up to her slowly, not wanting to scare her. Then he stopped and held out a hand.

'Aa, aa ..... come' he whispered.

The baby elephant looked at him and then turned away. So Beni Ram quietly went home. The next morning, he returned. Now Gannu's head was resting close to her mother's still body. She was looking at her mother out of the corner of her eyes. Beni Ram had brought bananas from his orchard. He held one out to Gannu, but she ignored him.

Beni Ram had no luck with Gannu for two whole days. Each day when he came to collect firewood from the forest, he offered her food. But she wouldn't look at him. Then, on the third day, she raised her head and sniffed his hand with her trunk. Beni Ram felt her soft breath blowing on his palm.

Slowly she got up and followed him. She turned one last time to look at her mother, as if to say good bye.

21. Gannu was a
(A) baby cow (B) baby dog
(C) baby elephant (D) baby sheep

22. Which fruit had Beni Ram brought from his orchard?
(A) bananas (B) guavas
(C) apples (D) pomegranates

23. Beni Ram came to the forest each day to collect.
(A) Fruits (B) Vegetables
(C) Firewood (D) leaves

24. Gannu's leathery face was stained with tears because:
(A) She was ill
(B) Her mother had died
(C) her brother was lost
(D) None of the above

Direction (Q. No. 25 to 28)

Read the following passage and answer the question given below :

Hadoti is comprised of four districts of Rajasthan - namely Baran, Bundi, Jhalawar and Kota. It is said that Hadi Rani, a legendary character was married to Chundawat chieftain of Salumber.

The chieftain loved her so much that he felt reluctant to go the battlefield. The Hadi Rani persuaded him to comply with his duty towards his motherland. But for her\love he would not agree. Somehow he agreed. Before leaving the house, he sent a man to his beloved to given him a memento. Out of sheer disgust the Rani Hadi cut her head off the neck and sent it to him.

25. Hadoti is situated in the state :
(A) Rajasthan (B) Madhya Pradesh
(C) maharashtra (D) Utter Pradesh

26. Hadoti is not comprised with district :
(A) Kota (B) Jhalawar
(C) Bundi (D) Jodhpur

27. Who was a legendary character ?
(A) Chundawat chieftain
(B) Hadi Rani
(C) King
(D) Hodoti

28. Hadi Rani sent a memento, it was :
(A) Her head (B) Her ring
(C) Her hand (D) Her thumb

Direction (Q. No.29 to 32)

Read the following passage and answer the questions that follow.

Vehicles do not move about the roads for mysterious reasons of their own. They move only because people want them to move in connection with the activities which the people are engaged in. Traffic is therefore a 'function of activities' and because, in towns, activities mainly take place in buildings, in towns, activities mainly take place in buildings, traffic in towns is a 'function of buildings'. The implications of this line of reasoning are inescapable.

29. Line 1 of the passage means that the vehicles move on the roads
(A) for reasons difficult to explain
(B) to serve specific purposes of people
(C) in a haphazard fashion
(D) in ways beyond our control.

30. The author says that traffic is a 'function of activities'. He means that :
(A) human activities are taking place.
(B) human activities are dependent on traffic.
(C) traffic is not dependent on human activities.
(D) traffic is connected with human activities.

31. The author suggests by his argument that–
(A) to regulate traffic, more policemen have to be employed
(B) to regulate activities, traffic has to be controlled
(C) to regulate traffic, buildings have to taken into consideration
(D) to understand the traffic problem, we must examine the social context in which it is found

32. By this line of reasoning, the author means :
(A) idea contained is this line
(B) idea contained in anyone line of his argument
(C) the manner of arguing
(D) this row of printed characters

Direction (Q. No. 33 to 36)

Read the following passage and answer the questions that follow :

Books are by far, the most lasting product of human effort. Temples crumble into ruins. Pictures and statues decay, but books survive. Time does not destroy the great thoughts which are as fresh today as when they first passed through the author's mind ages ago. The only effect of time has been to throw out the bad products, for nothing in literature can survive long unless it is really good and of lasting value. Books introduce us to the best society, they bring us into the presence of the greatest minds that have ever lived, we hear what they said and did; we see them as if they were really alive, we sympathise with them, enjoy with them and grieve with them :

33. According to the passage, books like forever because :
(A) They have productive value.
(B) Time does not destroy great thoughts.
(C) They are in printed form.
(D) They have the power to influence people.

34. According to the passage, temples, pictures and statues belong to the same category because :
(A) All of them are beautiful
(B) All of them are substantial.
(C) All of them are likely to decay.
(D) All of them are fashioned by men.

35. Books introduce us into the best society as :
(A) They give us a glimpse of the greatest minds.
(B) They take us to the world of imagination.
(C) They instill in us the qualities of the greatest minds.
(D) They introduce us to elite class of the society.

36. Radha, 'I won't buy a new car'. (Choose the correct word to fill in the blank).
Radha said that she .... buy a new car.
(A) Won't (B) will
(C) wouldn't (D) would

Direction (Q. No. 37 to 41)

Read the following passage and answer the questions that follow :

The moon's role in causing tides is much more high and important than that of the Sun. The reason is that the moon enjoys more proximity to the earth than the sun. As such its force is greater than that of the sun in attracting the surface water. Tides are of immense importance. In trade, navigation and fishing, tides are very useful. During the high tide, the water depth near the coast goes up and helps big ships to reach the ports. Kandla port in Gujarat and Diamond Harbour in West Bengal owe their very existence to the tides only. The significance of both London and Kolkata also depends on the tides. Tides also keep the harbours clear of refuse and mud brought down by rivers and thus they do not allow the harbours to be silted. Commonly, the tidal rivers are navigable. For the purpose of generating electricity, tidal waves are harnessed. Tides do not allow the sea water to be frozen by keeping the sea water in motion. Tides are also made use by the fishermen for sailing into the sea and returning to the harbour. In countries like Canada, U. K., France and Japan, tidal power stations are set up.

37. Why does the moon play a greater role than the sun in causing tides ?
(A) The moon is closer to the earth as compared to the sun.
(B) The moon has greater gravitational pull.
(C) The moon shines in night.
(D) None of the above.

38. How are tides useful for the economy of the country ?
(A) Tides bring treasure of sea with them.
(B) During high tides, big ships can reach the ports thus opening new vistas for business.
(C) Tides destroy enemies of the country.
(D) None of the above.

39. How are tides useful in cold countries ?
(A) They bring fish for eating
(B) They bring water for drinking
(C) They don't allow sea water to be frozen
(D) They keep the port silted.

40. How can tides solve the power problem of the world ?
(A) Electricity is being produced through tidal waves.
(B) Tidal waves keep the steamers in motion.
(C) Tidal waves melt the ice and save power.
(D) None of the above.

41. Which word in the passage means 'to bring under control' ?
(A) Proximity (B) Silted
(C) Immense (D) Harness

Direction (Q. No. 42 to 44)

Read the following passage and answer the following questions by choosing the most appropriate options :

Marie Curie grew up in Warsaw, Poland where she was born on November 7, 1867. Her parents were both teachers. The child of two teachers, Marie, was taught to read and write early in life. She was a very bright child and did well in school. She had a sharp memory and worked hard in her studies. As Marie grew older, her family came upon tough times. Poland was under the control of Russia at that time. People were not even allowed to read or write anything in the Polish language. Her father lost his job because he was in favour of Polish rule. Marie lost her elder sister and mother in typhus and tuberculosis respectively. After graduating from high school, Marie wanted to attend a university, but this wasn't something that young women did in Poland during the years covering the period 1800-1900. The university was for men. However, there was a famous university in Paris, France called the Sorbonne that women could attend. Marie did not have the money to go there, but agreed to work to help pay for her sister Bronislawa to go to school in France, if she would help Marie after she graduated. It tonk six years, but after Bronislawa graduated and became a doctor, Marie moved to France and entered the Sorbonne. Marie arrived in France in 1891. Marie lived the life of a pour college student, but she loved every minute of it. She was learning so much. After three years she earned her degree in Physics.

42. Which of the following statements about the passage is not true ?
(A) Marie's elder sister died of tuberculosis and mother of typhus.
(B) Marie's father was a patriotic man.
(C) Marie passed out of the University of Sorbonne.
(D) The Polish universities discriminated against girls.

43. Marie thoroughly enjoyed the university years :

(A) while her sister worked hard to pay the fees.

(B) although she did not want to study medicine.

(C) despite living on meagre funds.

(D) but was denied the university degree.

44. A lot of emphasis was laid on Marie's education because :

(A) Marie was the sole earning member of the family.

(B) Marie was born into a family of teachers.

(C) Education of girls was very important in Poland.

(D) She was the only member of the family who could read.

Direction (Q. No. 45 to 49)

Read the poem given below.

A Minor Bird

I have wished a bird would fly away,

And not sing by my house all day,

Have clapped my hands at him from the door

When it seemed as if I could bear no more.

The fault must partly have been in me.

The bird was not to blame for his key.

And of course there must be something wrong

In wanting to silence any song.

— Robert Frost

On the basis of your understanding of the poem, answer the following questions :

45. Choose the quote that best captures the central idea of the poem.

(A) "A bird doesn't sing because it has an answer. It sings because it has a song."

(B) "Like a bird singing in the rain, let grateful memories survive in times of sorrow."– R.L. Stevenson

(C) "People are not disturbed by things but by the view they take of them"– Epictetus

(D) "People who are Innately funny are Innately disturbed" – Keenen Ivory Wayans

46. The use of the word 'minor' bird in the shows.

(A) the size of the bird was small

(B) insignificance with which man regards nature

(C) the bird was under age

(D) bird's existence in nature is of less significance

47. Which one of the following statements is NOT TRUE for the poem ?

(A) The poem is written in First person and a narrative style

(B) The poem ends with a philosophical idea that acceptance of Nature and its elements is a must

(C) The poem gives a message that insignificant things leave a deep impact on one's soul

(D) The poem is rich in imagery.

48. The rhyme scheme of the poem is :

(A) abab (B) aabb

(C) abca (D) abbb

49. Which of the following emotions are expressed in the first stanza ?

(A) excitement (B) arrogance

(C) irritation (D) elation

Direction (Q. No. 50 to 54)

Read the following information carefully and answer the given questions :

Climate change and its imperatives across the globe have moved beyond the immediate compulsions of rising mercury levels on planet Earth. It is today a debate among nations on geo-politics and the shift in economic balance from the developed countries to the emerging economies. The rhetoric by global leaders thus needs to be taken with a pinch of salt for it is not all about climate change concerns. The changing axis of economic power of the East and emerging countries of Asia will perhaps take a while to sink in. Developing economies like India and just beginning to take baby steps on the global stage and industry entrepreneurship will have to go a long way. Millions of house-holds in India still have to depend on

50. Why does the author want the talks about climate change by the global leaders "to be taken with a pinch of salt" ?

(A) The talks are sometimes directed towards political and economic gains rather than climate change

(B) The global leaders are not responsible for the climate change

(C) The talks about the climate change by the global leaders have little to do with developing countries.

(D) The developed countries are more concerned with exporting their technologies that cut emissions

51. Which word means the opposite of emerging ?

(A) Arrive (B) Develop

(C) Fading (D) Appear

52. What should be the stand of India on matters of climate change ?

(A) The matter of climate change should be ignored.

(B) Measures should be taken to cut down emissions.

(C) India should reject any demand for emission cut by the developed countries.

(D) Measures should be taken to cut down emissions but not at the cost of development.

53. Which word from the passage is similar in meaning to onset ?

(A) Importing (B) Amenities

(C) Beginning (D) Priority

54. Which of the following statements is true ?

(A) The global leaders are the main stakeholders in climate change talks.

(B) The global leaders are the main stakeholders in global change.

(C) The priority for such a nation is to earn more money.

(D) Kerosene and wood are the main fuels used in India.

Answer Key

1. (D)	**2.** (D)	**3.** (C)	**4.** (B)	**5.** (D)
6. (C)	**7.** (D)	**8.** (D)	**9.** (B)	**10.** (B)
11. (C)	**12.** (B)	**13.** (B)	**14.** (A)	**15.** (A)
16. (C)	**17.** (A)	**18.** (C)	**19.** (D)	**20.** (B)
21. (C)	**22.** (A)	**23.** (C)	**24.** (B)	**25.** (A)
26. (D)	**27.** (A)	**28.** (A)	**29.** (B)	**30.** (D)
31. (D)	**32.** (C)	**33.** (B)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (C)	**37.** (A)	**38.** (B)	**39.** (C)	**40.** (A)
41. (D)	**42.** (A)	**43.** (C)	**44.** (B)	**45.** (C)
46. (A)	**47.** (B)	**48.** (B)	**49.** (C)	**50.** (A)
51. (C)	**52.** (D)	**53.** (C)	**54.** (D)	

❑❑

अध्याय

1

अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण

1. परिचय

इस अध्याय के अन्तर्गत अंग्रेजी वर्णमाला (A-Z) पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तथा अभ्यर्थी को अंग्रेजी वर्णमाला के सभी 26 अक्षरों के स्थानिक मान तथा इससे सम्बन्धित तथ्य याद होने चाहिए।

अंग्रेजी वर्णमाला से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

- वर्ण दो प्रकार के होते हैं–
  - **स्वर**—A E I O U (अंग्रेजी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 5 है।)
  - **व्यंजन**—B C D F G H J K L M N P Q R S T V W X Y Z (अंग्रेजी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या 21 है।)

- **अर्द्धांश**

  अर्द्धांश दो प्रकार के होते हैं–
  - **प्रथम अर्द्धांश**—A B C D E F G H I J K L M (प्रथम अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अतः 1 से 13 तक के अक्षर प्रथम अर्द्धांश में होते हैं।)
  - **द्वितीय अर्द्धांश**— N O P Q R S T U V W X Y Z (द्वितीय अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अतः 14 से 26 तक के अक्षर द्वितीय अर्द्धांश में होते हैं।)

- **स्थान**

  अंग्रेजी वर्णमाला में, प्रत्येक अक्षर का अपना स्थान होता है। यह स्थान दो क्रमों पर निर्भर करता है।
  - **सीधा क्रम**—इसमें A का स्थान पहला तथा Z का स्थान अन्तिम होता है।

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

  - **विपरीत क्रम**–इसमें Z का स्थान पहला तथा A का स्थान अन्तिम होता है।

Z	Y	X	W	V	U	T	S	R	Q	P	O	N	M	L	K	J	I	H	G	F	E	D	C	B	A
26	25	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1

शॉर्ट ट्रिक

बाएँ से–

5	10	15	20	25			
E	J	O	T	Y	→	(इजोटी)	
3	6	9	12	15	18	21	24
C	F	I	L	O	R	U	X

(सिफिलोरक्स)

दाएँ से–

B	G	L	Q	V	→	(बगलकव)
25	20	15	10	5		

अंग्रेजी वर्णमाला में EJOTY तथा BGLQV के प्रत्येक अक्षर के मध्य चार अक्षरों का अन्तर होता है।

EJOTY के अनुसार की बाएँ वर्ण से स्थिति ज्ञात कर लेते हैं। यदि दाईं ओर से प्रश्न में कहा गया है, तो BGLQV के अनुसार उस वर्ण को ज्ञात कर लेते हैं;

दाईं ओर से इस प्रकार से वर्ण निकालना थोड़ा कठिन है, तो हम इस प्रकार से दाईं ओर से वर्ण ज्ञात कर सकते हैं।

27 – (दाईं ओर से वर्ण का स्थान) = बाईं ओर से वर्ण का स्थान

उदा. दाईं ओर से 23वाँ अक्षर कौन–सा होगा?

27 – 23 = 4 (बाईं ओर से चौथा अक्षर और दाईं ओर से 23वाँ अक्षर D होगा।)

2. विपरीत वर्ण

अंग्रेजी वर्णमाला में प्रत्येक अक्षर एक–दूसरे का विपरीत होता है; **जैसे**–A का विपरीत अक्षर Z, B का Y, C का X, D का W... आदि। विपरीत अक्षरों का योग हमेशा 27 होता है।

जैसे–E का विपरीत अक्षर ज्ञात करना है और E का वर्णमाला में 5वाँ स्थान है।

विपरीत वर्ण = (27 – 5) = 22 (V)

विपरीत अक्षर याद रखने की ट्रिक

AZ–आज (1 + 26 = 27)
BY – बाय (2 + 25 = 27)
CX–क्रैक्स (3 + 24 = 27)
DW–ड्यू (4 + 23 = 27)
EV–इवनिंग (5 + 22 = 27)
FU–फ्यू (UF-उफ) (6 +21 = 27)
GT–जी. टी. रोड (7 + 20 = 27)
HS–हाई स्कूल (8 + 19 = 27)
IR–इंडियन रेलवे (9 + 18 = 27)
JQ–जयपुर क्वीन (10 + 17 = 27)
KP–कानपुर (11 + 16 = 27)
LO–लाइफ ओके (12 + 15 = 27)
MN–मन (13 + 14 = 27)

3. वर्णमाला के आधार पर अक्षरों की स्थिति ज्ञात करना

- **आपके बाएँ से** का अर्थ है आपके बाएँ से दाएँ की ओर अर्थात् (A से Z की ओर)।

- **आपके दाएँ से** का अर्थ है आपके दाएँ से बाएँ की ओर अर्थात् (Z से A की ओर)।
- **ठीक बाएँ** का अर्थ है कि उस अक्षर के ठीक पहले का अक्षर। **जैसे**—G के ठीक पहले का अक्षर F होगा।
- **ठीक दाएँ** का अर्थ है कि उस अक्षर के ठीक बाद का अक्षर। **जैसे**—P के तुरन्त बाद Q आयेगा।
- **के बाएँ या दाएँ** का अर्थ है मूल अक्षर को छोड़कर उस अक्षर का बायाँ या दायाँ अक्षर। **जैसे**—D के दाएँ 5वाँ अक्षर I होगा या P के बाएँ तीसरा अक्षर M होगा।
- **से बाएँ या दाएँ** का अर्थ है मूल अक्षर को साथ लेकर उस अक्षर का बायाँ या दायाँ अक्षर। **जैसे**—D से दाएँ 5वाँ अक्षर H होगा या P से बाएँ तीसरा अक्षर N होगा।

अक्षरों के स्थान से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति समान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को घटा देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं। जैसे—दाएँ से 12वें अक्षर के दाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 5वाँ अक्षर होगा।
- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति असमान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को जोड़ देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं। जैसे—दाएँ से 9वें अक्षर के बाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 16वाँ अक्षर होगा।

4. प्रश्नों के प्रकार

अंग्रेजी वर्णमाला में इससे सम्बन्धित निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

4.1 अंग्रेजी वर्णमाला में अक्षर का स्थान ज्ञात करना

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में, बाएँ से 21वें अक्षर के बाएँ 10वाँ अक्षर कौन–सा होगा ?

(A) J (B) K (C) L (D) M

हल (B) **:**

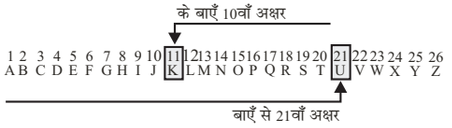

बाएँ से 21वें अक्षर U के बाएँ 10वाँ अक्षर K होगा। अतः विकल्प (B) सही उत्तर होगा।

उदा. 2. अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 7वें अक्षर के दाएँ 15वाँ अक्षर कौन–सा होगा ?

(A) U (B) V (C) W (D) T

हल (B)**:**

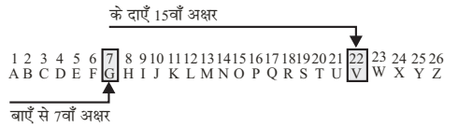

बाएँ से 7वें अक्षर G के दाएँ 15वाँ अक्षर V होगा। अतः विकल्प (B) सही उत्तर है।

उदा. 3. अंग्रेजी वर्णमाला में दाएँ से 11वें अक्षर के बाएँ 9वाँ अक्षर कौन–सा होगा?

(A) G (B) T (C) P (D) Q

हल (A) **:**

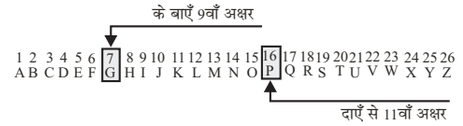

दाएँ से 11वें अक्षर P के बाएँ 9वाँ अक्षर G होगा। अतः विकल्प (A) सही उत्तर है।

उदा. 4. अंग्रेजी वर्णमाला में दाएँ से 17वें अक्षर के दाएँ 8वाँ अक्षर कौन–सा होगा?

(A) I (B) S (C) R (D) T

हल (C) **:**

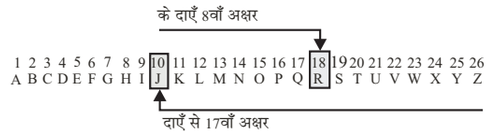

दाएँ से 17वें अक्षर J के दाएँ 8वाँ अक्षर R होगा। अतः विकल्प (C) सही होगा।

4.2 मध्य अक्षरों की संख्या ज्ञात करना

अंग्रेजी वर्णमाला में दो अक्षरों के बीच कितने अक्षर हैं। प्रश्न में पूछा जाता है। इनकी चार स्थितियाँ हैं—

(i)

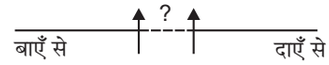

(ii)

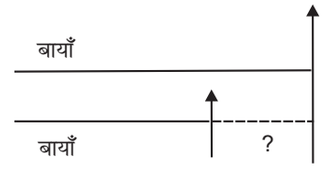

(iii)

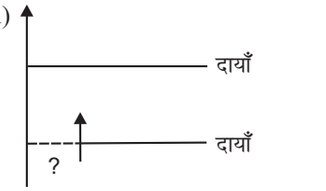

(iv)

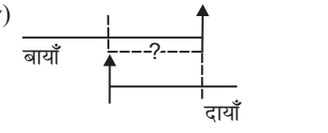

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 9वें अक्षर तथा दाएँ से 7वें अक्षर के मध्य कितने अक्षर हैं?

(A) 8 (B) 9 (C) 10 (D) 11

हल (C) :

स्मार्ट ट्रिक

कुल अक्षर → बाएँ से 9 अक्षर + दाएँ से 7 अक्षर

कुल अक्षर $\rightarrow 9 + 7$

$= 16$

अंग्रेजी वर्णमाला में कुल अक्षरों की संख्या

$= 26$

$26 - 16 \Rightarrow 10$

अतः इनके बीच में 10 अक्षर होंगे।

4.3 मध्य का अक्षर ज्ञात करना

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 8वें तथा 20वें अक्षर के मध्य कौन–सा अक्षर होगा?

(A) M (B) N (C) P (D) R

हल (B) :

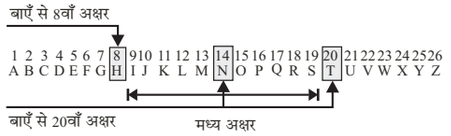

बाएँ से 8वाँ अक्षर H तथा बाएँ से 20वाँ अक्षर T है। इन दोनों के ठीक बीच में अक्षर N होगा।

उदा. 2. अंग्रेजी वर्णमाला में दाएँ से 16वें अक्षर तथा दाएँ से 24वें अक्षर के ठीक बीच का अक्षर कौन–सा होगा?

(A) T (B) U (C) R (D) G

हल (D) : दाएँ से 16वाँ अक्षर K तथा दाएँ से 24वाँ अक्षर C है। इन दोनों के ठीक बीच में अक्षर G होगा।

महत्त्वपूर्ण नोट

- अक्षर का स्थान बाएँ से दाएँ या दाएँ से बाएँ निकालना हो, तो अक्षर के क्रमांक को 27 में से घटा देते हैं।
- मध्य अक्षर = $\frac{\text{बायाँ} + \text{बायाँ}}{2}$ या $\frac{\text{दायाँ} + \text{दायाँ}}{2}$
- दो अक्षरों के मध्य अक्षरों की संख्या–
  - (i) 26 – (बायाँ + दायाँ) = अक्षरों की संख्या
  - (ii) (बायाँ – बायाँ) – 1 = अक्षरों की संख्या
  - (iii) (दायाँ – दायाँ) – 1 = अक्षरों की संख्या
- (i) अंग्रेजी वर्णमाला में आपके बाएँ से mवें अक्षर के बाएँ nवाँ अक्षर = बाएँ से $(m - n)$वाँ अक्षर
  - (ii) अंग्रेजी वर्णमाला में आपके बाएँ से mवें अक्षर के दाएँ nवाँ अक्षर = बाएँ से $(m + n)$ वाँ अक्षर
  - (iii) अंग्रेजी वर्णमाला में आपके दाएँ से mवें अक्षर के दाएँ nवाँ अक्षर = दाएँ से $(m - n)$ वाँ अक्षर
  - (iv) अंग्रेजी वर्णमाला में आपके दाएँ से mवें अक्षर के बाएँ nवाँ अक्षर = दाएँ से $(m + n)$ वाँ अक्षर

4.4 अक्षर युग्म बनाना

- अक्षर–युग्म आगे तथा पीछे दोनों स्थितियों में सम्भव है।
- एक शब्द में एक से अधिक युग्म बनाये जा सकते हैं।
- एक अक्षर से युग्म बना लेने के बाद दोबारा उसी अक्षर से युग्म बना सकते हैं। यदि वह अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार समान दूरी पर होते हैं।

उदा. 'WONDERS' में ऐसे कितने अक्षर–युग्म हैं, जिनके बीच उतने ही अक्षर हैं, जितने कि अंग्रेजी वर्णमाला में होते हैं?

(A) दो (B) तीन

(C) एक (D) तीन से अधिक

हल (D) :

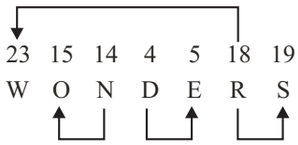

'WONDERS शब्द में NO, DE, RS तथा RW चार ऐसे युग्म हैं, इनके बीच उतने ही अक्षर हैं, जितने अंग्रेजी वर्णमाला में होते हैं।

4.5 अक्षर समस्या

उदा. 1. यदि शब्द 'REPRESENTATIVE' के पहले और आठवें अक्षरों के स्थान परस्पर बदल दें, इसी प्रकार दूसरे और नौवें अक्षर और आगे भी इसी प्रकार अक्षरों को बदल दिया जाये, तो नई व्यवस्था में बाएँ सिरे से 6वें अक्षर के बाएँ चौथा अक्षर कौन–सा होगा?

(A) E (B) A

(C) P (D) T

हल (D) :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

R E P R E S E N T A T I V E

परिवर्तन के बाद–

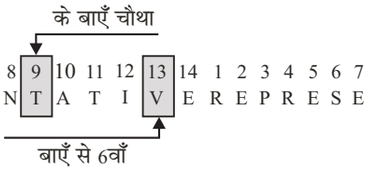

परिवर्तन के बाद शब्द में बाएँ से 6वें अक्षर V के बाएँ चौथा अक्षर T होगा।

उदा. 2. शब्द 'CREDIBLE' के तीसरे, पाँचवें और सातवें अक्षरों से यदि कोई अर्थपूर्ण शब्द बनाना सम्भव हो, तो निम्नलिखित में से कौन–सा उस शब्द का दूसरा अक्षर होगा?

(A) L (B) I

(C) E (D) एक से अधिक

हल (D) :

1	2	3	4	5	6	7	8
C	R	E	D	I	B	L	E

तीसरा अक्षर E, 5वाँ अक्षर I तथा 7वाँ अक्षर L है।

E, I तथा L से बनने वाले अर्थपूर्ण शब्द—LEI (पुष्पहार), LIE (झूठ बोलना) हैं।

4.6 अंग्रेजी शब्दों का व्यवस्थीकरण

- अंग्रेजी के शब्दों को वर्णमाला या शब्दकोश (dictionary) के अनुसार क्रम से व्यवस्थित करना ही शब्दों का व्यवस्थीकरण कहलाता है।

उदा. 1. शब्दकोश के अनुसार कौन–सा शब्द चौथे स्थान पर आयेगा?

(A) Propense (B) Prophet

(C) Prong (D) Propine

हल (D) : Pro[p]ense

Pro[p]het

Pro[n]g

Pro[p]ine

'Pro' सभी शब्दों में समान है। 'Pro' के बाद सभी में अक्षर अलग हैं। इन अक्षरों को अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार क्रम में लगाने पर 'n' अक्षर पहले आयेगा। उसके बाद p आयेगा, लेकिन p तीन शब्दों में समान है। अक्षरों को वर्णमाला के अनुसार लगाने पर,

1	2	3	4
Pro[n]g, >	Pro[pe]nse, >	Pro[ph]et, >	Pro[pi]ne

शब्दकोश के अनुसार चौथे स्थान पर Propine आयेगा।

उदा. 2. नीचे प्रश्न में बड़े अक्षरों में एक शब्द दिया है। इसके पश्चात् चार शब्द, उत्तर के रूप में दिये गये हैं। दिये गये अक्षरों को मिलाकर इसमें से केवल एक शब्द बना सकते हैं। उस शब्द को ज्ञात कीजिए—

CHOCOLATE

(A) TELL (B) HEALTH

(C) LATE (D) COOLER

हल (C) : TELL शब्द में, L का प्रयोग दो बार हुआ है, जबकि दिये गए शब्द में L का प्रयोग केवल एक बार हुआ है। इसी प्रकार 'HEALTH' शब्द में, 'H' अक्षर का प्रयोग दो बार हुआ है, जबकि दिये गये शब्द में H अक्षर का प्रयोग केवल एक बार हुआ है। 'COOLER' शब्द में 'R' अक्षर का प्रयोग हुआ है, जो दिये गये शब्द में नहीं है। केवल 'LATE' शब्द के सभी अक्षर दिये गये शब्द 'CHOCOLATE' में हैं। इसलिए केवल 'LATE' शब्द दिये गये शब्द के अक्षरों से बनाया जा सकता है।

उदा. 3. दिये गये विकल्प के शब्दों में से उस शब्द को चुनिये, जो दिये गये शब्द के अक्षरों के प्रयोग द्वारा नहीं बनाया जा सकता है—

ETHNOGRAPHIC

(A) HEART (B) GEAR

(C) EARTH (D) GARMENT

हल (D) : शब्द 'GARMENT' में M का प्रयोग हुआ है, जो दिये गये शब्द में नहीं है, जबकि बाकी तीनों शब्दों में प्रयोग किये गये अक्षरों से दिया गया शब्द 'ETHNOGRAPHIC' बनाया जा सकता है। अतः 'GARMENT' शब्द दिये गये शब्द के अक्षरों से नहीं बनाया जा सकता है।

4.7 असम्बद्ध अक्षरों से अर्थपूर्ण शब्द बनाना

- इस प्रकार के प्रश्नों में, अक्षरों का एक समूह अव्यवस्थित क्रम में दिया होता है। अभ्यर्थी को इन अक्षरों को एक क्रम में लगाकर अर्थपूर्ण शब्द बनाना होता है।

उदा. 1. नीचे दिये गए शब्दों में अक्षरों का क्रम अव्यवस्थित है। इनमें विषम शब्द छाँटिए—

(A) EIWNTR (B) UMRSME

(C) PIGRSN (D) LCUOD

हल (D) : सभी अक्षरों को व्यवस्थित क्रम में लगाने पर,

(A) WINTER (B) SUMMER

(C) SPRING (D) CLOUD

अक्षरों को व्यवस्थित क्रम में लगाने पर यह स्पष्ट है कि 'CLOUD' इसमें अलग है, क्योंकि 'CLOUD' को छोड़कर बाकी तीनों मौसम के नाम हैं।

उदा. 2. नीचे दिये गये शब्द में अक्षरों का क्रम अव्यवस्थित है। अक्षरों को व्यवस्थित करके वह अक्षर छाँटिए जो शब्द में सबसे अन्त पर है—

gofrte

(A) t (B) r

(C) f (D) e

हल (A) : अक्षरों को व्यवस्थित क्रम में लगाने पर,

अर्थपूर्ण शब्द → forge[t]

अर्थपूर्ण शब्द में सबसे आखिरी अक्षर 't' है।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. दिए गए शब्दों को उस क्रम में व्यवस्थित करें जिसमें वे शब्दाकोश में आते हैं।

(a) Aaersid
(b) Aaersted
(c) Amquarine
(d) Acgledhi
(e) Acgledih

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(A) (a), (b), (c), (d), (e)
(B) (a), (b), (d), (c), (e)
(C) (a), (b), (d), (e), (c)
(D) (a), (b), (c), (e), (d)

निर्देश (प्रश्न संख्या 2 से 5 तक)

वर्णानुक्रम के अनुसार दिए गए शब्दों को करें और उस शब्द को चुनें जो सबसे पहले आएगा।

2. (A) Mahinder (B) Mahindra
(C) Mohinder (D) Mahender

3. (A) Science (B) Serutiny
(C) Seripture (D) Seramble

4. (A) Rigour (B) Remove
(C) Retrospect (D) Revive

5. (A) Loiter (B) Loris
(C) Lotus (D) Sister

6. अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, दिये गए शब्दों का सही क्रम कौन-सा होगा?

(1) Epitaxy (2) Episode (3) Epigene (4) Epitome (5) Epilogue

(A) (1), (2), (3), (4), (5)
(B) (3), (5), (2), (1), (4)
(C) (5), (4), (3), (2), (1)
(D) (3), (2), (5), (4), (1)

7. नीचे दिये अक्षरों को अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार जमायें और बताइये कि तीसरे स्थान पर कौन-सा अक्षर होगा?

B, A, D, M, K, V, U

(A) D (B) U
(C) A (D) B

8. वो शब्द जो 'Indispensable' से नहीं बन सकता।

(A) Spend (B) Disabled
(C) Perishable (D) Panel

9. वो शब्द जो 'Responsibility' से नहीं बन सकता।

(A) Respect (B) Spore
(C) Sponge (D) Resistivity

10. निम्नलिखित को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें–

(1) Foliage (2) Folk
(3) Follow (4) Follicle

(A) (1), (2), (3), (4)
(B) (4), (3), (1), (2)
(C) (1), (2), (4), (3)
(D) (1), (3), (4), (2)

11. अंग्रेजी शब्द कोश के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द चौथे स्थान पर होगा ?

(A) Encradle (B) Encourage
(C) Encroach (D) Encounter

12. नीचे दिए गए प्रश्न में अंग्रेजी के कुछ अक्षर दिए गए हैं, अक्षरों को व्यवस्थित कर एक सार्थक शब्द बनाइए। नए शब्द का अन्तिम अक्षर क्या होगा ?

ROFGET

(A) T (B) R
(C) F (D) E

13. दिए गए शब्द के अक्षरों का प्रयोग कर उस शब्द की विकल्पों में से पहचान करो, जोकि केवल दिए गए शब्द से बनाया जा सकता है?

INTELLIGENCE

(A) INTEGER (B) INTERVAL
(C) LEGEND (D) NEGLECT

निर्देश (प्रश्न संख्या 14 से 18 तक)

अंग्रेजी शब्दकोश शब्दों के रूप में दिये गये हैं। दिये गये शब्दों को शब्दकोश के अनुसार व्यवस्थित कीजिए और उचित विकल्प को चुनिये।

14. PEN

(A) PEN (B) EPN
(C) ENP (D) NEP

15. FAN

(A) AFN (B) ANF
(C) FAN (D) NFA

16. CHAIR

(A) AHCIR (B) ACIHR
(C) AICHR (D) ACHIR

17. WENT

(A) ETNW (B) ENTW
(C) EWTN (D) EWNT

18. STOP

(A) STOP (B) OPST
(C) OPTS (D) SPTO

उत्तरमाला

1. (C)	**2.** (D)	**3.** (A)	**4.** (B)	**5.** (A)
6. (B)	**7.** (A)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (C)
11. (C)	**12.** (A)	**13.** (D)	**14.** (C)	**15.** (A)
16. (D)	**17.** (B)	**18.** (B)		

❑❑